कार्तिकमास

(७) कार्तिक शुक्ल कथा से क. नगुन माहात्म्य
कार्तिक [illegible]

लिखना शेष निम्नांकित है।
शिव रात्री महात्म्य
काशी मे चन्द्र ग्रहण माहात्म्य

कार्तिक पर्व

देवालय, मन्दिर जीर्णोद्धार महात्म्य
काशी में क्षेत्र सन्यास माहात्म्य

काशी वास माहात्म्य
काशी की यात्रा माहात्म्य

[illegible]

कार्तिक मास के धार्मिक यात्रा।

यह कापी टाइप करके आगामी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

काशी माहात्म्य के प्ररूप जाँच करने वाले विद्वानों से निवेदन यह है कि प्रसङ्ग वस एक श्लोक कही प्रसङ्ग मे आया हो तो उस श्लोक

को न निकाले चूँकि पुराणों में गीता, भागवत आदि ग्रन्थों में भी प्रसङ्ग वस एक श्लोक कही बार पाया है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१

+

~~स~~ समर्पण

(१) प्रभो! आप काशी-नृप हैं, आपको कुछ न कुछ अवश्य भेंट करनी चाहिए।

(२) आप पूर्णकाम हेतु भेंट करने योग्य क्या है?

(३) मेरी जाति लेखक की है।

(४) आपके प्रिय प्रजाओं एवं लोक-कल्याणार्थ आपके राजधानी की महिमा स्वबुद्धि अनुसार निरूपित कर अर्पण करता हूँ।

(५) इस आशा के साथ कि श्री महाराज और महारानी युगल कृपामूर्ति सकुटुम्ब इसे देखदेखकर, हँसहँसकर अवश्य स्वीकार करेंगे।

आपकी नीच प्रजा व सेवक
हरिरामलाल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"कार्तिक मास ~~प्रसम्भ~~" प्रारम्भ

कार्तिक महीना भर व्रत रहकर ~~नेम~~ नियम पूर्वक गङ्गा- (नदी तीर्थों में घाघर में) स्नान करके संध्या पूजा पाठ आदि नित्य कर्म से निवृत्त होकर अपने इन्द्रियों को बश में रख कर अपने एवँ कुल के उद्धार के लिये साधना करनी चाहिए। (प्रति दिन सीधा, वस्त्र, मिष्ठान्न फल आदि दान करें।

साधना यह है, अपने गुरु द्वारा प्राप्त मन्त्र का जप करें "शिव-शिव" ~~नाम~~ महा मन्त्र का ~~ना~~ चलते ~~उठते~~ फिरते, उठते, बैठते तथा खाते, ~~पीते~~ पीते बोलते, हँसते, सोते-जागते ~~सोते~~ ~~हमेशः~~ हर समय "शिव-शिव" ~~नाम~~ महामन्त्र का ~~बैखरी~~ वा मानसिक निरन्तर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जप करो। तुम्हारा कल्याण होगा।

शिव ही ब्रह्म हैं, ब्रह्म ही शिव है। जप करते करते ब्रह्माकार वृत्ती हो जाती है। धर्म- अर्थ मोक्ष जैसा मालूम होता है। तेजस्वी तपस्वी ब्राह्मण और साधक होतो ब्रह्मगायत्री का पुरश्चरण करें।

अन्य सभी पञ्चाक्षरी महामन्त्र का पुरश्चरण दशांश मन्त्र का करनी चाहिए। चूँकी पुराण में बेदव्यास जी कहते हैं, कि कलियुग में द्विगुणा जप करने से मन्त्र की सिद्धी होती है। जाप करने वाला व्यक्ति स्वयं सिद्ध होता है, उस की वाणी भी सिद्ध होती है। वह व्यक्ति वाणी से जो भी उपदेश देगा वह हृदयंगम होगा और सही आएगा।

कार्तिक कृष्ण प्रतिपदा तिथि से शिव, शक्ति एवं विष्णु जी का दर्शन- पूजा- उपासना कार्तिक महीना भर पञ्चगङ्गा जी में स्नान करके धूप पापेश्वर - बिन्दुमाधवेश्वर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विष्णु बिन्दुविनायक

बिन्दु माधव ~~विष्णु~~ एवं [~~बिन्दुवि~~नायक - पञ्चगङ्गे श्वर, तैलङ्गे श्वर तथा गभस्ती श्वर, किरणादित्य गभस्तीश विष्णु मंगलागौरी (बालाजी) आदि दर्शन यात्रा करें।

बिन्दु माधव विष्णवे नमः

मन्दिर नम्बर के० २२/३३ में है, मु० पञ्चगङ्गा]

धूप पापे श्वराय नमः [मन्दिर नम्बर - मुहल्ला पञ्चगङ्गा बिन्दुमाधव घाट में बत्ती जलाने वाले ~~खम्भ के पास~~ स्तम्भ से सटे हुये दक्षिण बंगल के शिव मन्दिर में धूप पापे श्वर हैं।

पञ्चगङ्गे श्वराय नमः [मन्दिर नम्बर के० - में है मुहल्ला पञ्च गङ्गा]

गभस्ती श्वराय नमः [मन्दिर नम्बर के० २४/३४ में है मुहल्ला मंगलागौरी]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अर्थ (पञ्चगङ्गा)

इस लिये यह पंचनद तीर्थ तीनों लोकों में विख्यात है, वहाँ जाकर स्नान करनेसे पंचभौतिक शरीर नहीं प्राप्त होता। ११६

स्नान करते ही इसी पञ्चगंगा में ब्रह्माण्ड का भेदन करके प्रयाण करता है। ११७

प्रयाग में माघ मास में अच्छी तरह एक मास स्नान करके जो फल प्राप्त होता है वही एक बार पंचगंगा से। ११८

पंचगंगा में स्नान करके पितृ तर्पण करके बिंदु माधव का दर्शन करने से पुनर्जन्म नही होता है। १२०

जितने तिल के दाने ~~जितने संख्या का तिल~~ देंगे पितरों को और जितना पानी देंगे, तृप्ति होगी पंचगंगा एक साल तृप्ति होगी। १२१

श्रद्धा पूर्वक पंचगंगा में श्राद्ध करने से पितृगण मुक्त हो जाते हैं भले ही अनेक योनि में हो।

काशी में पंचगंगा को प्राप्त होने पर हम लोग मुक्त है। १२४ १

पंचगंगा में जो कुछ धन दान दिया जाय उस पुण्य का क्षय नही होता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

५

अतः पञ्चनदं नाम तीर्थं त्रैलोक्यविश्रुतम् ।
तत्राप्लुतो न गृह्णीयाद्देहं ना पाञ्चभौतिकम्
॥११६॥
अस्मिन् पञ्चनदीनाञ्च सम्भेदे ऽघौघ
भेदिनि ।
स्नानमात्रात् प्रयात्येव भित्त्वा ब्रह्माण्ड
मण्डपम् ॥११७॥ ५९ काशी खं.
प्रयागे माघमासे तु सम्यक् स्नातस्य यत्फलम्
तत्फलं स्याद्दिनैकेन काश्यां पञ्चनदे ध्रुवम् ॥
॥११८॥
स्नात्वा पञ्चनदे तीर्थे कृत्वा च पितृतर्पणम्
बिन्दुमाधवमभ्यर्च्य न भूयो जन्मभाग्
भाग्भवेत् ॥१२०॥
यावत् सङ्ख्या स्तिला दत्ताः पितृभ्यो जल
तर्पणे ।
(काशीखण्डे अ. ५९ ।

पुण्ये पञ्चनदे तीर्थे हृतितः स्पात्तावदाब्दिकी ॥१२१
॥१२१॥
मृत्यां पैः हृतं तद्धं तीर्थं पञ्चनदे शुभे । तेषां पितामहा
मुक्ता नानायोनिगता अपि
काश्यां पञ्चनदं प्राप्य येन मुच्यामहे वयम् ॥ १२४
तत्र पञ्चनदे तीर्थे यत्किञ्चिद्दीयते वसु । कल्पक्षये
ऽपि न भवेत्तस्य पुण्यस्य संक्षयः .....

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पैर्नपञ्चनदे स्नातं कार्तिके पापहारिणि।
तेऽद्यापि गर्भे तिष्ठन्ति पुनस्ते गर्भवासिनः

किरणा धूतपापे च तस्मिन् धर्मनदे शुभे
स्रवन्त्यौ पापसंहर्त्र्यौ वाराणस्यां शुभद्रवे ॥११३॥
किरणा धूतपापा च पुण्यतोया सरस्वती
गङ्गा च यमुना चैव पञ्चनद्योऽत्र कीर्तिता ॥११५॥
(काशीखण्ड अ॰ ११५)

अर्थ— ~~जो लोग~~ जिन लोगोंने कार्तिक मासमें पापहारी पञ्चनद तीर्थमें स्नान नहीं किया है, वे आजभी गर्भमें हैं और आगामी गर्भमें वास करेंगे।

वाराणसीके शुभद्रव गङ्गाजीमें पवित्र दो धर्मनद किरणा तथा धूतपापा गिरती हैं और सभी पापोंको संहार करती हैं। ११३।

किरणा धूतपापा पवित्र जल वाली सरस्वती गङ्गा और यमुना ये पाँच नदियाँ हैं।
(काशीखण्ड अ॰ ११५)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कार्तिके पौर्णमास्यां वा वारे वा शशिनस्तथा ।

महोमासि तथा द्रौयां सहस्रो पुण्य त्र्यक्ष-के ॥

अर्थ- कार्तिक पूर्णिमासी तिथि अथवा सोमवार तथा मार्गशीर्ष या पौष महीने की आर्द्रा में पुष्य नक्षत्र से युक्त होने पर घर में मन्दिर में पार्थिव शिवलिङ्ग बनाकर पूजा करें । अथवा शंकर जी के मन्दिर में जाकर सविधि दर्शन , पूजन करने वाले नर नारि..

कार्तिक कृष्ण प्रतिपदा तिथि से कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा तिथि तक गङ्गा जी नदी, तीर्थ और घर में स्नान करके व्रत, दान, यज्ञ तथा तपस्या आदि साधना करनी चाहिए । चूँकि जन्म से आज तक जो समय गत गया हुआ वह समय अब पुनः नहीं आयेगा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कार्तिक पौर्णमास्यां वा वारे वा शशिनस्तथा।

महोमासितथा ह्रीयाँ सहस्रो पुण्य नक्षत्र के॥

अर्थ- कार्तिक पूर्णिमा तिथि अथवा सोमवार तथा मार्गशीर्ष या पौष महीने की आर्द्रा में पुष्य नक्षत्र से युक्त होने पर घर में मन्दिर में या पार्थिव शिवलिङ्ग बनाकर पूजा करें। अथवा शंकर जी के मन्दिर में जाकर सविधि दर्शन-पूजन करने वाले नर-नारियों

के सब संकट और रोग दूर हो जाते हैं। उस दिन हो सके तो काशी के दारे श्वर का

दर्शन करनी चाहिए।

कार्तिक कृष्ण द्वितीया तिथि के दिन

काशी पञ्च क्रोशी दर्शन यात्रा इस

तिथि के दिन पञ्चक्रोशी यात्रा इस ऋतु

में सब ऋतु से उत्तम सर्वश्रेष्ठ

माना जाता है। पञ्चक्रोशी यात्रा का मार्ग लग-भग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक सौ किलो मीटर की पञ्च-
-कोशी प्रदक्षिणा यात्रा है।

कार्तिक कृष्ण द्वितिया तिथी के दिन
~~त्रेता सत्य युग~~ सतयुग मे शंकर
भगवान् और भवानी गौरी
ने अपने दण्ड पाणी, भैरव
-वीर भद्र आदि ~~भक्तों~~ भक्तों के
साथ पञ्च क्रोशी यात्रा किये
थे इस लिये ~~अ~~ इस दिन और भी
महत्व है। + पञ्च क्रोशी यात्रा करने
वाले व्यक्तियों के स्थूल-पापनष्ट
होते है, संकट, विघ्न-रोग दूर होते है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कार्तिक कृष्ण करवा चतुर्थी तिथि के दिन ओंकार्क विनायक और अर्क विनायक वार्षिक दर्शन यात्रा करें। ओंकार्क विनायक अर्क विनायक के मन्दिर में पूर्वाभिमुख है। ओंकार्क विनायकाय नमः [मन्दिर नम्बर बी० २/१७ में है मुहल्ला ओंकार्क घाट]

कार्तिक कृष्ण चतुर्थी तिथि के दिन काशी में छप्पन विनायक वार्षिक दर्शन पूजन यात्रा करें। छप्पन विनायक यात्रा करने वाले व्यक्ति के मुकदमा आदि असम्भव कार्य भी सिद्ध होते है यह विनायकों की चमत्कार है।

कार्तिक चतुर्थी तिथि के दिन केदारेश्वर के उत्तर बगल में मानो सरोवर ~~घाट~~ तीर्थ में स्नान करके मानो सरोवर कुण्ड से सटे हुए

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पश्चिम बंगाल के -

शिवमन्दिर में मान सरोवरेश्वर है

मान सरोवरेश्वर वार्षिक यात्रा करें।
इस दिन मान वरेश्वर के दर्शन करने से मानसरोवर जाने का फल मिलता है।
मानसरोवरेश्वराय नमः [मन्दिर नम्बर

बी० डी० १४/२ में है मुहल्ला

आन्ध्रा आश्रम मान सरोवर घाट]

इनके दर्शन करने से धन सम्मान की

प्राप्ती होती है और मान सरोवर जाने

की वासना समाप्त होती है।

कार्तिक कृष्ण पक्ष ~~का~~ अष्टमी

तिथि के दिन ~~प्रातः~~ चटपटी देवी

दर्शन वार्षिक यात्रा करें। इन के दर्श-

न, पूजन यात्रा करने से हार्ट सम्बन्धी और
ब्लड प्रेशर — आदि -
रोग नहीं होता है, चटपटी देवी के

दर्शन करने वाले व्यक्ति को हार्ट फेल
नहीं होता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नवमी
कार्तिक कृष्ण नवमि तिथि के दिन कुरुक्षेत्र श्री सूर्य तीर्थ में स्नान वा मार्जन करके कुरुक्षेत्रेश्वर का

कौरेश्वर, करणी-चाहिए।
दर्शन पूजन, (यात्रा) इनका दूसरा नाम सूर्य ग्रहणेश्वर है, इनके दर्शन पूजन इस दिन करने वाले व्यक्ति को असीम, अमोघ फल मिलता है।

सूर्य ग्रहण के दिन ~~सूर्य~~ कुरुक्षेत्र सूर्य तीर्थ में स्नान करने वालों का मेला लगता है। लगभग एक लाख यात्री पहले यात्रा करते थे।

कार्तिक ~~शुक्ल~~ कृष्ण दशमी तिथि के दिन प्रीतिकेश्वर ~~प्रीत्येकेश्वर~~ दर्शन, पूजन नाथिक यात्रा करें। इस दिन इनके दर्शन, पूजन करने वाले व्यक्तियों को शंकर भगवान की अनन्य भक्ति प्राप्त होती है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कार्तिक शुक्ल कृष्ण एकादशी तिथि के दिन
दुर्गा जी और दुर्गा विष्णु दर्शन वार्षिक यात्रा करें।
दुर्गा देव्यैनमः [मन्दिर नम्बर बी० २७/२ में है
मुहल्ला दुर्गाकुण्ड]

दुर्गा विष्णवेनमः [मन्दिर नम्बर
बी० २७/२ में है दुर्गाकुण्ड दुर्गाजी
के दक्षिण दरवाजे के बाहर विष्णु
मन्दिर में हैं। दुर्गा विष्णु जी का दर्शन
करने वाले व्यक्ति को राम एवं कृष्ण
भगवान की अनन्य भक्ति
प्राप्त होती है। कार्तिक कृष्ण
त्रियोदशी धनतेरस तिथि के दिन
धन की प्राप्ती के लिये ———
स्थिर लक्ष्मी को मनाते हुए घर में रखने
के लिये बर्तन, सामान बाजार से खरीद
कर लाते है, धनी लोग सोने की गिन्नी,
चाँदी का रुपया खरीद कर घर में रख
कर लक्ष्मी पूजा के दिन पूजा करके
रखते हैं। यह हमारी सनातन-वैदिक
धर्म की परम्परा है। (दूसरे पृष्ठ पर देखे) →

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कार्तिककृष्ण त्रयोदशी (धनतेरस) तिथि के दिन धनेश्वर दर्शन पूजन वार्षिक यात्रा करें।

धनेश्वराय नमः [मन्दिर नम्बर डी० १०/ ५० में है मुहल्ला साक्षी विनायक विश्वनाथ गली]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी तिथि के दिन
हनुमान जयन्ती है काशी में अवकाश
लेकर प्रयान पूर्वक हनुमान घाटवार्थि
के दर्शन, पूजन यात्री करने वाले
नर, नारियों को राम की भक्ति शरीर में
शक्ति और बल वीर्य की प्राप्ती होती है
इतना ही नही हनुमान नाटक में तो
कहते है, हनुमान दर्शन, यात्रा करने
वाले व्यक्ति इह लोक में सुख शान्ती
प्राप्त करके सर्वा सिद्धी प्राप्त करता
है। ~~कार्तिक कृष्ण अमावस्या तिथि~~
~~के दि~~

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कार्तिक कृष्ण अमावस्या तिथि के दिन
दिपावली (दिवाली) महा पर्व है, उस
दिन स्नान, संध्या, तर्पण आदि से निवृत्त
होकर गाये के गोबर से जमीन को लीप
कर गोबर का पार्थिव गोवर्धन
बनाकर गोवर्धन और गाये का पूजन
करते हैं। यथा शक्ती दान करते हैं।
शिव योगी तथा ब्राह्मण भोजन कराते
है। जो लक्ष्मी जी के भक्त होते है।
वह व्रत-उपवास रहते हैं। उत्सव
मनाते है, मकान मन्दिर आ गोशाला
आदि सजाते हैं। कार्तिक अमावस्या के
दिन हो सके तो महालक्ष्मी जी की दर्शन
करना चाहिए। अन्न पूर्णा जी में चल
लक्ष्मी है लक्ष्मी कुण्ड में स्थिर लक्ष्मी
है उनका दर्शन करना चाहिए।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कार्तिक कृष्ण त्रियोदशी धनतेरस
के दिन धार्मिक दर्शन यात्रा

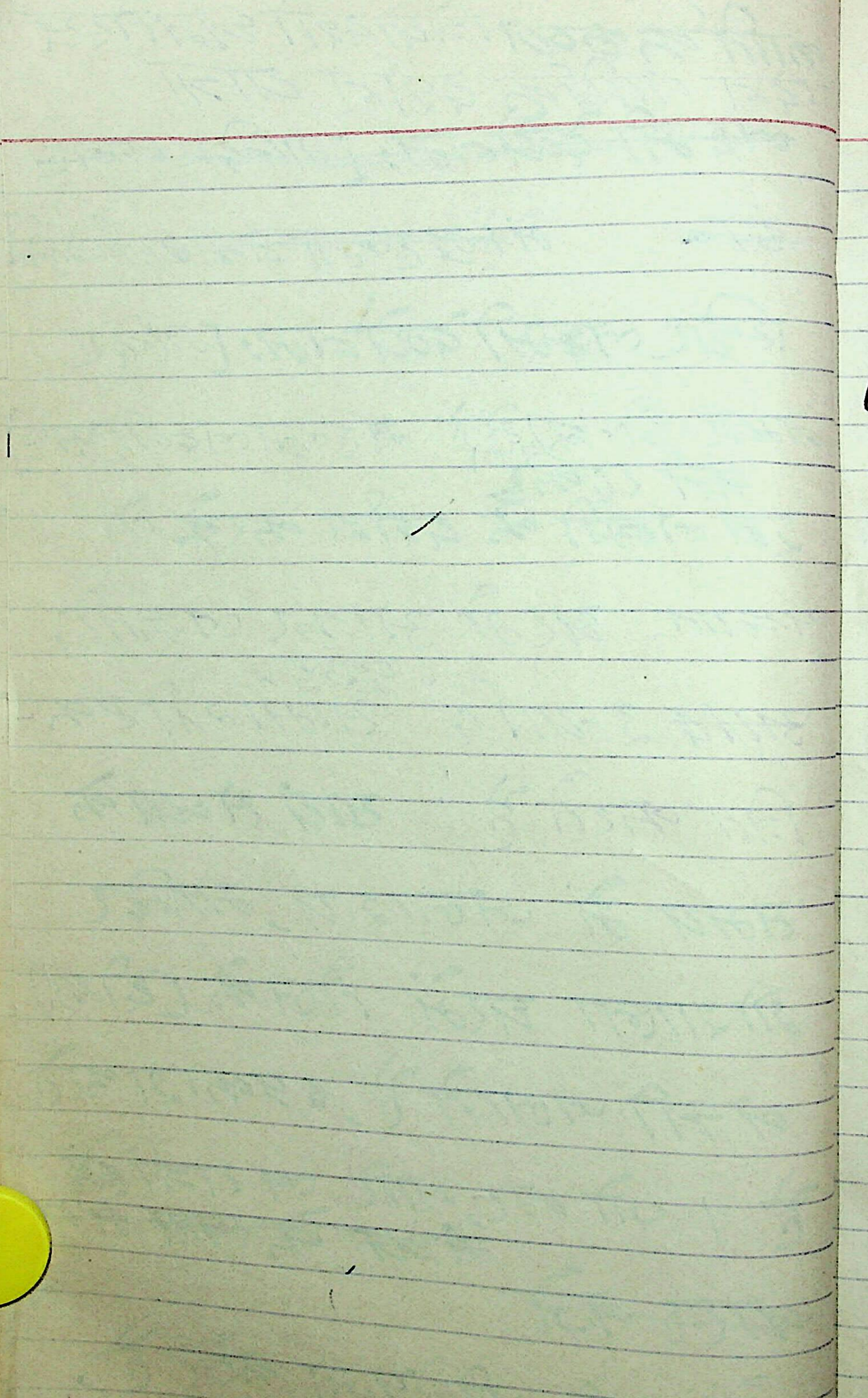
~~लक्ष्मी देव्यै नमः [मन्दिर नम्बर~~

~~डी०~~ ~~में है मुहल्ला अन्नपूर्णा मठी]~~

स्थिर लक्ष्मी देव्यै नमः [मन्दिर
नम्बर डी॰ ५२/३८। में है मुहल्ला लक्ष्मीकुण्ड]

पर्व रहकर
इन लक्ष्मी के दर्शन करके के
पश्चात घर में आकर लक्ष्मी,
पूजा
~~आदि~~ इत्यादि सामाग्री एक-
त्रित करते है। सायं संध्या के
समय में जलाशय, मान्दिर
गोशाला घरमें तेल के (दीया)
बत्ती जलाते है, व प्रकाश करते
है। जो नर, नारी रात्री को
~~संध्या के समय में या~~
~~बारह बजे~~
व में लक्ष्मी जी की पूजा करते है,
रात्री भर जागरण करते है,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

महा लक्ष्मी जी के पूजा करने वाले व्यक्ति यों को वेद व्यास जिन जी लिखते है धन, दौलत और स्थिर लक्ष्मी की प्राप्ती होती है

उस दिन रात्री में गोपाल सहस्त्र नाम, शिव सहस्त्रनाम, देवी सहस्त्रनाम, विष्णु सहस्त्र नाम, लक्ष्मीसुक्त शिव सुक्त आदि के पाठ करते कराते है. महालक्ष्मी के मन्त्र का जप कराते है. ब्राह्मण द्वारा लक्ष्मी सुक्त का पाठ कराते है लक्ष्मी सुक्त से हवन कराते है। अखण्ड-कीर्तन, अखण्ड रामायण आदि करते हैं। अनेक लाभ कारी साधन भी करते है। और लक्ष्मी जी की महामन्त्र का जप करते हैं कराते है।

कार्तिक कृष्ण अमावस्या तिथि के दिन महाकाली बाई के दर्शन पूजन यात्रा करें। महाकाली देव्यै नमः [मन्दिर नम्बर डी० ८/३ में है मुहल्ला कालिका गली] इस दिन काली जी के दर्शन करने वाले को काल का भी भय नही होता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कार्तिक शुक्ल प्रति पदा तिथि के दिन
अन्न पूर्णा विश्वनाथ जी कार्तिक
(अन्न कूट) दर्शन यात्रा। इस
प्रति पदा के दिन प्रत्येक घर-घर में
मिष्ठान, पक्वान्न अनेक प्रकार
के पदार्थ बनाकर लक्ष्मी जी को
अर्पण करके प्रशाद वितरण
करते हैं। कोई-कोई भक्त छप्पन
प्रकार के पदार्थ बनाकर मं
लक्ष्मी जी को भोग लगाते हैं,
प्रशाद वितरण करते हैं। साधु,
संन्यासी एवं ब्राह्मणों को ~~भोजन~~
...याद कों भोजन कराते हैं, बस्त्र
...णा देते है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कार्तिक शुक्ल द्वितिया भैया द्वेज के दिन प्रातः यमतीर्थ में स्नान करके यमेश्वर, दर्शन, पूजन वार्षिक यात्राऐं। भैया द्वितिया के दिन लगभग पाँच हजार मातायें यमेश्वर के दर्शन, पूजन करती हैं। सभी मातायें अपने-अपने भाईयों को चिरन्जीवी, निरोग एवं सुखी रखने के लिये। यमेश्वर से प्रार्थना करती हैं,

~~यमेश्वर को यमराज~~ यह हमारी स्कन्दपुराण, पद्मपुराण, मत्स्यपुराण आदि काशी की परम्परा है।

यमेश्वर शिवलिङ्ग को यमराज जीने स्थापित करके बरदान दिया है, तुम जिस से प्रसन्न होकर आयु देओगे वह व्यक्ति चिरंजिवी और सुखी रहेगा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यमेश्वरायनमः [संकटा घाट पर
[मन्दिर नम्बर
सी० के० मुहल्ला संकटा घाट]
~~[दूसरे घाट पर है]~~

यमादित्य सूर्यायनमः
~~यमेश्वरायनमः~~ [मन्दिर नम्बर
सी० के० ७/१६ में है मुहल्ला सिंधिया घाट
बगल वशिष्ठेश्वर के ~~बगल में है~~] घाट]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यमतीर्थ में स्नान करने पर यमलोक नहीं
जाता है
यमतीर्थ में चतुर्दशी भरणी नक्षत्र मंगल
को पिण्डदान करने से पितृ ऋण से मुक्त
हो जाते हैं। ११ ||

नरक में पड़े हुये पितरों के लिये भरणी नक्षत्र
युक्त मंगलवार का दिन उत्तम माना गया है

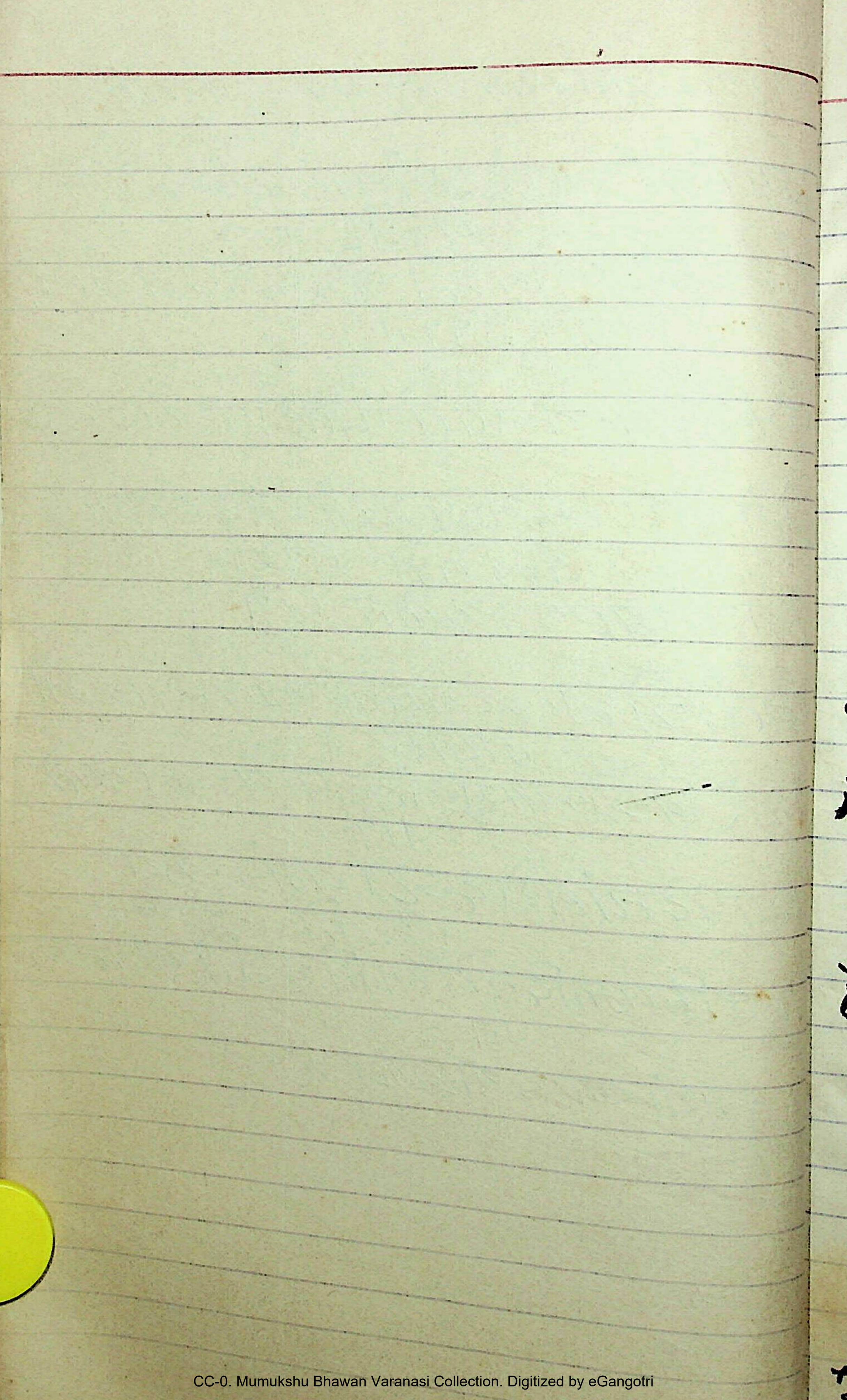
यम तीर्थ में स्नान करके मंगल के दिन यम
दर्शन करने से सभी पापों से मुक्त हो जाते

यमादित्य (सुर्य) को दर्शन करने मनुष्य
यमलोक को नहीं जाता है।
भगवान यमादित्य समस्त यातना
को दूर करते है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यमतीर्थे कृतस्नानो यमलोकं न पश्यति ।
यमतीर्थे चतुर्दश्यां भरण्याम भौम वासरे ।
तर्पणं पिण्डदानञ्च कृत्वा पितृऋणी भवेत ॥११॥
आभिरूप्यान्तसततं पितरो नरकौकसः ।
भौमे भरण्याम्भूतायां यदि योगोऽस्य मुत्तमः ॥१२॥
~~[काशीखण्ड अध्याय ५१]~~
यमतीर्थे नरः स्नात्वा भूतायाम्भौमवासरे ।
यमेश्वरं विलोक्याशु सर्वैः पापैः प्रमुच्यते ।
॥१०७॥
यमादित्यं नरो दृष्ट्वा यमलोकं न पश्यति ॥~~१~~॥
अतः स हि यमादित्यो यामीं हरति यातनाम्
॥१०६॥
[काशीखण्ड अध्याय ५१]
अर्घ्य -

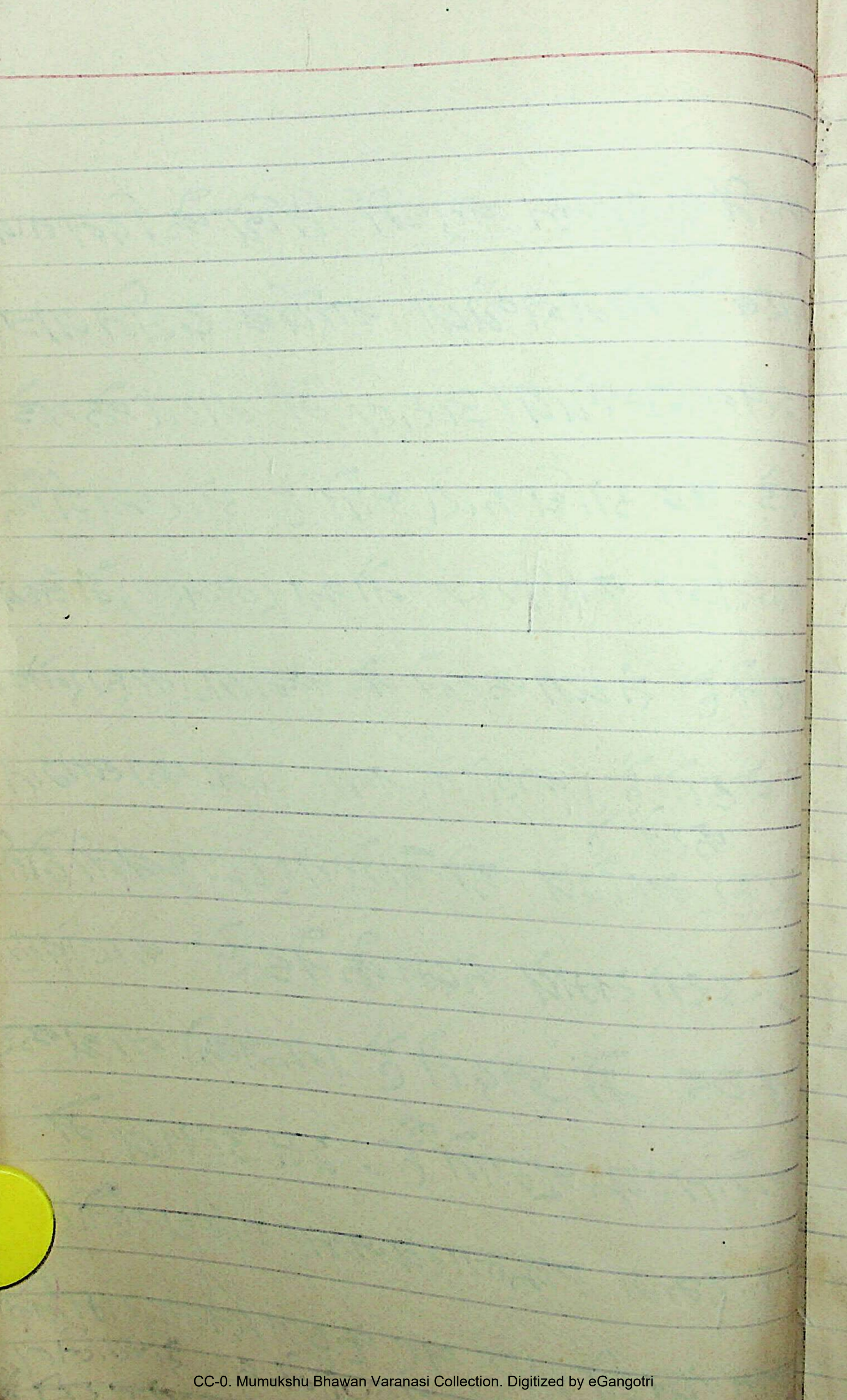
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कार्तिक शुक्ल चतुर्थी तिथि के दिन सायं
चारबजे नागनथैया वार्षिक दर्शन यात्रा
इसनागनथैया उत्सव में भारत के बड़े
बड़े पद अधिकारी आते हैं और काशी के
महाराजा काशीराज नौका (बजरा) में संध्या
करते है संध्या करने के पश्चात महारनौका
में बैठते है। काशी के जनता राजा का स्वागत
करते है-।
हर हर महादेव की चारो तरफ ध्वनी होती
है, उसी समये कदम के पेड से कालीदाह
कुण्ड में कूदते है। नागको नाथकर
चारोतरफ घूमाते है- इस उत्सव में
लगभग एकलाख जनता उपस्थित रहती है।
तुलसी घाट पर कृष्णलीला रामलीला
होती है वह तुलसी दासजी के द्वारा संचालित/
परम्परा है। आजतक उसी प्रकार चल रही है

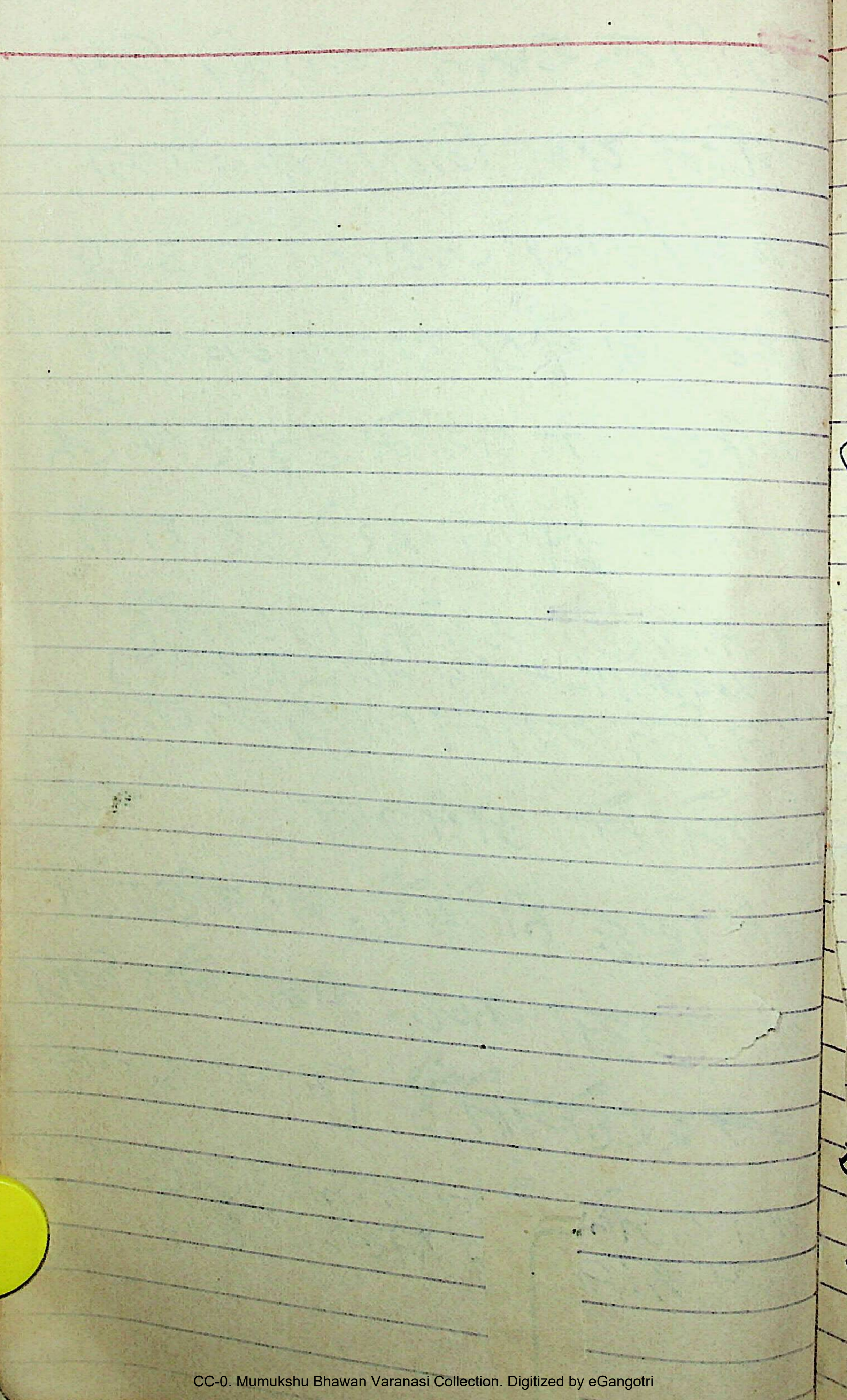
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कार्तिक शुक्ल चतुर्थी तिथि
के दिन पद्म विनायक जी का
जन्म तिथि जयन्ती है, उस
दिन विशेष उत्सव मनाना
चाहिए। और रात्री में श्रृङ्गार करके
रात्री में कीर्तन करते हुए रात्री
में जागरण करने का विधान है।
[स्कन्द पुराण - में इव गणेश पुराण में है]
इस दिन दर्शन वार्षिक यात्रा
करने से असंभव कार्य
भी सिद्ध होते हैं, घर परिवार में
आया हुआ कष्ट, संकट और विघ्न
~~भी~~ दूर हो जाते है। [स्वामी करपात्री
महाराज को जो चमत्कार हुआ था
उस का वर्णन लिखना है।]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सूर्य अस्त के समय में सूर्यनारायण भग प्रत्यक्ष भगवान को अर्घ्य देती है

दूसरे दिन: पुनः प्रातः पुनः उसी जगह स्नान आदि नित्य कर्म से निवृत होकर पुनः उसी जगह जाकर सूर्य उदय के समय में पूजा करती है, सूर्य को अर्घ्यदान

∴ स्कन्द पुराण में, अग्नि पुराण में, उपस्थ पुराण में मे वर्णन है

करती है। वह हमारे काशी में

लगभग एक लाख स्त्रियाँ पूजा करती है। यह हमारे सनातन वैदिक धर्म है के अनुसार है। सूर्य षष्ठी के दिन सायं और प्रातः नौका में अस्सी घाट से राज घाट तक गङ्गा से दर्शन करनी चाहिए।

सूर्य षष्ठि नामक पुस्तिका में लिखा है कि सूर्य व्रत करने से सब कामनायें पूर्ण होते है संकट दूर होते है। इतना ही विघ्न बाधा भी दूर होते है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

[कार्तिक शुक्ल सप्तमी तिथि के दिन से ज्ञान यज्ञ प्रारम्भ होता है, सप्तमी तिथि के दिन से कार्तिक पूर्णिमा तिथि तक शिवनारायण ~~स~~ शास्त्री जी का रामायण सम्मेलन होता है। प्रातः नौ बजे से दो बजे तक रामायण के ध्वनी के साथ नवार्ण पाठ होता है, काशी के कोने, कोने में लौडस्पिकर लगा है, पाठ और सायं आठ बजे से 10 बजे तक ~~सुनाई पड़ता~~ है। भारत के कोने, कोने से वि द्वान आकर भक्ती ~~एवं~~ ज्ञान (साधना) योग आदि का उपदेश देते हैं कथा सुनाते है। यह काशी का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परसिद्ध रामायण सम्मेलन है
और काशी में श्रीमद् भागवत
रामायण, श्रीमद् भगवत गीता
तथा वेदान्त सम्मेलन होते हैं।
कार्तिक, मास ~~शुक्ल पक्ष~~ में बड़े-बड़े
रुद्र ला ~~सुत~~ रुद्री~~पाठ~~, लक्षे रुद्री
शत चण्डी एवं लक्षे चण्डी इत्यादि
यज्ञ होते है।]
~~कार्तिक सप्तमी तिथि के दिन~~ सप्तायन दर्शन
कार्त्तिक पाक्षत्रा ब्रह्मवैवर्त पुराण के अनु
सार] के दोरवा दण्ड पाणी ~~रव~~ ~~यम~~ ~~में~~, विश्वेश्वर विशा-
लाक्षी, आत्मा विरेश्वर, काल भैरव,
त्रिलोचनेश्वर, ओंकारेश्वर, कृत्तिवासे
श्वर आदि के दर्शन पूजन करनी चाहिए।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

→ अर्थ

कार्तिक मे शुक्लाष्टमी तिथि में उपाबास करके जो लोग धर्म तीर्थ मे स्नान करते है उन्हें समस्त पुरुषार्थ सिद्धि प्राप्त होती है।

दैव योग से धर्मेश्वर का दर्शन होता है उनके दर्शन स्पर्शन अर्चन से, सिद्धि प्राप्त होती है

धर्मेश्वर का जो एक बार दर्शन करता है उसकी निर्मल बुद्धि होती है

पत्र, पुष्प, जल, दुर्वा से धर्मेश्वर का अर्चना करते है

रात्री में जागरण करता है उसे पुनर्जन्म नही होता

जो लोग स्तुति करते है उसका कल्याण होता है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कार्तिक शुक्ल गोपाष्टमी तिथि के दिन धर्मकूप में स्नान करके

धर्मेश्वर दर्शन वार्षिक यात्रा है

| | |

वे -

ये कार्त्तिके मासि सिताष्टमी तिथौ यात्रां करिष्य करिष्यन्ति नरा उपोषिताः । ५५/१

स्नात्वा प्रसूतेऽत्र च धर्मतीर्थे न तस्या दूरे पुरुषार्थ सिद्धिः ~~करिष्यन्ति~~

व -

कृत्वाऽप्य पापनामिहयः सहस्रं धर्मेश्वरं पश्यति दैव योगात् ।

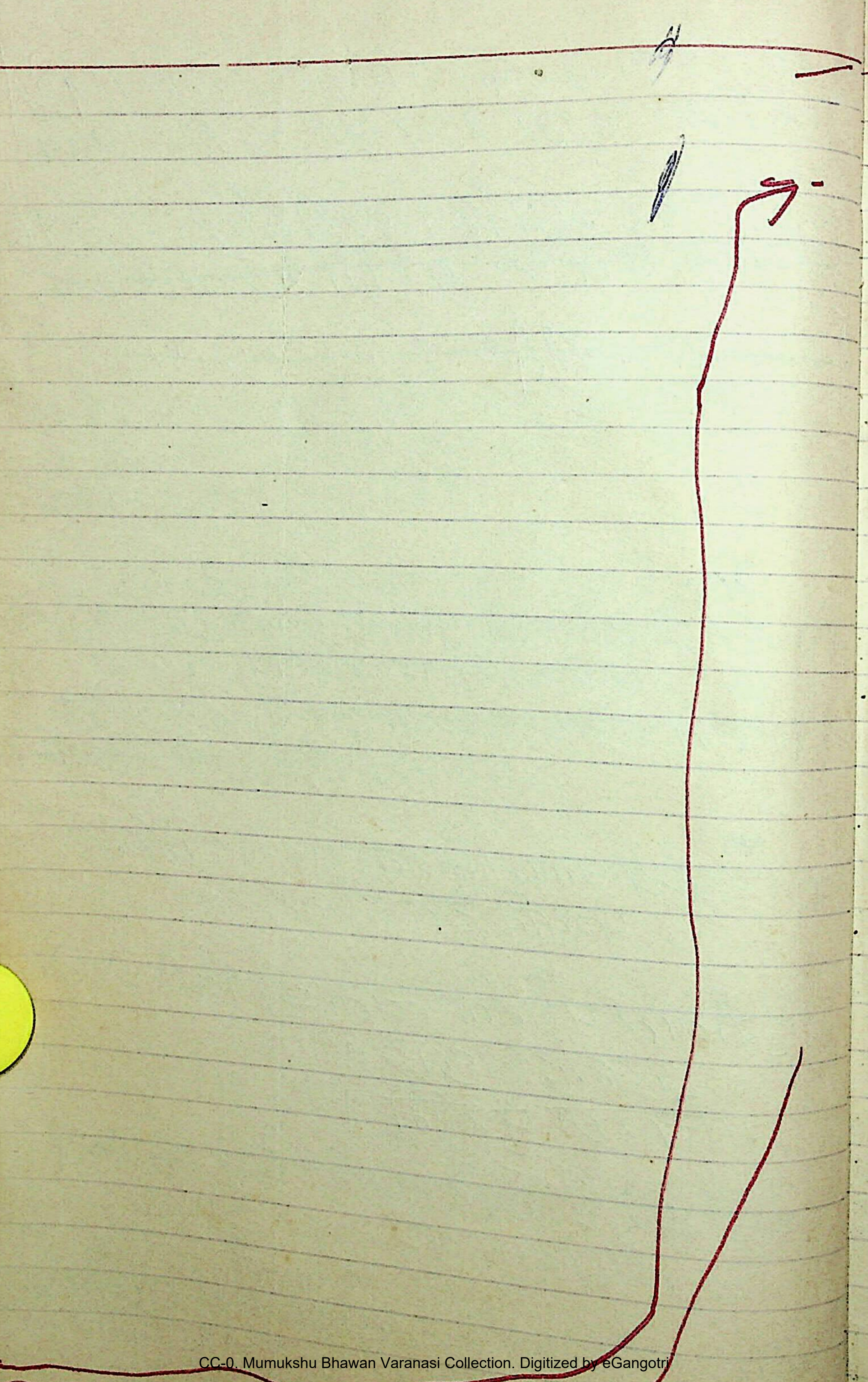
तद्दर्शनात्स्पर्शनतोऽर्चनाच्च सिद्धिर्भविष्य त्यवदातबुद्धे ।

त्यचिरेण पुंसाम् ।।४६/२।।

धर्मेश्वरं यः सकृदेव मर्त्यो विलोकयिष्य त्यवदात बुद्धि :।।४६/१।।

पत्रेण पुष्पेण जलेन दूर्वया योधर्म ! धर्मेश्वर मर्चयिष्यति । अगला पन्ने का श्लोक भी दाइप करें ३ श्लोक देने से अर्थ ...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रात्रौ च वै जागरणं महोत्सवै र्धर्मेश्वरे –
तेन पुनर्भवा भुवि ॥ ५५॥

स्तुतिं च ये वै त्वदुदीरितामिमां
नराः पठिष्यन्ति तवाऽग्रतः
क्वचित् ।
[काशी खण्ड अध्याय ५८]

अर्थ –

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

काशी विश्वनाथ अन्तर्गृही ~~या~~ दर्शन यात्रा

कार्तिक शुक्ल गोपा अष्टमी के दिन प्रातः स्नान संध्या आदि ~~नित्य~~ कर्म से निवृत होकर विश्वनाथ अन्तर्गृही कार्तिक दर्शन यात्रा नौकरी आदि कार्यों से अवकाश लेकर श्रद्धा, भक्ति से युक्त होकर अन्तर्गृही यात्रा करनी चाहिए। ~~क~~ चूँकि काशी में मनः वाणी शरीर से जानकर अथवा अनजान से जो पाप कर्म होते है। इस यात्रा से वह पापों का प्रायश्चित्त होता है, जिन व्यक्तियों का विश्वेश पाप हो जाते है। वह व्यक्ति विश्वनाथ जी से ~~प्रार्थ~~ मनौती मानता है, हे विश्वनाथ जी

मैं 1 ~~बार~~ एक सौ आठ बार यात्रा करूँगा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

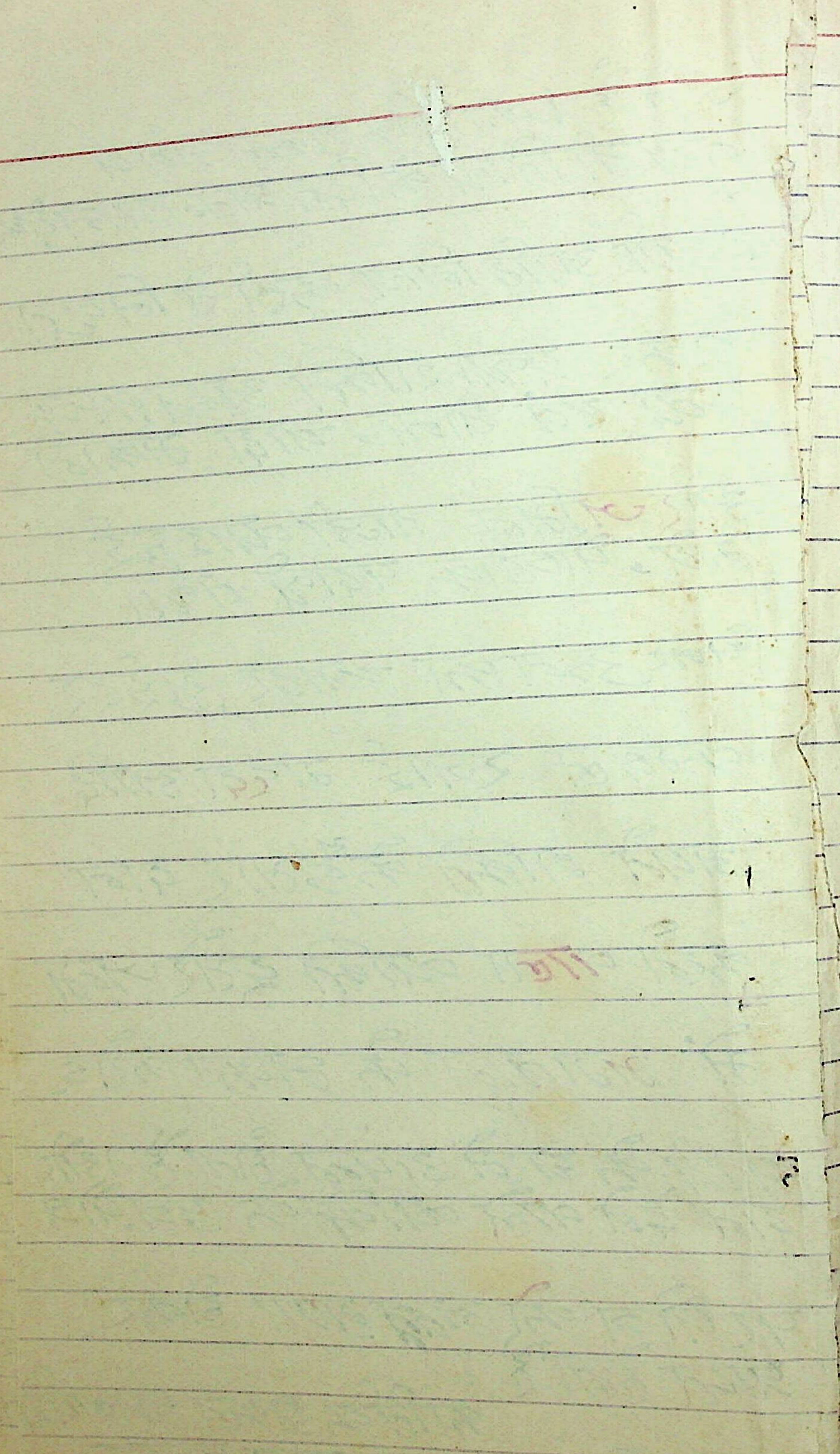
मेरे सभी पापों का प्रायश्चित्त कर दी ही
सोचे कहते है। और अपने पित
रों को मुक्ति दिलाने के लिये उन
के नाम से स्वयं यात्रा करते है
तथा ब्राह्मणों को वरण करके यात्रा
करने भेजते है। विश्वनाथ जी
मन्द्राचल पर्वत से काशी आने के
पश्चात् कार्तिक शुक्ल गोपा
अष्टमी तिथि के दिन विश्वनाथ अन्न
पूर्णा जी अपने भक्तों के
साथ विश्वनाथ अन्तर्गृही यात्रा
किये। कार्तिक शुक्ल गोपा अष्टमी तिथि
के दिन यक्षे भैरव वार्षिक दर्शन
पूजन. यात्रा करें। इस तिथि के दिन
श्रृंगार होती है विशेष उत्सव मनाया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाते है। कार्तिक शुक्ल अक्षय
नवमी तिथी के दिन प्रातः स्नान संध्या
तर्पण आदि नीत्य कर्म से निवृत्त
होकर यथा शक्ती अन्न, वस्त्र
द्रव्य एवं सोना, चांदी, मकान
और जमीन ताजी ब्याइ हुई
गाये, पौष्टीक पदार्थ तथा
धेनु ऊन का च्यादर, सुईटर
कम्बल रजाई गद्दा आदि
अपने शक्ति के अनुसार दान
करने वाला व्यक्ती दूसरे जन्म
में भगवान के भक्त करोड़
पति के घर में उत्पन्न होता है। और
दान देने वाले व्यक्ती के पुत्र, पौत्र
परपौत्र को अनन्त गुणा होकर
प्राप्त होता है।
कार्तिक शुक्ल अक्षय नवमी
तिथी के दिन नवग्रह दर्शन पूजन
नाविक यात्रा वह यात्रा करने से सबग्रह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कार्तिक शुक्ल अक्षय नवमी तिथि के दिन (~~अथवा शुक्ल पक्ष भर~~) नित्य कर्म से निवृत्त होकर आँवला पेड़ के नीचे साधु, संन्यासी और ब्राह्मणों को भोजन कराने के पश्चात वस्त्र, दक्षिणा देकर विदा करके अपने मित्र परिवार के साथ भोजन करने से धन की प्राप्ती होती है।

स्कन्द पुराण में कार्तिक माहात्म्य में प्राचीन इतिहास इस प्रकार है!

एक हरिप्रशाद नामका ब्राह्मण था उसने सूखा अन्न का भिक्षा मांग कर सामान लाकर आँवला के पेड़ के निचे साधु संन्यासी एवं ब्राह्मणों को भोजन कराया उसीदिन के रात्री में उसके पिसारा पर आँवला के दान के बराबर सोना का बर्षा हुआ आकाश वाणी हुई इसी सोने को बेचकर।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वेद्य, दान एवं परोपकार करो
अन्न क्षेत्र खोलो मन्दिर बनाओ
और दीन दुखियों पर दया करो
तुमको कभी भी धन की कमी
न होगी।

कार्तिक शुक्ल हरीबोधिनी एकादशी तिथि के दिन बिन्दुतीर्थ पञ्च गङ्गा जी में स्नान कर शुद्ध वस्त्र माला चन्दन आदि लगाकर विष्णवे नमः - । विष्णवे नमः कहते हुए, बिन्दु माधव जी का दर्शन करने जाना चाहिए।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अर्थ —

अर्थ -

कार्तिक में बिन्दु तीर्थ में ब्रह्म चर्य परायण होकर सूर्योदय से पूर्व स्नान करता है उसे किसी प्रकार का भय नहीं होता है।
बिन्दु तीर्थ में स्नान होगा जो सब पाप का नाशक है [कार्तिक माहात्म्य है]

कार्तिके बिन्दुतीर्थे यो ब्रह्मचर्य परायण:।
स्नास्यत्यनुदिते भानौ भानुजात्तस्य भी: कुत: ॥७३॥
बिन्दुतीर्थमिदं नाम तव नाम्ना भविष्यति।
अग्नि बिन्दो मुनिश्रेष्ठ सर्व पातक नाशनम्।
॥७४॥
अपि पाप सहस्त्राणि कृत्वा मोहन मानव:।
ऊर्जे धर्मनदे स्नातो निष्पापो जायते क्षणात्।
एक भक्तेन नक्तेन तथैवायाचितेन च।
उपवासेन देहोऽयं संशोध्योऽशुचि भाजनम्॥
॥७६॥
विश्वेशानुग्रहं प्राप्य मनोऽहमपि मुक्तिद:।
मद्भक्तैस्तद्विशेषेण सेव्यो विश्वेश्वरोऽनिशम्।
॥१३४॥ काशीखण्ड अध्याय ६०]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अर्घ -

अर्घ -

कार्तिक में बिन्दु तीर्थ में ब्रह्म चर्य परायण होकर सूर्योदय से पूर्व स्नान करता है उसे किसी प्रकार का भय नहीं होता है।
बिन्दु तीर्थ में स्नान होगा जो सब पाप का नाशक है हजार पाप करके मनुष्य कार्तिक में आकर इस धर्मनद में करने से शीघ्र ही निष्पाप हो जाता है
एक अन्न से रात्री में भोजन करके उपवास करके शरीर का शुद्धी करना चाहिए

विश्वेश्वर के अनुग्रह से यह मुक्ती देने वाला स्थान है मेरे भक्त तथा शिष्य से यह स्थान सदा सेव्य है

कार्तिक शुक्ल एकादशि तीथी के दिन प्रातः पञ्च गङ्गा में स्नान करके श्रद्धा भक्ति से युक्त होकर गोपाल विष्णु भगवान का दर्शन करने के लिए गोपाल मन्दिर में जाना ~~आना चाहिए~~

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एका

जाकर गोपाल कृष्ण भगवान
का दर्शन करनी चाहिए। गोपाल कृष्ण
की वार्षिक दर्शन यात्रा करें।

गोपाल कृष्णाय नमः [मन्दिर नम्बर
. . . मुहल्ला चौखम्भा सट्टी

कार्तिक शुक्ल १ हरिबोधिनी एका
दशी तिथि के दिन - पादोदक
तीर्थ वरणा, गङ्गा संगम पर
~~में ज्ञानवापी के~~ ज्ञान केशव
आदि केशव वार्षिक ~~या~~
दर्शन यात्रा करें।

ज्ञान केशवाय नमः [मन्दिर नम्बर
ए० ३७/५१ मुहल्ला आदि केशव
बसन्त कालेज।

कार्तिक शुक्ल हरिबोधनी एकादशी तिथि
को। प्रातः सोऽक्ष विष्णु वार्षिक दर्शन, पूजन
यात्रा करें। विष्णु दर्शन यात्रा से विष्णु और
लक्ष्मी की भक्ति प्राप्त होती है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विष्णु यात्रा का वर्णन विष्णुपुराण, स्कन्दपुराण, मत्स्यपुराण में मिलता है।

कार्तिक शुक्ल एकादशी तिथि के दिन

विष्णु दर्शन यात्रा

11 भवानी शंकर विष्णवे नमः [मन्दिर नम्बर सी॰के॰ ३८/८ में है मुहल्ला बासफाटक]

2 महा विष्णवे नमः [मन्दिर नम्बर सी॰के॰ ८/६ में है अन्नपूर्णा जी के सामने है मुहल्ला अन्नपूर्णा गली]

3 विश्वनाथ विष्णवे नमः [मन्दिर नम्बर सी॰के॰ ३५/१८ में है फाटक के अन्दर बायें तरफ में है मुहल्ला अन्नपूर्णा गली]

4 ज्ञान विष्णवे नमः [मन्दिर नम्बर सी॰ के॰ मुहल्ला ज्ञानवापी तारकेश्वर मन्दिर में है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हरिबोधिनी ~~एक~~ एकादशी के दिन सोलहविष्णु वार्षिक ~~मा~~ दर्शन यात्रा प्रयत्न से अवकाश लेकरें।

इसोलह विष्णु यात्रा करने वाले नर-नारी यों को शिव, शक्ति, विष्णु भगवान की अनन्य भक्ति प्राप्त होती है।

[कार्तिक शुक्ल एकादशी तिथि से पूर्णिमातिथितक भगवान के प्राप्ती के लिए नर-नारियों को साधना करनी चाहिए। प्रात: गङ्गा जीमें स्नान करके संध्या, तर्पण तथा अपने २ इष्ट देव एवं शिव पूजा करने के पश्चात्। यथा शक्ति अन्न, जल, वस्त्र और औषधी ~~आ~~ इत्यादि दान करके ~~के पश्चात~~ अपने जन्म जन्मान्तर के पापों का प्रायश्चित्त करने के लिए अनेक साधना हैं। जिन को जो प्रिय हो वह करें। उन साधनाओं में से एक यह भी साधना है; इस जन्म और जन्मान्तर में ~~प~~ पुरुष पर स्त्रिमें जो ~~परस्पर~~ परस्पर,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्पर्शास्पर्श दोष है।

दोष हुवे है [उन के प्रायश्चित्त के लिये इन्दुशेखर प्रायश्चित्त नाम के ग्रन्थ में इस प्रकार वर्णन है, ~~सूक्ष्म रूपसे~~ संक्षिप्त वर्णन है काशी में रहने वाला व्यक्ती और [विश्वराष्ट्र में रहने वाले जो जहाँ रहता है वहीं नेम पूर्वक साधना करें] त्रिकाल, संध्या स्नान त्रिकाल संध्या करनी चाहिये। निरन्तर शिव-शिव नाम महा मन्त्र का जप करें, जिन व्याक्ती के परम्परा में जनेऊ, ~~नहिने~~ ~~का~~ नहि पहिन्ते है वह व्याक्ती पञ्चाक्षरी माहा मन्त्र का जप करें। सम्माननिय विद्वान वृध ब्राह्मण द्वारा शास्त्र विधी से पञ्चगव्य बनाकर मध्यान्न संध्या के पश्चात् दिया हुआ दो सौ ग्राम लेकर पेकर पाँच दिन तक रहना चाहिये। कुशासन या पेवर उन का कम्बल बिछाकर गाय के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गोबर से लिपा हुआ जमीन में कुशासन

कम्बल पाँच दिन तक रहे, मध्यान्ह जल

पान के पश्चात् काशी मोक्ष निर्णय-काशी

महात्म्य-काशी दर्शन और वेदान्त आदि

ग्रन्थों के आधार से सत्कथा श्रवण करें।

सोयं भी उसको देख कर मनन, निधि

ध्यासन करे, इस अनुष्ठान में बुद्धि शुद्ध

होती है [काशी से बाहर रहने वाला

व्यक्ति गीता व उपनिषद् आदि वेदान्त

का श्रवण करें] अपने इन्द्रियों को बस

में रखकर नेयम का पालन करनी चाहिये।

सायं संध्या के पश्चात् भी सत्शास्त्रों का मनन

करे, अपने इष्ट देव का ध्यान करें ध्यान के

पश्चात्। इष्ट देव के स्मरण करते हुए शयन

करें।

प्रातः तीन बजे सैया से उठकर नित्यकर्म

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

~~यात्रा~~

~~काशी अविमुक्त माहात्म्य~~

~~अविमुक्त~~

~~करनी~~

करनी चाहिए

हरिबोधानी एकादशी के दिन व्रत, उपवास रहते है विष्णु दर्शन करते है, ~~सायं काल विष्णु~~ विष्णु भगवान के पार्थिव मृत्तिका मूर्ति बना कर और तुलसी जी की पूजा करते है। कोई-कोई सायं काल पूजा करके सत्तेनाराण भगवान का कथा सुनते है, + एकादशी माहात्म्य का श्रवण करते है। एकादशी के दिन से पूर्णिमा तक प्रति दिन पञ्चगङ्गा मे स्नान करके बिन्दु माधव दर्शन यात्रा करनी चाहिए।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

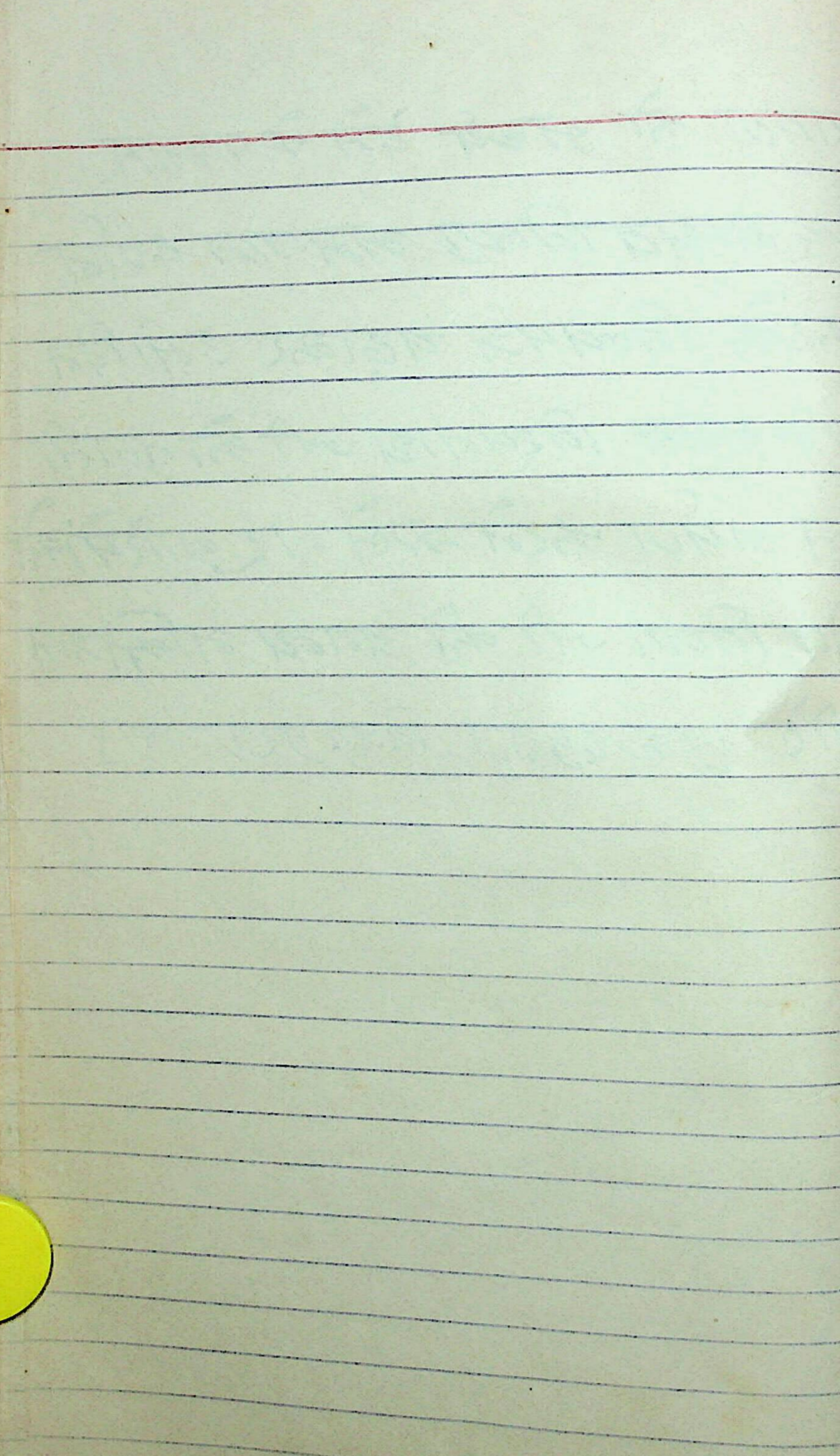
कार्तिक शुक्ल त्रियोदशी तिथि के दिन
विश्वनाथ, विशालाक्षी जी ने अपने ढुण्ढि
राज दण्डपाणी आदि भक्तों के साथ
काशी विश्वनाथ अङ्ग· यात्रा किये थे इस
लिये विश्वनाथ जी स्वयं यात्रा करते
हैं [काशीखण्ड उप नन्दीपुराण में वर्णन है]
है, मानव मात्र को भी यात्रा करनी चाहिए
कार्तिक शुक्ल त्रियोदशी तिथि के दिन
काशी विश्वनाथ अङ्ग· पार्थिक दर्शन व
पूजन ओंकारालेकर यात्रा करें। अङ्ग· यात्रा करने वाले
नर नारियों के प्रति विश्वनाथ, अन्नपूर्णा
प्रसन्न होते हैं, यात्रा करने वाले भक्तों को
पुत्र, पौत्र पर, पौत्र और संपत्ति देकर सुख
देते हैं तथा अन्त में मोक्ष प्रदान करते हैं।
कार्तिक शुक्ल चतुर्दशी तिथि के दिन,
प्रातः पञ्चगङ्गा जी में स्नान कर सूर्य-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नारायण को अर्घ्य देने के पश्चात
बिन्दु माधव विष्णु भगवान दर्शन
करके विल्वपत्र चढ़ाकर उसी दिन
~~उसी समय~~ विश्वनाथ जी को तुलसी
दल अर्पण करने वाले नर नारियों को
शिव, विष्णु जी की अनन्य भक्ति प्राप्त
होती है [स्कन्दपुराण, विष्णुपुराण से.]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कार्त्तिकस्य चतुर्दश्यां विश्वेशं यो विलोकयेत्
स्नात्वा चोत्तरवाहिन्यां न तस्य पुनरागतिः
॥११०॥

काशीमिदानीं यास्यामि विश्वेश्वर विलोकने।

अद्य यात्राऽस्ति महती कार्त्तिक्यां बहु
बहुपुण्यदा ॥१०८॥
[काशीखण्ड अध्याय २१]

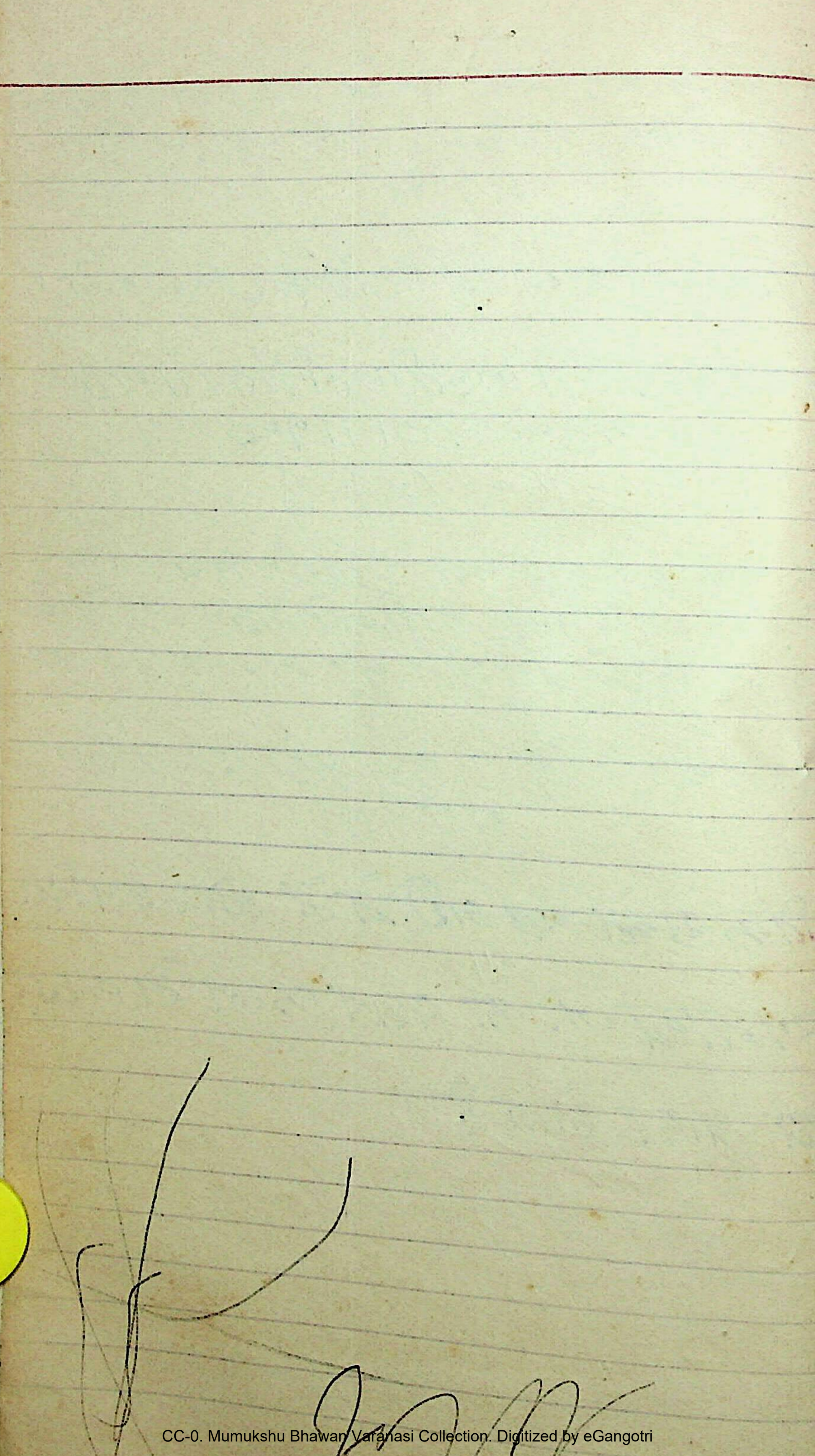
अर्थ- कार्तिक शुक्ल पक्ष चतुर्दशी तिथी के दिन जो नर-नारी उत्तर वाहिनी गङ्गा जी में स्नान करके विश्वनाथ भगवान का दर्शन करते है। उन का पुनर्जन्म नहि होता है।

कार्तिक ~~शुक्ल पक्ष~~ महीने में और इस दिन विश्वनाथ जी का दर्शन करने से बहुत पुण्य प्राप्त होता है।

कार्तिक के चतुर्दशी के दिन जो उत्तर बाहनी गंगा में स्नान कर जो बिश्वेश्वर का दर्शन करता है उसका पुनर्जन्म नही होती है।११०॥

वर्तमान काशी जाऊंगा बिश्वेश्वर दर्शन हेतु आज बड़ी यात्रा है जो कार्तिक में बड़

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा तिथि के दिन वाराणसी प्रदक्षिणा यात्रा करते है। जो चलने में समर्थ है वह एक दिन की यात्रा करते है यह यात्रा अनादि काल से चल रही है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा तिथि

~~कार्तिक~~ के दिन स्कन्द कार्तिकेस्वा

मी दर्शन पूजन वार्षिक यात्रा ~~कूरे~~

स्कन्द कार्तिकेस्वामी मन्दिर नम्बर ८/१०२ में है मु. केदारघाट।

नी चाहिए। स्कन्द जी के दर्शन

पूजन, उपासना करने वाला व्यक्ति

~~से~~ अनपढ़ होते हुए भी शास्त्र का

ज्ञान स्वत: होता है, आज भी ऐसे व्यक्ति है जो बोलते है जो कार्य करते है सब शास्त्र के अनुसार करते है।

कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा तिथि

के दिन काशी के उत्तरवाहिनी

गङ्गा जी में स्नान करने के लिये.

भारत के कोने-कोने से और ने-

पाल, भूटान, लङ्का आदि विदेश

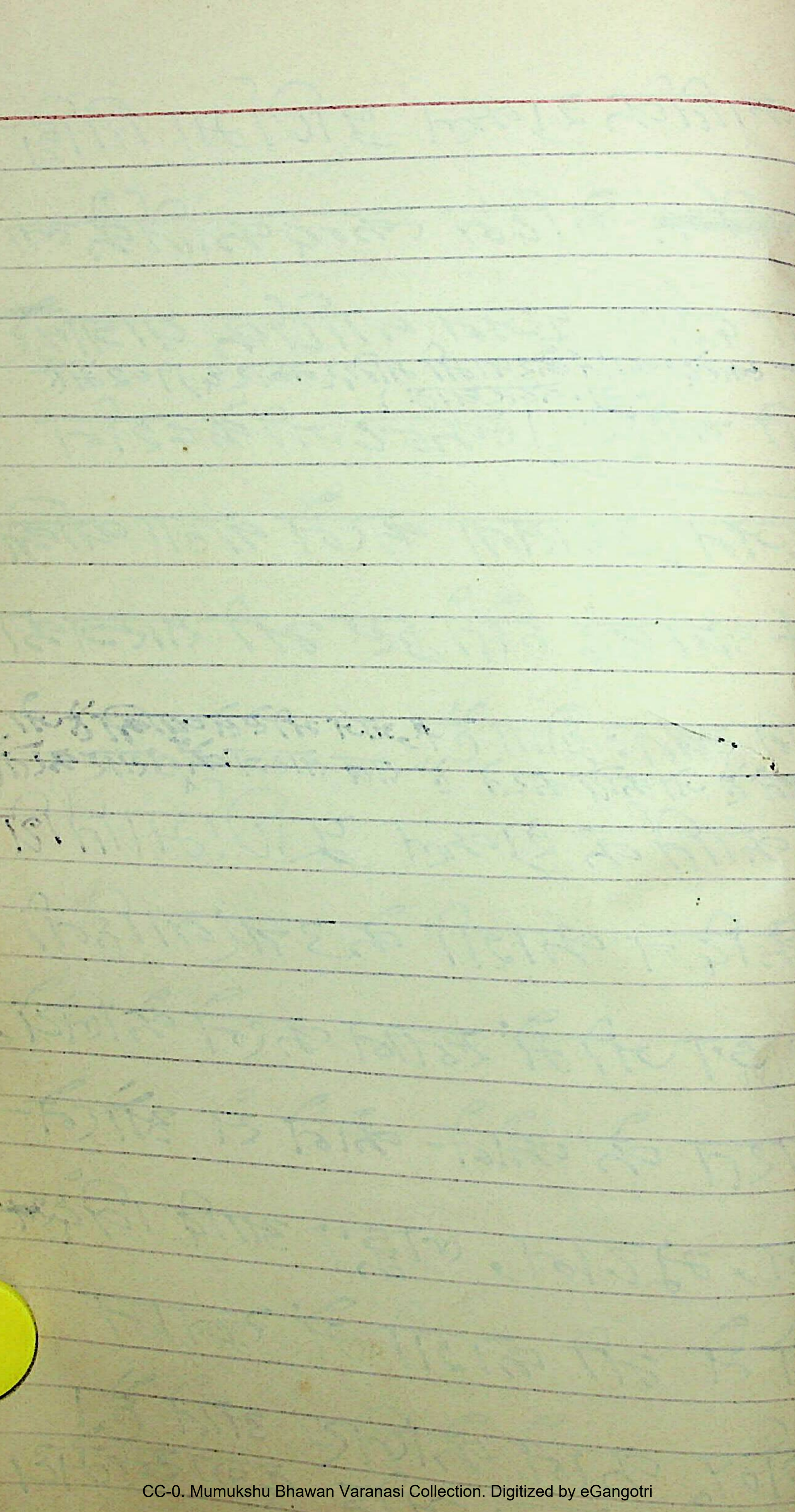
शो से भी काशी में स्नान

दर्शन करने के लिए आते है।

सबसे ज्यादा भीड़ दशास्वमेध

घाट में होता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उस दीन लगभग दशलाख

यात्री काशी की गङ्गा जीमें
स्नान करते है। [वेद, पुराण के

आज्ञा अनुसार तो गङ्गोतरी से गङ्गा

सागर तक गङ्गा ~~सामहा~~ जीमें

स्नान करना चाहिए]। कार्तिक

शुक्ल पूर्णिमा के दिन किसी

भी नदी तीर्थ, अथवा घरमें
में स्नान करके संध्यापूजा - पाठ -

करके एन्या शक्ति दान करें। उस
दिन उस दिन भारत में विभिन्न उत्सव

मनाते है, अखण्ड कीर्तन अखण्ड रामायण
करते है, । हमारी काशीमें तो जगह = जगह
कवाली, विराहा,
. रामकिला, कथा, प्रवचन होते है, साधु
संन्यासी ओर ब्राजणों को भोजन कराते है।

सायं संध्या के समय में घरमें मन्दिर में
जला सये में गङ्गा जी मे तेल का बत्ति (दिया)
जला कर प्रकाश करते है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तत्राभ्यासे स्कन्द तीर्थं तत्राप्लुत्य नरोत्तमः।

दृष्ट्वा षडाननं चैव जह्यात्षाट्कौशिकीं तनुम् ॥१२०॥

तारकेश्वर पूर्वेण दृष्ट्वा देवं षडाननम्।

वसेत्षडाननो लोके कौमारं वपुरुद्वहन्॥
[काशी खण्ड अ० ६१ ॥१२१॥]

अर्थ —

वहाँ स्कन्ध तीर्थ है वह

शडानन्द (षडानन) जी के दर्शन से कौशिकी शरीर छूट जाता है
तारकेश्वर के पुर्व से शडानन्द (षडानन (कार्तिकेय)) का स्थान है

इसलोक शडानन्द (षडानन) कौमार शरीर को धारण कर निवास करते हैं

दो० ॥१०८॥ [काशी खण्ड अध्याय २१]
अर्थ — मैं तुम्हारी (प्रसन्न होकर) सेवा के लिए, और रोग आदि दुखों को नाश करने के लिए यहाँ आया हूँ ॥१०८॥
अब मैं भगवान् विश्वनाथ जी के दर्शन के लिए काशी जा रहा हूँ। आज कार्तिक में बहुत पुण्य देने वाली यात्रा है। (१०९)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मार्गशीर्ष कृष्ण प्रति पदा तिथि के दिन कार्तिक मास व्रत समापन करके ब्राह्मणों को भोजन करते है। ये

" मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष प्रारम्भ "

मार्गशीर्ष कृष्ण प्रतिपदा तिथी के दिन-

मार्गशीर्ष कृष्ण द्वितिया तिथि के

दिन विश्वनाथ जी स्वयं सनत्कुमार

संहिता में कहते है, मैं इस दिन

तन्मया तव रक्षार्थं भूत विद्रावणं परम्।

यावत्प्रसन्नं पुरतस्ततश्चाहमिहागतः।।

।।१०८।।

काशीमिदानीं यास्यामि विश्वेश्वर विलोकने

यद्य यात्राऽस्ति महती कार्तिक्यां वहुपुण्य

दा।।१०९।। [काशी खण्ड अध्याये २१]

अर्थ – मैं प्रसन्न होकर तुम्हारी रक्षा के लिए, और भूत आदि दुष्टों को

का नाश करने के लिए यहाँ आया हूँ।।१०८।।

अब मैं भगवान् विश्वनाथजी के दर्शन के लिए काशी जा

रहा हूँ। आज कार्तिक में बहुत पुण्य देने वाली यात्रा

है।(१०९)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मार्गशीर्ष कृष्ण प्रतिपदा तिथि
के दिन कार्तिक मास व्रत समापन
करके ब्राह्मणों को भोजन करते है।

"मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष प्रारम्भ"

→ मार्गशीर्ष कृष्ण प्रतिपदा तिथी के दिन-
मार्गशीर्ष कृष्ण द्वितिया तिथि के
दिन विश्वनाथ जी स्वयं सनतकुमार
संहिता में कहते है, मैं इस दिन
चतुर्मासा करने के पश्चात पञ्च
कोसी यात्रा जाता हूँ। विशालाक्षी
और अपने वीरभद्र आदि भक्तों
के साथ, पञ्चक्रोशी यात्रा करता हूँ।
कहते है।

मार्गशीर्ष कृष्ण द्वितीया तिथि के दिन
प्रातः पञ्चक्रोशी प्रदक्षिणा वार्षिक
दर्शन, पूजन यात्रा। नोट विदेशों से, भारत
के कोने-कोने और काशी वासी
ब्रह्मचारी
गृहस्थ-वानप्रस्थ-संन्यासी
काशी में चतुर्मासा करते है,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चतुर्मासा ~~शास्त्र विधि~~ से करते हैं। प्रति
दिन गङ्गा स्नान संध्या देव, ऋषि
पितर तर्पण पञ्च महा ~~यज्ञ~~ यज्ञ
बलुवस्व आदि नित्य शिव पूजा
यथा शक्ति प्रति दिन शिव पूजा के
पश्चात् (अन्न, वस्त्र, जल, एवं औषदी
~~और~~ दुध, ऋतुफल ~~चिनी आदि~~ मिष्ठान
इत्यादि ~~दान~~ जिस के पास जो भी दान
करनी की शक्ति हो वह करें। ~~दान के~~
~~पहले या बाद में जिसको जो सुविधा~~
~~हो दान करनी चाहिए~~। पञ्चाक्षरी महा
मन्त्र गुरु द्वारा प्राप्त किया हुआ
सिद्ध मन्त्र का जप अनुष्ठान करें।
उपनिषद आदि का पाठ करें।
निरन्तर शिव-शिव महामन्त्र को
जप करने के अभ्यास करें। बलुवस्व
करने के पश्चात गौग्रास निकाल कर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्रीगीता

वेदव्यास जी श्रीमद् भागवत में लिखते है मार्गशीर्ष - हेमन्त ऋतु परारम्भ से शंक्रान्ती के दिन से कात्यायनी व्रत परारम्भ करनी चाहिए। इसी दिन गोपियों ने पती की प्राप्ती के लिये कात्यायनी व्रत की थी अतः कन्याओं को उत्तम पति प्राप्त करने के लिये यह व्रत करनी चाहिए।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नीभी से) सन्त महात्माओं को भोजन
कराकर
मध्याह्न संध्या करने के पश्चात् एक
बजे भोजन करें। तीन बजे से काशी
महात्म्य काशी मोक्ष निर्णय काशी दर्शन, तथा काशी
रहस्य काशीखण्ड का श्रवण करना चाहिए।
काशी पञ्च कोशी यात्रा का प्रमाण
काशी रहस्य के दशम अध्याय के
एक श्लोक से है। काशी पञ्चकोशी
यात्रा जन्म जन्मान्तर के पाप, रोग को
नष्ट करने के लिये, और संकट
विघ्न को दूर करने के लिए पञ्चकोशी
यात्रा अँवकाश लेकर प्रयत्न पूर्वक
श्रद्धा भक्ति के साथ यात्रा करनी
चाहिए। मार्गशीर्ष द्वितीया के दिन
आज भी लगभग एक हजार
यात्री पञ्च कोशी यात्रा करते है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मार्ग शीर्ष कृष्ण पक्ष त्रितिया

तिथी के दिन शीव पुराण में
शंकर जी कहते है
अट्टहास से स्वर दर्शन वार्षिक

यात्रा। इन के दर्शन करने के

वाले व्यक्ति को काशी से बाहार

जाने के इच्छा ही अपन्न नहीं होती।
अट्टहासे स्वराय नमः। मन्दिर नम्बर सी के०
मुहल्ला गढवासी टोला।

मार्ग शीर्ष कृष्ण चतुर्थी

तिथि के दिन २६ ~~२६~~ छब्बीस

गणेश दर्शन पूजन वार्षिक यात्रा

करने वाले यात्रियों को सद्बुद्धि
विद्या
एवं घर में स्थिर लक्ष्मी की

प्राप्ती होती है।

मार्ग शीर्ष कृष्ण पञ्चमी तिथि

के दिन पञ्च परमेश्वर दर्शन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पूजन वार्षिक यात्रा इनके

दर्शन करने से शिव, शक्ति

विष्णु, बिष्णु गणेश सूर्य

प्रसन्न होते है पद्म पुराण
के आज्ञा ~~अनुसार~~ से

~~में लिखा है~~। मार्गशीर्ष कृष्ण
पक्ष षष्टी तिथि के दिन

वामन पुराण में लिखा

है कि षडानन दर्शन

वार्षिक यात्रा षडानन के

दर्शन पूजन करने वाले व्यक्ति के

प्रकार के विकार नष्ट

होते है।

षडानने कार्तिकेस्वरायनमः मन्दिर

नम्बर डी० ३६/११ में है मुहल्ला अगस्त

कुण्डा कार्तिके स्वामी की मूर्ति
पश्चिमाभी मुख है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मार्गशीर्ष कृष्ण षष्ठी या सप्तमी तिथि के

(उस दिन महायोग है काशी खण्ड में लिखा है एक लाख सूर्य ग्रहण में स्नान करने का फल मिलता है।)

दिन जब रविवार हो उसी दिन लोलार्क

सूर्य तीर्थ लोलार्क कुण्ड में स्नान करके लोलां-

र्क सूर्य, लोलार्केश्वर दर्शन, पूजन वार्षिक

यात्रा करें।

लोलार्केश्वरायनमः [मन्दिर, नम्बर

बी० . मुहल्ला भदैनी]

(इसी दिन बारह १२ सूर्य दर्शन यात्रा)

वेद व्यासजी काशी खण्ड में लिखते है,

इसी दिन १२ बारह सूर्य दर्शन यात्रा

करनेवाले नर, नारियों को चर्म रोग,

नेत्र (आंख) सम्बन्धी सब रोग नष्ट

होते है, इतना ही नही भविष्य में रोग

नही लगेगा। ~~कहते है~~।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

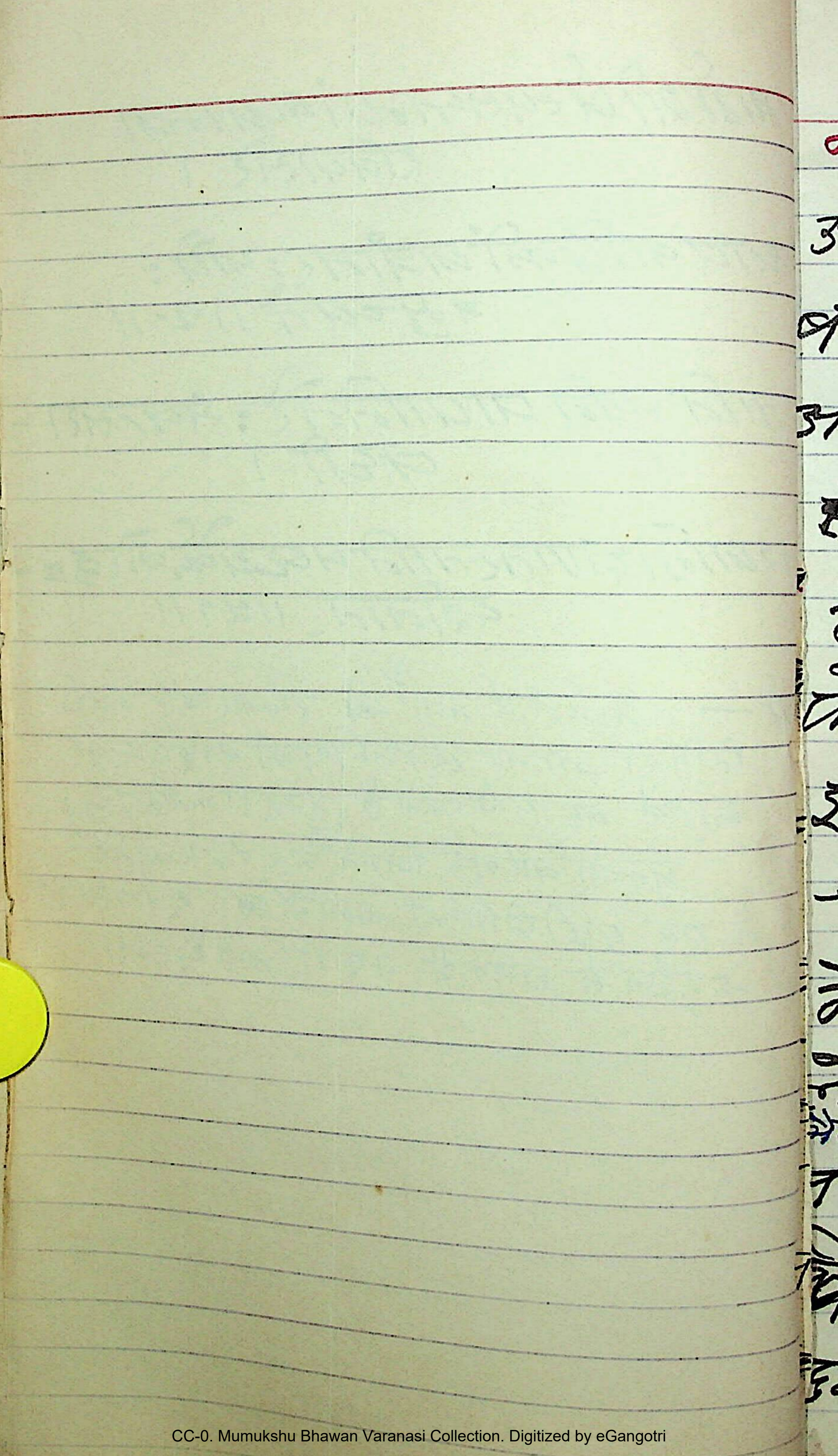
मार्गशीर्षस्यसप्तम्यांभास्वा रविवासरे ।
विधाय वार्षिकीं यात्रां नरः पापैः प्रमुच्यते ॥२०॥

कृतानि यानि पापानि नरैः संवत्सरावधी ।
नश्यन्ति क्षणतस्तानि षष्ठ्यर्के गोऽ दर्शनात् ॥२१॥

अर्थ — मार्गशीर्ष मास में रविवार की सप्तमी तिथिको जो नर लोलार्क की वार्षिक यात्रा करते हैं वह सभी पापों से मुक्त हो जाता है ।२०।

मनुष्यों से वर्षभर में जितने भी पाप किये जाते हैं वे सब षष्ठी तिथि को लोलार्क भगवान सूर्यभगवान के दर्शन से क्षणभर में नष्ट हो जाते हैं ।२१।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मार्गशीर्ष कृष्ण भैरवा

अष्टमी तिथि के दिन मंगल बार हो उस दिन मँगल योग माना जाता है। और मार्गशीर्ष कृष्ण संक्रान्ती. मंगल बार के दिन भैरवाअष्मी हो तो महा योग माना जाता है।
इस महा योग के दिन दुर्गा जी - ६ धर्मेश्वर एवं भैरवों का दर्शन अवश्य करना चाहिए। इस
भैरवाष्टमी के दिन मंगल योग के दिन तथा
महा योग के दिन दुर्गा जी में कीर्तन दुर्गा सप्त सती दुर्गा सहस्त्र नाम तथा दुर्गा चालिसा आदि पाठ करते हुए

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रात्री मे जागरण करना चाहिये

भैरवाष्टमी के दिन धर्मेश्वर

के तीर्थ धर्म कूप मे स्नान करके

धर्मेश्वर दर्शन, पूजन प्रयत्न पूर्वक

करें। भैरवाष्टमी के दिन रात्री

में चार पूजा करते हुए रात्री में

जागरण करने वाले व्यक्ति अधर्मी

होता हुआ भी धर्मात्मा होता है। इतना

जो द्विज धर्मेश्वर में बैठकर ब्रह्म गायत्री का जप करने से व्यक्ति को कोटि सन्ध्या से द्विगुणा जप का फल मिल जाता है और मनोसिद्धि होती है।

धर्म राज जी ने धर्मेश्वर को स्थापित

करके वरदान दिया है (काशीखण्ड देखीये)

भैरवाष्टमी के दिन कालभैरव वार प्रातः ६ बजे से रात्री

१२ बारह बजे लग-भग एक लाख

दर्शनार्थी दर्शन करते है। रात्री के

बारह बजे काल भैरव की अन्तिम

आरती होती है। रात्री मे (सभी भैरवों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के (मन्दिरों में जागरण करना चाहिए)
रात्री में काल भैरव में जागरण होता है
इस दिन इनके दर्शन करने से भविष्य
में आने वाले शंकट दूर होजाते है।
तन्त्र शास्त्र के विद्वान काल भैरव
(और बटुक भैरव) के दर्शन करने भारत
के कोने कोने से आते है तथा काल
भैरव जी के मन्दिर के पास में रहकर
मन्त्र का जप करते है काल भैरव जी के
आस-
पास जप करने वाले व्यक्ति को
काशी खण्ड में वेद
व्यास जी लिखते है छः मैहीने मे मन्त्रकी
सिद्धी होती है। (नोट काशी में क्षेत्र सन्या
स शास्त्र विधान से लेकर काशीवास
करने वाले नर नारियों को भैरवी यातना
नहीं होती है स्कन्द पुराण में तो यहाँ तक कहाँ
है की केदार खण्ड में रहने को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कोई आवश्यकता नही है। अस्सी और वरणा के मध्य के भाग में क्षेत्र संन्यासियो को रहना चाहिये।
भैरवाष्टमी के दिन अष्ट भैरव यात्रिक यात्रा अँधकार लेकर प्रस्थान करके अष्ट भैरव यात्रा करनी चाहिए। भैरव यात्रा करने वाले नर नारियों के संकट, कष्ट, विघ्न और रोग नष्ट होते है। प्रत्येक भैरव मन्दिर में उत्सव मनाते है सजावट करते है, प्रत्येक मन्दिर में दर्शन करने वाले का ताता लगा रहता है तथा रात्री में जागरण करते है, ।

हमारे काशी दर्शन यात्रा मण्डली के महामन्त्री बैजनाथ त्रिपाठी जी इस दिन अष्टभैरव, ग्यार रुद्रभैरव यात्रा दोनो को एक साथ यात्रा करते कराते है।

यह दोनो यात्रा हमारे मण्डली के सचिव शिवशंकर चौवे कमिस्नर साहब के अनुमति से प्रारम्भ हुई। भैरवों की पूजा वैदिक, पौराणिक, एवं तान्त्रिक विदान से पूजा होती है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

काल भैरव को बेल्वपत्र, गहुत,
फूल, वस्त्र, फल, मिस्ठान्न
और बरा (~~चिमि~~ कावना हुआ
चिनि कावना हुआ
घोबड़ा), द्रव्य एव भस्म,
रुद्राक्ष का माला, त्रिशुल,
मीठा दुध, हलुवा
इत्यादि चढता है। भैरव
के मान्दिर में हलुवा, दुध ~~भैरव~~
वेदव्यास जी लिखते हैं भैरव —
को भोग लगाकर साधु ब्राह्मणों को
जल पान कराकर के वस्त्र दक्षीणा
देने से रोग, कष्ट दूर होते है।

ब्रह्मवैवर्त पुराण के काशी रहस्य में
लिखा है कि पवित्रता से भात
पकाकर देसी घी का धारा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चूता हुआ काल भैरव को अर्प
ण करके साधु महात्माओं को और
ब्राह्मणों को भोजन कराने से
भैरव प्रसन्न होते है।

(यह भैरव का सिद्धपीठ है।)
भैरव प्रसन्न होने से काशीवास
में किसी प्रकार का विघ्न नही
आता।

→ . . . . .

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लिखनाहै

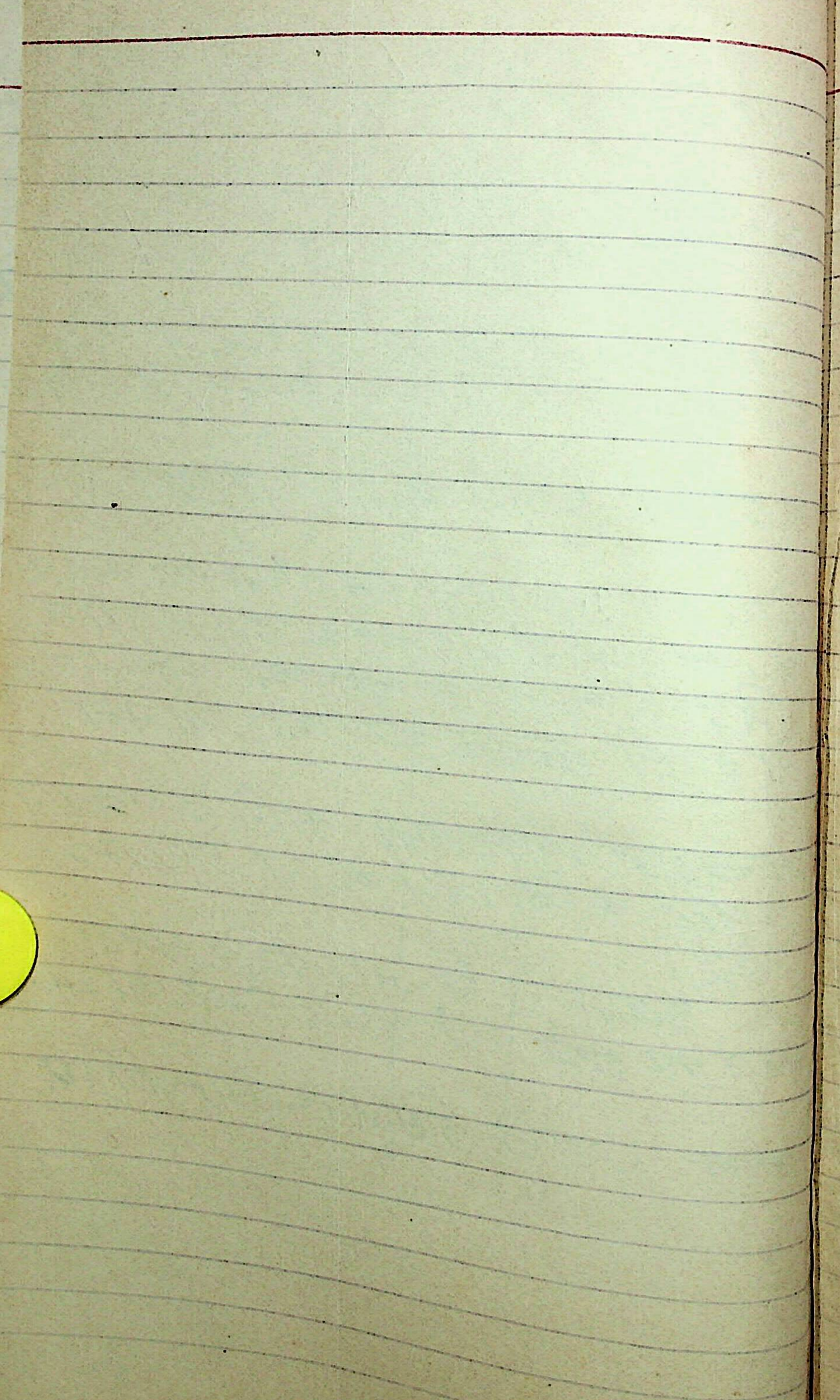
काल भैरव सिद्ध पीठ में आते थे। काल भैरव के मन्दिर के आस पास कमरा किराये में लेकर रहते थे। प्रातः 3 बजे उठ कर गङ्गा जी में काल-कूप में स्नान करके नित्य कर्म से निवृत होकर काल भैरव के दर्शन. पूजन करने के पश्चात.

धोये हुए शुद्ध वस्त्र पहिन कर रुद्राक्ष का एवं गनोई की माला पहिन कर त्रिपुण्ड मस्तक में लगा कर और ललाट में लाल चन्दन लगा कर. मार्जन.

आचमन. प्राणायाम करने के पश्चात. ध्यान करके जप करना प्रारम्भ करें।

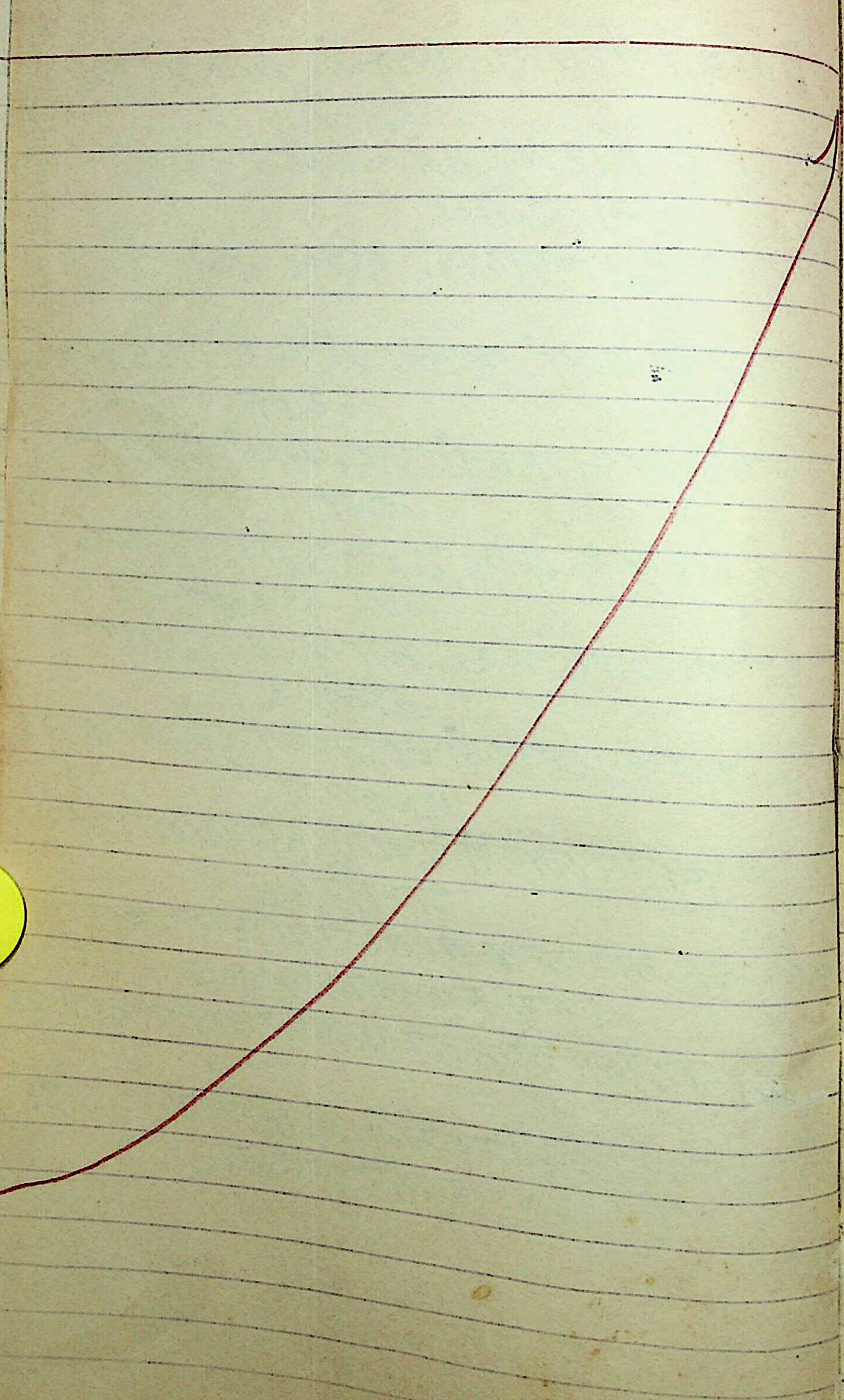
ध्यान रहे कि जप करते समय मन्त्र का अर्थ एवं अपने लक्ष्य का ध्यान रखते हुए जप करना चाहिये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मार्गशीर्षेऽसिताष्टम्यां कालभैरव सन्निधौ।
नरो मार्गा सिताष्टम्यां वार्षिकं विघ्न मुत्सृजेत्॥
अष्टम्याञ्च चतुर्दश्यां रविभूमिजवासरे।
यात्राञ्च भैरवीं कृत्वा कृतैः पापैः प्रमुच्यते॥१४८॥
कालभैरव भक्तानां सदा काशी निवासिनाम्।
विघ्नं यः कुरुते मूढः स दुर्गति मवाप्नुयात्॥१४~~८~~॥
तीर्थे कालोदके स्नात्वा कृत्वा तर्पण मत्वरः।
विलोक्य कालराजं च निरयादुद्धरेत्पितॄन्॥१४९॥
कृत्वा च विविधां पूजां महासम्भार विस्तरैः।
उपोष्य जागरन्कुर्वन्महापापैः प्रमुच्यते।
~~[काशी खण्ड अध्याय ३१]~~
अष्टौ प्रदक्षिणीकृत्य प्रत्यहं पाप भक्षणम्।
नरो न पापैर्लिप्येत मनोवाक्काय सम्भवैः
[॥१५१॥ काशी खण्ड अ॰ ३१]
अर्थ-



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अर्थ — अगहन कृष्ण अष्टमी को श्री कालभैरव जी के पास में वर्ष वर्षभर के किए गये पापों को छोड़े।

रविवार और मंगलवार को तथा अष्टमी और चतुर्दशी को श्री कालभैरव जी की यात्रा करके सभी पापों से मुक्त होना चाहिये। १४६।

सदा काशी में रहने वाले और कालभैरव के भक्तों को जो छिद्रका कष्ट देता है वह दुर्गति को पाता है। १४८।

कालोदक तीर्थ में स्नान करके और बिना जल्दीबाजी से जो तर्पण करता है, इसके पितृगण वह अपने पितृगण को नरक से उद्धार कर देता है। १४९।

फूल पूजा की सामग्री के साथ विस्तार से पूजा करके जो रात्रिजागरण करता है वह सभी पापों से मुक्त हो जाता है।

जो आठ परिक्रमा करता है, उसके सभी पाप भक्षित हो जाते हैं और उस व्यक्ति को कायिक वाचिक तथा मानसिक कोई भी पाप पुनः नहीं लगते। (काशीखण्ड अ. ३१ श्लो. १५१)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यत्किञ्चिद शुभं कर्म कृतं मानुष-
बुद्धितः ।
तत्सर्वं विलयं याति काल भैरव
दर्शनात् ॥१४४॥
अनेक जन्म नियुतै यत् कृतं जन्तु
भिस्त्वघम् । (+)
तत् सर्वं विलयत्याशु काल भैरव दर्शनात् ।
॥१४५॥
तस्मिन्नाम र्दके पीठे जप्त्वा स्वाभीष्ट देव-
ताम् ।
षण्मासं सिद्धिमाप्नोति साधको भैरवा-
ज्ञया ॥१५२॥
पापभक्षण मासाद्य कृत्वा पाप शतान्यपि ।

कुतो बिभेति पापेभ्यः काल भैरव
सेवकः ॥१३६॥
कर्कोट्कों काल कलयति सदा काशी निवा-
सिनाम् ।
अतः ख्याति पराम्प्राप्तः काल भैरव
सञ्ज्ञिताम् ॥१४१॥

अर्थ मनुष्य की बुद्धि से किये गये सभी पाप श्री कालभैरव जी-
के दर्शन से नष्ट हो जाते हैं १४४।
प्राणियों के द्वारा करोड़ों करोड़ों जन्मों में किये गये पाप श्री कालभैरव जी-
के दर्शन से नष्ट हो जाते हैं। १४५
उस नामर्दक पीठ पर बैठकर जो अपने अभीष्ट देव के मंत्र-
का जप करता है उसको श्री कालभैरव जी आज्ञा से छः
महीनों में सिद्धि हो जाती है। १५२ →

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कालभैरव का भक्त सैकड़ों पाप करके भी
पाप भक्षक के पास पहुँचने के कारण किसी से
डरता कभी नहीं है। ४२९३८।

कलियुग
१काशीवासियों के कालको ~~कलियुग~~ निगल
जाता है इसीलिए कालभैरव जी का यह नाम
प्रसिद्ध हुआ। १४९

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष नवमी
तिथि के दिन दुर्वासेश्वर दर्शन
वार्षिक
यात्रा। दुर्वासेश्वराय नमः
[मन्दिर, नम्बर मुहल्ला सङ्कधारा
तीर्थ
द्वारिके श्वर तीर्थ कुण्ड से सटे
हुए पश्चिम बगल मैं शिवमन्दिर
में है] मार्गशीर्ष कृष्ण एका
दशी तिथि के दिन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विष्णु दर्शन-पूजन वार्षिक

यात्रा। विष्णवेनमः [मन्दिर

नम्बर मुहल्ला राजघर ब्रह्मा
घाट के उत्तर बगल के हनुमान

मन्दिर में है।] मार्गशीर्ष कृष्ण

त्रियोदशी तिथि के दिन १२ (बारह ज्योति

लिङ्ग) काशी के १२ बारह ज्योति लिङ्ग

यात्रा अवकाश लेकर श्रद्धा भक्ति

से युक्त होकर करें।
मार्गशीर्ष

कृष्ण चतुर्दशी तिथि के दिन कहोले

श्वर वार्षिक दर्शन पूजन यात्रा
करें।

कहोले श्वरायनमः [मन्दिर नम्बर

. . . मुहल्ला कामाख्या]

मार्गशीर्ष कृष्ण अमावस्या तिथि

के दिन गङ्गा आदि तीर्थों में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्नान संध्या शिव पूजा करने के
पश्चात् अन्न, वस्त्र गरम कम्बल
चादर, सुईटर, रजाई, गद्दा।
मेथी को लाड्डू
आदि दान करनी चाहिये।

कातिक मार्गशीर्ष अमावस्या तिथि
और मंगल वार ~~आता है~~
पड़ता हो उस दिन महा योग आता
है, उस मार्गशीर्ष अमावस्या मंगल
वार महा योग के दिन गङ्गा जी में ~~स्नान~~
स्नान करने वाले नर नारियों को
कोटि सूर्य ग्रहण में स्नान करने ~~का~~
का फल प्राप्त होता है। अवकाश लेकर
प्रयत्न पूर्वक गङ्गा स्नान करने के
लिये जाना चाहिये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

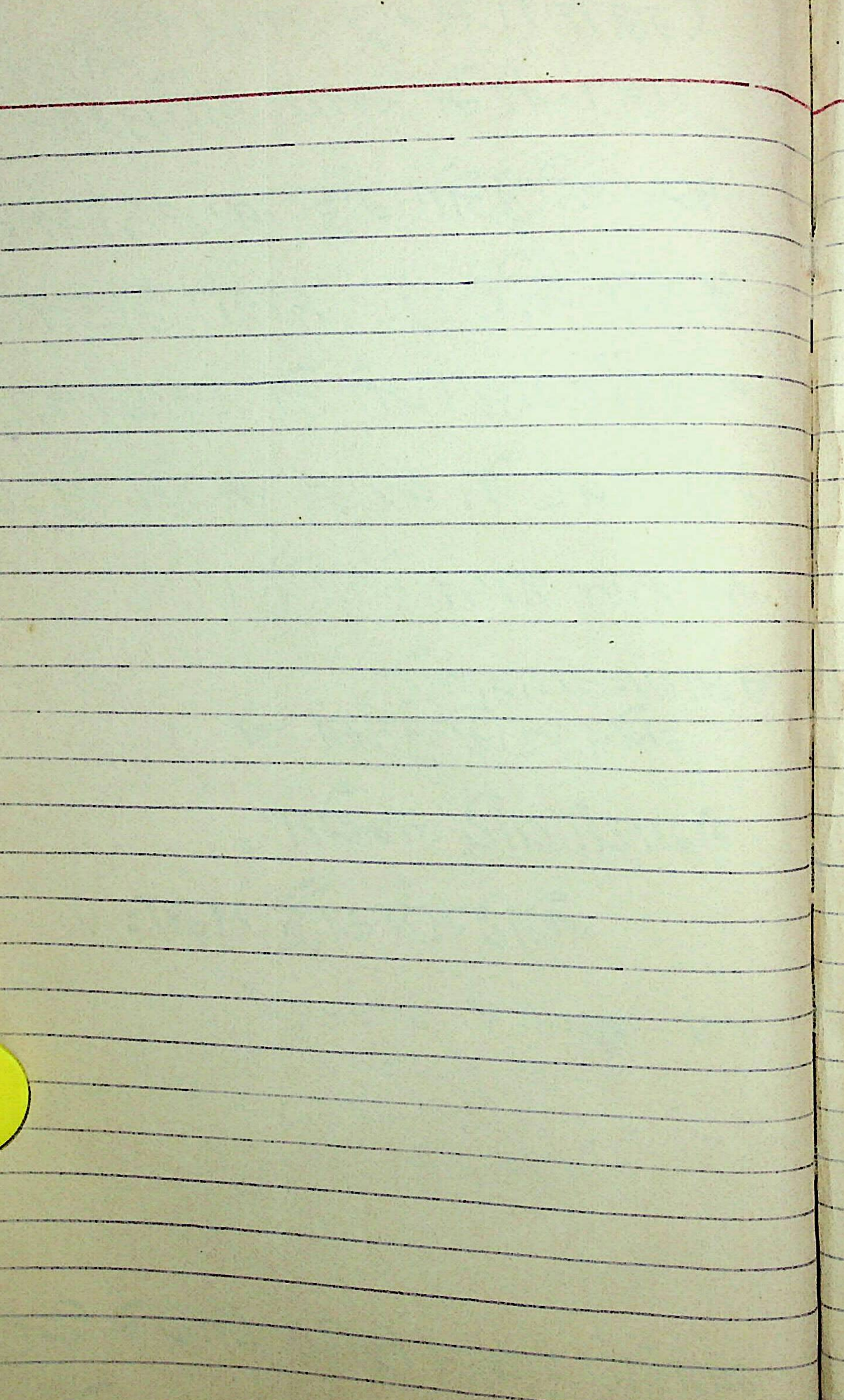
(गङ्गोतरी से गङ्गा सागर तक कहीं भी गङ्गा जी में स्नान करके शिव पूजा करें और गङ्गेश्वर का दर्शन पूजन करें।) काशी में उत्तर वाहिनी गङ्गा जी में स्नान कर गङ्गेश्वर के दर्शन करने से अधिक फल प्राप्त होता है।

अमावास्या यदा वारो
भवेद् भूमि सुतस्य च।
गंगायां यदि लभ्येत,
कोटि सूर्यग्रहे समाः॥

अर्थ - यदि मंगलवार को अमावस्या तिथि पड़ जाय तो उस दिन गंगाजी में स्नान करने से एक करोड़ सूर्यग्रहण के समान फल मिलता है।

मार्गशीर्ष शुक्ल द्वितीया तिथि के दिन प्रातः चन्द्रेश्वर दर्शन यात्रा करें।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सायं चन्द्रमा जी का पश्चिम में चन्द्र दर्शन करें। और रुद्र शिवजी का पूजा करके व्रत रहे। "अन्नपूर्णा व्रत परारम्भ"।

मार्गशीर्ष शुक्ल चतुर्थी तिथि के दिन सप्तावर्ण विनायक दर्शन पूजन वार्षिक यात्रा करें।

सप्तावर्ण विनायकाय नमः [मन्दिर - नम्बर सी.के.33/36 में है मुहल्ला ब्रह्मनाल - . . . .]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मार्गशीर्ष शुक्ल षष्ठि तिथि के दिन
मालतीश्वर वार्षिक दर्शन पूजन
यात्रा करें।

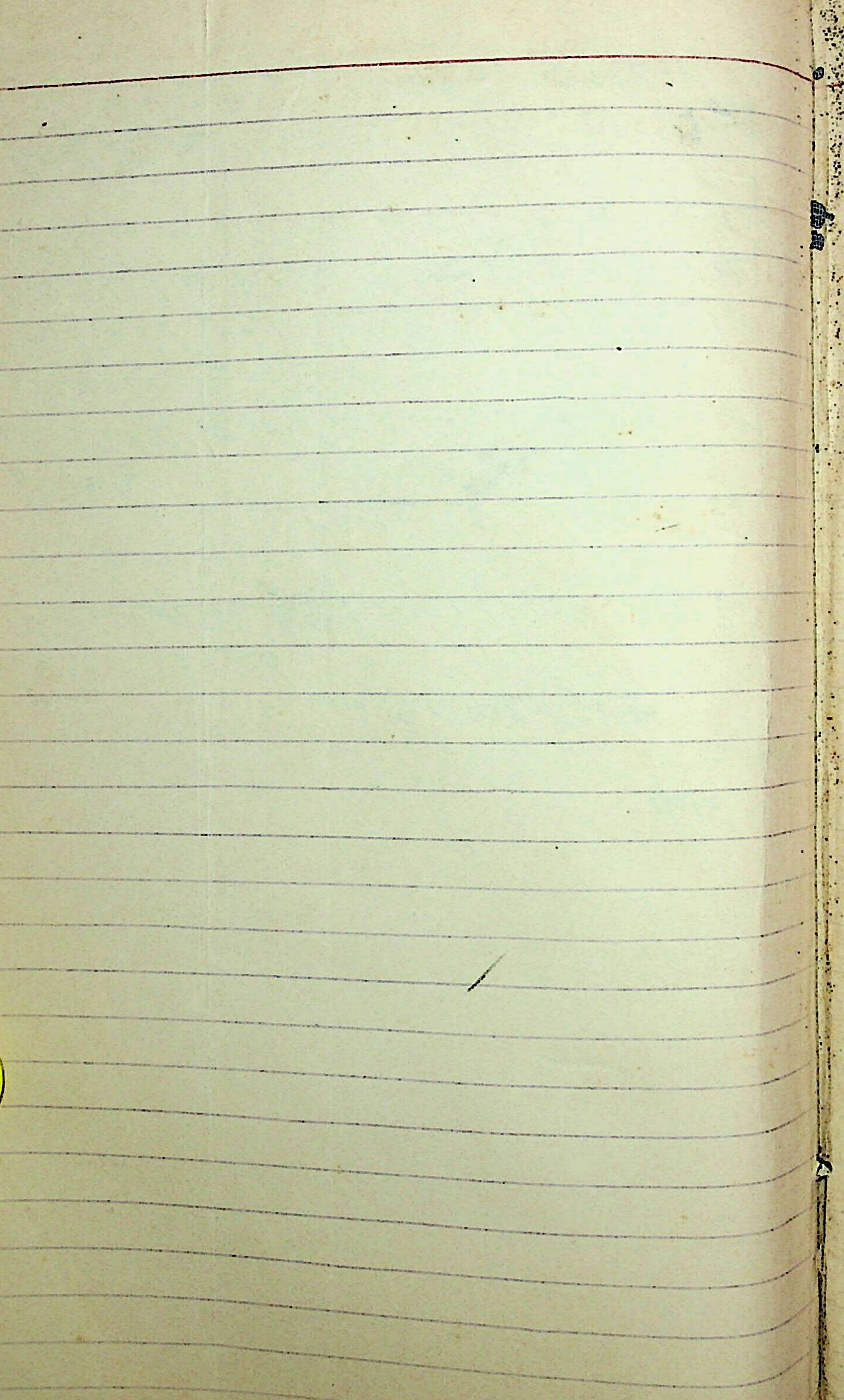
मालतीश्वरायनमः [मन्दिर नम्बर

में है महल्ला दारानगर मृत्युञ्जय से सटे हुए उत्तर बगल में है]

दक्षिणे क्रोध से च किञ्चित्स्यान्मालती
श्वरम्। १३४।
(काशीखण्ड अ० ६७]

अर्ध-

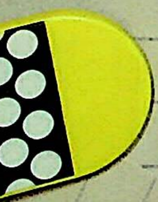
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बाहर से काशी में आये हुए काशी
में रहनेवाले मनुष्यों से
निवेदन करते
हैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मार्गशीर्ष शुक्ल षष्ठी तिथि के दिन स्कन्द जयन्ती है। स्कन्देश्वर दर्शन यात्रा करें। मार्ग शुक्ल अष्टमी तिथि के दिन तारा देवी दर्शन वार्षिक यात्रा करें तारा देव्यै नमः [मन्दिर नम्बर सी० के० ... मे है, मुहल्ला नेपाली खपड़ा]

मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी तिथि के दिन कालमाधव विष्णु वार्षिक दर्शन पूजन यात्रा प्रयत्न पूर्वक करनी चाहिये। कालमाधव के दर्शन करने वाले नर, नारियों को विष्णु भगवान और राम, कृष्ण की अनन्य भक्ति प्राप्त होता है। कालमाधव काल भैरव के पापभक्षेश्वर के दक्षिण बगल में है सत्यानेश्वर के मन्दिर में पश्चिमा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

~~मुख्य है~~

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुरव है
कालमाधव विष्णु के नमः [मन्दिर

नम्बर मैं है मुहल्ला चौरवम्ब
सही

कालमाधवनामाहं कालभैरव स
सन्निधौ ।
कलिः कालेनकलयेन्मद्भक्तमिति
निश्चितम् ॥१८६॥
मार्गशीर्षस्य शुक्लायामेकादश्या-
मुपोषितः ।
तत्र जागरणं कृत्वा यमंनालोकयेत्
क्वचित् ॥१८७॥

[काशी खण्ड अध्याय ६१]

अर्थ-
काल भैरव जी के पास में कालमाधव जी मैं हूँ।
मेरे कलियुग में भक्तों के काल का हिसाब नहीं
करता। १८६ (यह श्लोक कुछ अशुद्ध लगता है)
अगहन मास की शुक्ला एकादशी को उपवास
करके जो जागरण करते हैं, उनको यमराज नहीं
देखते। १८७।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी तिथी
के दिन प्रातः काल वरुणा गङ्गा
संगम आदि केशव विष्णुवेनमः
दर्शन वार्षिक यात्रा। नन्दि
उप—
पुराण में आदि केशव विष्णु
जी को प्रयत्न पूर्वक दर्शन यात्रा
करना चाहिए लिखा है।

आदि केशव विष्णुवेनमः [मं-
मन्दिर नम्बर नम्बर-
ए० ३७/५१ में है मोहल्ला आदि केशव, बसन्त
कालेज]

मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी तिथी
के दिन से पूर्णिमा तक पहले
आदि केशव में दर्शन मेला लगता था
आज भी दर्शन करते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

त्रयोदशी
मार्गशीर्ष शुक्ल त्रियोदशी
तिथी के दिन सन्तानेश्वर दर्शन
पूजन वार्षिक यात्रा करें। (नोट पुत्र, पौत्र
परपौत्र धर्म निष्ठ चारित्रवान वि-
विद्वान प्राप्त करने के लिये सोम
प्रदोश के दिन सन्तानेश्वर का दर्शन पूजन
करनी चाहिये।

मार्गशीर्ष शुक्ल चतुर्दशी
तिथी के दिन प्रातः ~~नित्य कर्म से~~
~~निवृत्त~~ होकर पिशाच मोचन
तीर्थ कुण्ड में ~~स्नान (भादो कार्तिक~~
~~स्नान करके जाना)~~
स्नान करके कपर्दीश्वर दर्शन
वार्षिक यात्रा। श्रद्धा भक्ति
से युक्त होकर प्रयत्न पूर्वक
यात्रा करनी चाहिए। पिशाच
मोचन तीर्थ में स्नान, पितृ तर्पण
[कोई-कोई यात्री पिण्ड दान भी करते हैं]
करके पिशाचेश्वर विश पंचास्य
विनायक से सटे हुए उत्तर बगल में बड़े

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बडे शिव मन्दिर में पिशाचेश्वर विराजमान हैं।

पिशाच विनायक के सटे हुए बगल में पिशाच की मूर्ती है। पिशाचेश्वर गण हैं, पिशाच भैरव हैं। पिचास विनायक के दक्षिण सटे हुए शिवालय में कपर्दि विनायक हैं। कपर्दि विनायक से सटे हुये जो शिव लिङ्ग हैं, वही कपर्दीश्वर हैं।

जो नर-नारी पिशाच मोचन तीर्थ में मार्गशीर्ष शुक्ल चतुर्दशी तिथि के दिन स्नान कर कपर्दिश्वर आदि का दर्शन पूजन करते हैं उनके पिता-पितामह आदि जो पाप कर्म के कारण, पिशाच योनि में गये हुए हैं, वह सब मुक्त हो जाते हैं और जो नर-नारी इस स्नान-दर्शन यात्रा को करते हैं उनको पिशाच योनि में नहीं जाना है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जन्म लेना नहीं पड़ता क्योंकि उस के पापों को पिशाच भैरव जी क्षमा करदेते है। और पिशाच मोचन तीर्थ इस दिन स्नान दर्शन यथा शक्ति मिष्ठान्न फल, दूध, आदि का ब्राह्मणों को जलपान कराकर वस्त्र दक्षिणा देनेवाले तथा भोजन शिव योगी (शिव भक्तों) को दिव्य भोजन कराते वालों के एक वर्ष के पापनष्ट होते है।

जो अन्न, वस्त्र, द्रव्य आदि तीर्थों में काशी में दान प्रतिग्रह लिये हुये पापों को क्षमा करदेते है। जो व्यक्ति दान (प्रतिग्रह) लेकर पचीश प्रतिशत दान करदेते है - उन को तो सबदान लिया हुआ सब पाप क्षमा करदेते है। मार्गशीर्ष शुक्ल चतुर्दसी तिथि के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिन —

पिशाच मोचन कार्तिक दर्शन, पूजन यात्रा प्रयत्न पूर्वक अवकाश लेकर परिवार सहित यात्रा करें। और वहाँ कुम्भ दान करने का परम्परा है एक लोटा या घड़ा में पिशाच मोचन का जल भरकर (छानकर) कपड़ा से ढाककर (तेली) चन्दन, पुष्प आदि से रुपया रखकर पूजा करके संकल्प करके ब्राह्मण को दान देते है। एक पात्र में चावल भरकर पूर्ण पात्र दान करते है।

जो नर, नारी काशी खण्डोक्त मन्दिरों का जीर्णोद्धार करके कपर्दिश्वर का दर्शन करते है, उनलोगों के पापों को कपर्दीश्वर क्षमा करदेते है। पिशाच मोचन तीर्थ का वर्णन - स्कन्द पुराण, शिव पुराण, ब्रह्म वैवर्त पुराण, लिङ्ग पुराण, पद्म पुराण, शिवरहस्य इत्यादि ग्रन्थों में वेद व्यास जी स्वयं लिखे हुए है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अद्य शुक्लचतुर्दश्यां मार्गे मासि तन्निधौ ! ।
अत्र स्नानादिकं कार्यं पैशाच्य परिमोचनम् ॥७७॥
इमां सांवत्सरीं यात्रां ये करिष्यन्ति मानवाः ।
तीर्थं प्रति ग्रहात्पापान्निः सरिष्यन्ति ते नराः ॥७८॥
पिशाचमोचने स्नात्वा कपर्दीशं समर्च्य च ।
कृत्वा तत्रान्न दानं च नरो ऽन्यत्रापि निर्भया ॥७९॥

मार्ग शुक्ल चतुर्दश्यां कपर्दीश्वर सन्निधौ।

स्नात्वा ऽन्यत्रापि मरणान्न पैशाच्यमवाप्नुयु ॥८०॥
पिशाच मोचनं तीर्थ मद्यारभ्य समाख्यया।

अन्येषा मपि पैशाच्य मिदं स्नानाद्धरिष्यति ॥८४॥
अस्मिंस्तीर्थे महापुण्ये ये स्नास्यन्तीह मानवाः ~~॥८४॥~~

पिण्डांश्च निर्वपिष्यन्ति सन्ध्या तर्पण पूर्वकम् ॥८२॥
दैवात्पैशाच्य मापन्नास्तेषां पितृ पितामहाः ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तेऽपि पैशाच्यमुत्सृज्य यास्यन्ति
परमां गतिम् ॥७९॥
इत्युक्त्वा दिव्य पुरुषो भूयो नाम -
स्यताम् ।
तपोधनं महाभागो दिव्यां गतिमवाप्त
वान् ॥८१॥
तपोधनोऽपितद् दृष्ट्वा महाश्चर्यं
घटोद्भव ।
कपर्दीश्वर माराध्य काशानिर्वाणं
माप्तवान् ॥८२॥
पिशाचमोचनं तीर्थं तदारभ्य महा
मुने ।
[काशी खण्ड अध्याय ५४]

अर्थ -

आज अगहन मास की शुक्ल चतुर्दशी के दिन पिशाचेश्वर के पास में पैशाच्य (पिशाचयोनि) से छुटकारा पाने के लिए स्नान आदि करना चाहिये ७७।

जो व्यक्ति यहाँ की वार्षिक यात्रा को करेगा वह तीर्थ में दान लेने के पाप छूट जायगा ७८।

पिशाचमोचन तीर्थ में स्नान करके और कपर्दीश्वर को प्रणाम करके जलदान करता है वह सर्वत्र निर्भय रहता है ७९।

अगहन शुक्ल चतुर्दशी को जो व्यक्ति कपर्दीश्वर के पास में स्नान करके यदि काशी से बाहर भी कहीं मरता है तो पिशाच योनि में नहीं जाता ।८०।

आज के दिन से आरम्भ करके वर्षपर्यन्त जो व्यक्ति पिशाचमोचन तीर्थ में स्नान करेंगा वह दूसरों को भी पिशाच योनि से उद्धार करेगा ७४।

इस महापुण्य पिशाचमोचन तीर्थ में जो स्नान करेंगे पिण्डदान करेंगे और संध्या तर्पण करेंगे तो दैववशात् पिशाच योनि में प्राप्त उनके पिता पितामह आदि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पिशाच योनि से मुक्त होकर उत्तमगति को ~~प्र~~
पाओगे। ६५-६६।

ऐसा कहकर वह दिव्य पुरुष ~~देव~~ उस तपोधनको
पुनः प्रणाम करके दिव्य गति प्राप्त किया ७१।

तपोधन (तपस्वी) अगस्त्यजी ने इस महान् आश्चर्य-
को देखकर और कपर्दीश्वर की आराधना करके परम
आनंद मोक्ष को प्राप्त किया ७२।

हे महामुने तभी से यह पिशाचमोचन तीर्थ है।

(काशी खण्ड अध्याय - ५४)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मार्गशीर्ष शुक्ल पूर्णिमा तिथि के दिन
दत्तात्रेयजि का अवतार हुआ था इसी दिन
दत्तात्रेय जी का जयन्ती मनाई जाती है,
दत्तात्रेय जी के सभी मन्दिरों में उत्सव
मनाया जाता है। कोई कोई ही प्रधान
(वेदान)
नहीं, का पाठ होता है, वेदान्त आदि के
संमेलन होते है रुद्री पाठ कीर्तन आदि
कार्य क्रम होते है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

काशी मे चन्द्र ग्रहण माहात्म्य

श्री 'काशी' पुरी, पृथ्वी का मन:-प्रदेश है और 'कुरुक्षेत्र' पृथ्वी का हृदय-प्रदेश है ऐसा पुराकाल से सिद्ध है। चन्द्रपिण्ड विराट् के मन से समुद्भूत है और मनस्वी प्राणियों के मन चन्द्रपिण्ड से अनुस्यूत और अनुप्राणित है। वह चन्द्र-ग्रहण के समय जब चन्द्रपिण्ड से पृथ्वी प्रदेश को मिलने वाले सोमांश का 'केतु' अपर नामक चेतन देवाधिष्ठित भूच्छाया से अवरोध हो जाता है तो उस समय सांसारिक व्यवहार कार्यों में क्षीयमाण मन:शक्ति में मानसिक रोगों की छाप पड़ जाने का पूरा भय होता है। अत: आस्तिक लोग उस समय स्नान-दान, पूजा-पाठ और ईश्वरार्चन करते हुये अपने मानसिक स्तर को स्थिर रखने का प्रयत्न करते हैं। अन्यान्य भू प्रदेशों की तुलना में 'काशी' पुरी का पञ्चकोश परिमित भू-खण्ड पृथ्वी का मनोमय प्रदेश होने के कारण उपर्युक्त कार्यों के लिये सर्वाधिक उपयुक्त है इसी वैज्ञानिक भावना से प्रेरित हो सनातन-धर्मी जनता समय-समय पर चन्द्रग्रहण के समय काशीपुरी में एकत्रित होकर गङ्गास्नान और भगवान श्रीविश्वनाथ के दर्शन से अपने आप को कृतार्थ करती है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वेदोक्त काशी में चन्द्र ग्रहण माहात्म्य

(क) यत्र ब्रह्मा पवमान छन्दस्यां वाच
वदन्, ग्राव्णा सोमे महीयते।
सोमेनानन्दं जनयन्निन्द्रायेन्दो परिस्रव।
(ऋग्वेद-९/११३/६)

अर्थ→(क) जिस काशी क्षेत्र में
जगत स्रष्टा ब्रह्मा ने पवित्र वेदवा
का पाठ किया था और जहाँ ग्र
पाषाण प्रतिमायें भी 'सोमे' उमा-
पूर्णासहित विश्वनाथ के रूप में
नीय हो गयीं। हे चन्द्रदेव! उमा
शङ्कर द्वारा आनन्द प्रदान करता
आ, तू परमैश्वर्य के लिये अपना
मनोमय सोमांश। परिस्रव, चारों
प्रवाहित करे।'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ग्रहण काल में निषिद्ध कर्म :-

ग्रहण काले शयने कृते रोगी

मूत्रे दारिद्र्यं पुरीषे ।

कामि मैथुने ग्राम सूकरो ऽभ्यंगे

कुष्ठी भोजने नरकम् ।।

[धर्मसिन्धु]

अर्थ- ग्रहण में निषिद्ध कर्म इस प्रकार है- ग्रहण लगे हुये समय में भोजन करना सोने से रोग होता है। मूत्र त्याग करने से दरिद्र होता है। मल त्याग करने वाला व्यक्ति जानवर (कामी) के कीड़ा होता है। असभ्य स्त्री प्रसंग करने वाले नर गाँव के शूकर होता है, तैल शरीर में लगाने से कुष्ठ रोग होता है और भोजन करने वाला व्यक्ति नरक में जाता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

~~ग्रहण के समय में सोते हैं … वह रोगी होता है~~

ग्रहण काल में सोने से रोगी, पेशाब करने से दरिद्र
टट्टी जाने से कीड़ा, मैथुन करने से गाँव का सुअर
तेल लगाने से कोढ़ी होता है। भोजन करने से नरक जाता है
(धर्मसिन्धु)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चन्द्रग्रहण-माहात्म्य

सूर्यग्रहे तु नाश्नीयात् पूर्वं याम चतुष्टयम् ।
चन्द्रग्रहे तु यामांस्त्रीन् बालवृद्धातुरैर्विना ॥

[इति माधवीय वृद्धगौतमोक्तेः]

अर्थ — सूर्य ग्रहण में चार प्रहर पूर्व तथा चन्द्रग्रहण मे तीन प्रहर पूर्व बालक वृद्ध आतुर-रोगी को छोड़कर कोई भी भोजन न करें।

सर्वं भूमिसमं दानं सर्वे ब्रह्मसमा द्विजाः ।
सर्वं गङ्गासमं तोयं राहुग्रस्ते दिवाकरे ।

[इति माधवीय वृद्धगौतमोक्तेः]

अर्थ — चन्द्र ग्रहण में गङ्गाजल मिल जाय गङ्गा जी मे स्नान करे तो करोड़ गुना फल प्राप्त होता है। और काशी मे चन्द्रग्रहण में स्नान करने मिलातो अर्बो गुणा फल प्राप्त होता है। सूर्य ग्रहण में गङ्गा जी में स्नान किया जावे तो दशकरोड़ फल अधिक प्राप्त होता है। मनुष्यों को हजार करोड़ गौवों के दान करने से जो फल मिलता है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वही फल चन्द्र-सूर्य ग्रहण में गङ्गा स्नान दान करने मिल जाता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मार्गशीर्ष शुक्ल पूर्णिमा तिथि के दिन शुक्लेश्वर दर्शन पूजन वार्षिक यात्रा करें।

शुक्लेश्वराय नमः [मुहल्ला शुक्लपुर।]

मार्गशीर्ष शुक्ल पूर्णिमा तिथि के दिन

पञ्चगङ्गा से

~~सटा हुआ~~ उत्तर बगल के लाल घाट के ऊपर गौरी शंकर के

मन्दिर में गोपी गोविन्द दर्शन वार्षिक यात्रा करनी चाहिये।

गोपी गोविन्दाय नमः [मन्दिर नम्बर मुहल्ला] में है

गोपीगोविन्दतीर्थे तु गोपीगोविन्द सञ्ज्ञकम्।

मच्चयेन्मां नरो भक्त्या मम मायां न संस्पृशेत् ॥१९॥

[काशीखण्ड अध्याय ६१॥]

अर्थ - गोपीगोविन्द तीर्थ में गोपीगोविन्द नामक मेरी पूजा करता है, उसे मेरी माया छू भी नहीं छूती।

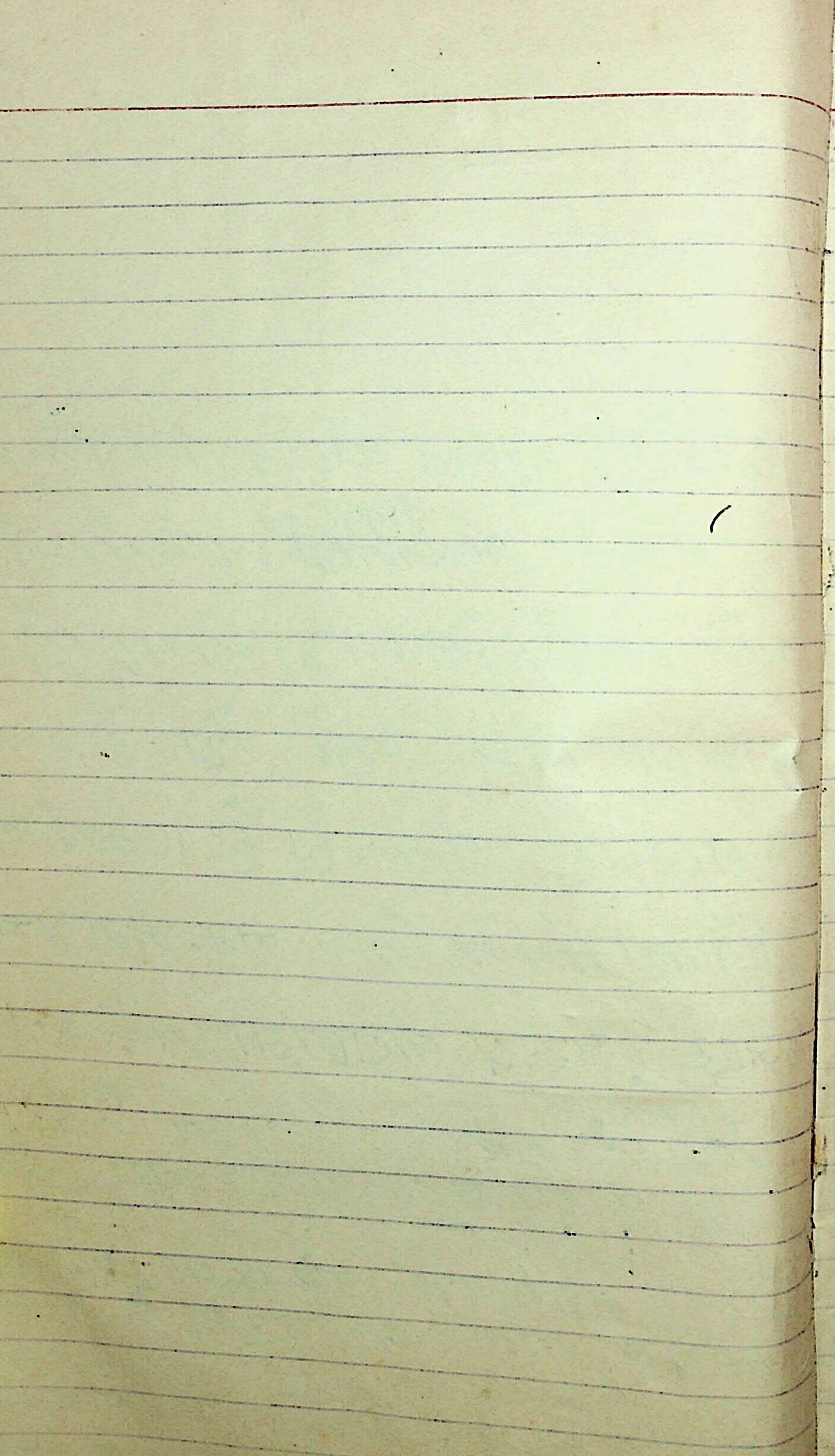
॥१९॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मार्गशीर्ष शुक्ल पूर्णिमा तिथि के दिन
त्रेता युग में (~~विश्वनाथ~~ शंकर) पार्वती जी ने
अपने भक्तों के साथ वाराणसी
प्रदक्षिणा यात्रा किये थे आज भी
यह परम्परा चल रही है। मार्गशीर्ष
पूर्णिमा ~~तिथि~~ के दिन लग-भग पचास
हजार स्त्री पुरुष वाराणसी (बड़ी अन्तर्गृही)
प्रदक्षिणा यात्रा करते है। वाराणसी
यात्रा का प्रमाण काशी रहस्य के ग्यार 11 है
अध्याय के प्रथम श्लोक से 18 श्लोक तक
वाराणसी प्रदक्षिणा यात्रा का वर्णन है।
एक रात्री से तीन रात्री तक विश्राम करने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का विधान है।

"पौषमास परारम्भ"

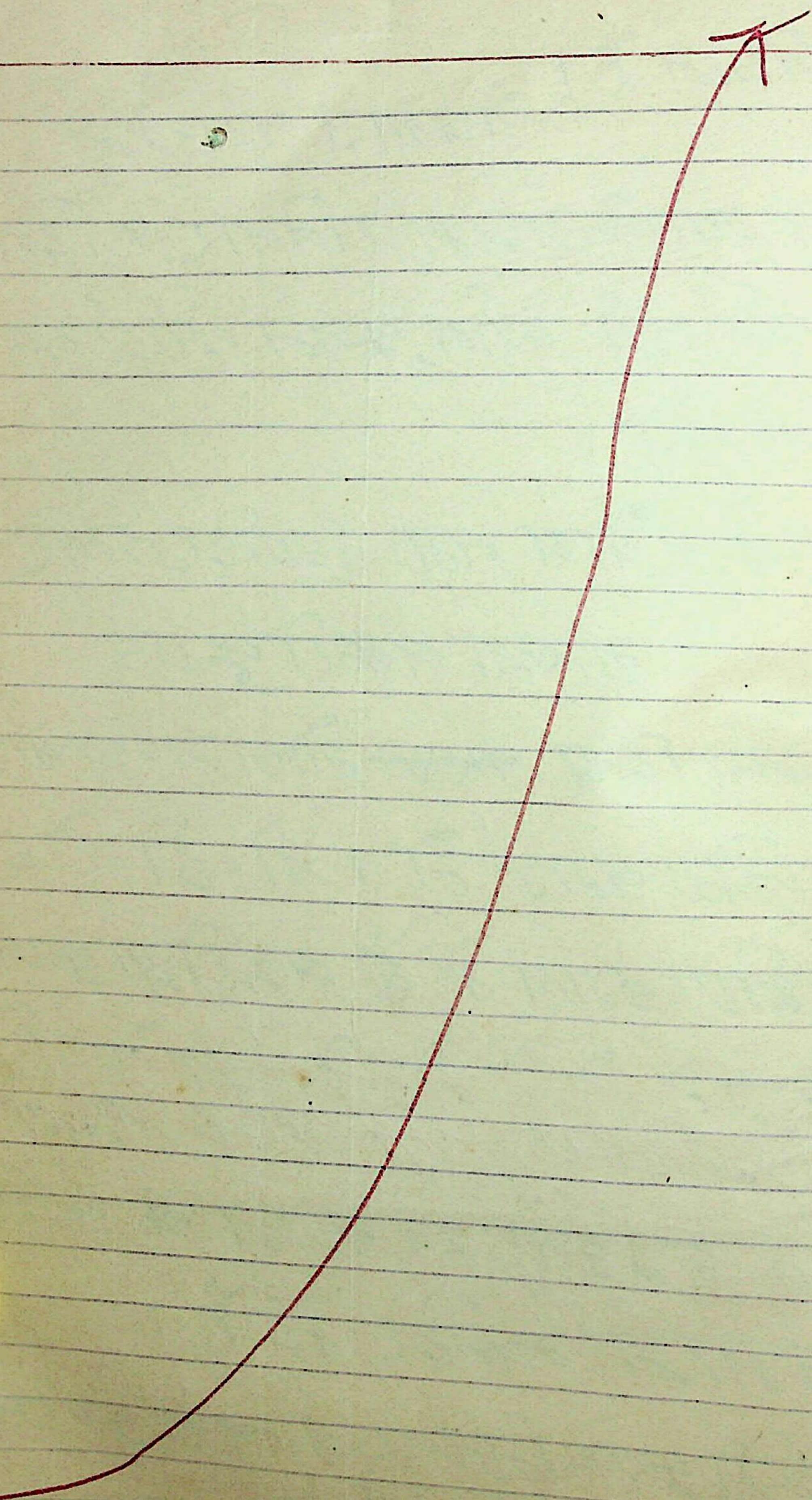
पौरव मासके प्रथम रविवार के दिन उत्तरार्क सूर्य दर्शन, पूजन वार्षिक यात्रा करें।

उत्तरार्क सूर्याय नमः [मन्दिर नम्बर . . . . मुहल्ला बकरी कुण्ड

उत्तरार्कादित्य ~~[illegible]~~ गोल गड्डा चौराहा के पश्चिम बगल में जी० टी० रोड से दक्षिण बगल में बकरीया कुण्ड के पूर्वतट में जोगी बीर के नाम से प्रसिद्ध है. इनका मुस्लीम हिन्दू दोनो दर्शन करते है। दूसरे पूर्व बगल के अरवाडा हनुमान मन्दिर में है।

"वर्करी कुण्डमित्याख्यातं कुण्डस्य जायताम।
एतस्याः प्रतिमा पूज्या भाविस्य यत्र मान वै: ॥५६॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उत्तरार्कस्य देवस्य पुष्ये मासि रवेर्दिने ।
कार्या सांवत्सरी यात्रा नरैः काशी फलेप्सुभिः ॥५६॥
मृडान्याभिहितं सर्वं कृत्वैतद्विश्वगोविभुः ।
विश्वनाथो विवेशाऽथ प्रासादं स्वमताकितः ॥५८॥
[काशी खण्ड अध्याय ४७ ।]

अर्थ - ~~भगवान सूर्य के उत्तरायणमें पौष मासमें रविवारको~~ काशीवास फल चाहने वालों को भगवान सूर्य के उत्तरायणमें पौष मासमें रविवारको वार्षिक यात्रा करनी चाहिये। ५६
भवानी जी के द्वारा कही गयी सभी बातोंको पूरा करके भगवान विश्वनाथ सबकामक अपने ~~महल~~ भवन में प्रवेश कर गये। श्लो. ५८

पौष म० कृष्णा चतुर्दशी तिथि के दिन कृमी कुण्ड में मज्जन कर कूटदन्त विनायक वार्षिक दर्शन पूजन यात्रा करें।
कूटदन्त विनायकाय नमः [मन्दिर नम्बर बी० ३/३३५ में है मुहल्ला रविन्द्रपुरी कालोनी किनाराम बाबा के आश्रम में,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पौष मास कृष्ण अष्टमी
के दिन आनन्द भैरव दर्शन पूजन

वार्षिक यात्रा करनी चाहिए।

पौष कृष्ण अष्टमी तिथि के दिन
भुवनेश्वरी वार्षिक दर्शन यात्रा करें।
भुवनेश्वरी देव्यै नमः [मन्दिर नम्बर सी० के० २/१ में है मुहल्ला पटनी टोला]

पौष कृष्ण नवमी तिथि के दिन प्रथम
सङ्कटा वार्षिक दर्शन यात्रा करें।

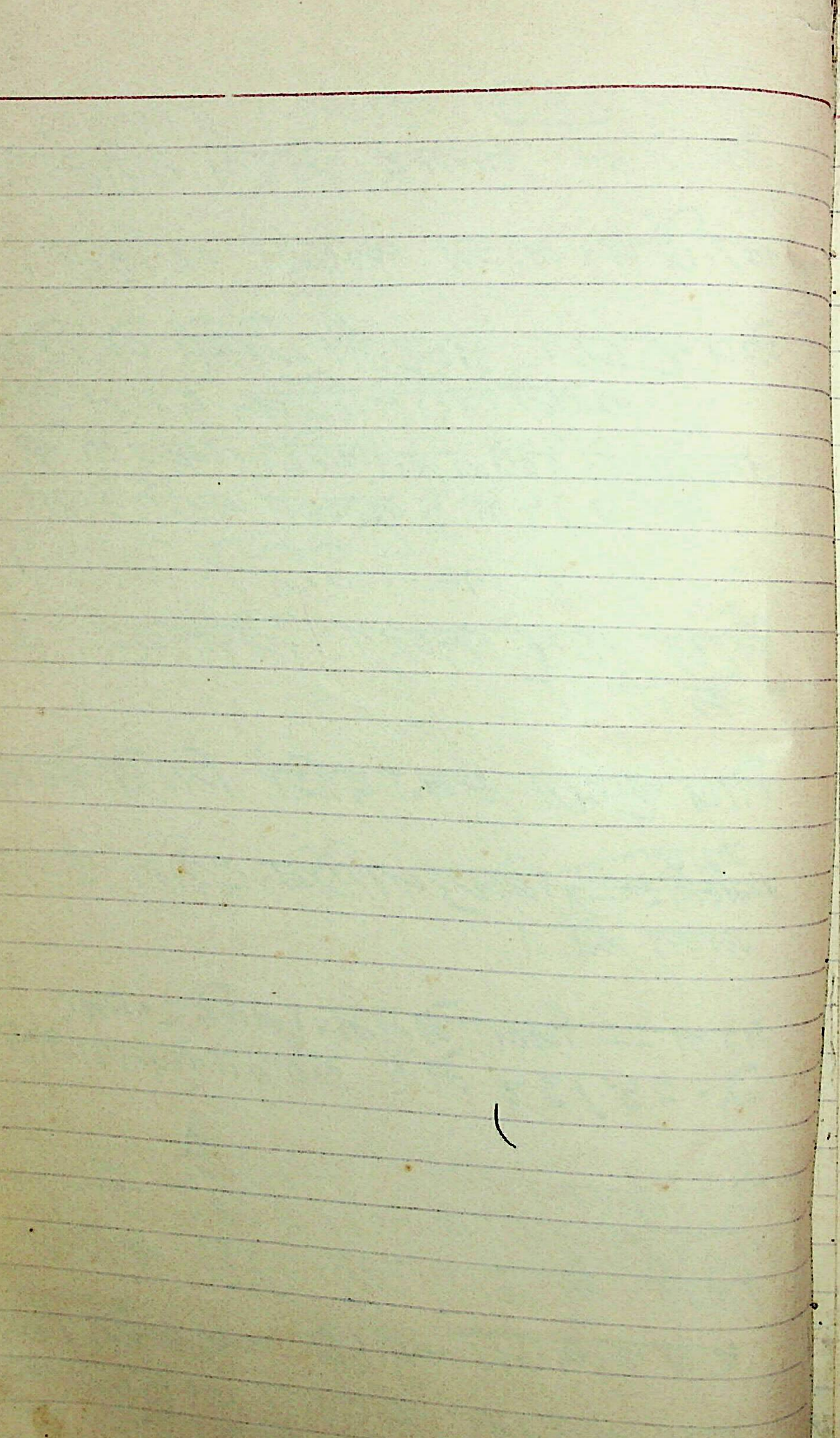
पौष कृष्ण एकादशी तिथि के दिन
मंगला विष्णु वार्षिक दर्शन पूजन
यात्रा करें।

मंगल — विष्णवे नमः [मन्दिर नम्बर
के० २४/३४ में है मुहल्ला मंगला गौरी]

पौष कृष्ण त्रयोदशी तिथि के दिन पाप
भक्षेश्वर वार्षिक दर्शन पूजन यात्रा श्रद्धा

पूर्वक करनी चाहिये क्योंकि
पाप भक्षेश्वर के दर्शन पूजन करने
वाले स्त्री पुरुष पाप हीन होते है, और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पुण्य की वृद्धि होती है, पापमुक्त

स्वर के दर्शन ~~एवं~~ पूजन करने वाला

व्यक्ति पाप कर्म को छोड़कर सत्कर्म

में लग जाता है। यह नन्दी उपपुराण

के आज्ञानुसार लिखी गई है।

पौष कृष्ण चतुर्दशी तिथि के दिन

द्वितीया खड्ग दर्शन वार्षिक

यात्रा करें। यह शिव पुराण के

आज्ञानुसार लिखी गई है।

पौष कृष्ण अमावस्या तिथि के

दिन तीर्थ गङ्गा आदि में स्नान

कर शिव पूजा करने के पश्चात

यथा शक्ति अन्न, वस्त्र, औषधी

इत्यादि दान करें। और मानव

कल्याण कारी सत्कर्म करें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पौष मास शुक्ल पक्ष के
सप्तमी तिथी के दिन विश्वेश्वर
दर्शन वार्षिक यात्रा नान्दीपु
के ~~अनुसार~~ आज्ञानुसार विश्वे
श्वर के

पौष ~~ख~~ मास ~~[illegible]~~ शुक्ल
पक्ष मी तिथी के दिन

पौष ~~ख~~ मास शुक्ल अष्टमी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

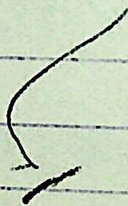
गङ्गाजी के तट पर, सड़क, गली आदि में प्रातः दो महीना तक लकड़ी के व्यवस्था करके प्रातः ३ बजे से आठ बजे तक अग्नी जलाने का व्यवस्था करें।

पौष कृष्ण चतुर्थी के दिन विनायक वार्षिक दर्शन यात्रा करें।

ढ़ितुन्ड विनायकाय नमः [मन्दिर नम्बर में है मुहल्ला सूर्य कुण्ड साम्ब दित्य सूर्य के दर्शन पूजन करके चले]

पौष शुक्ल षष्ठी तिथि के दिन भारद्वाजेश्वर वार्षिक दर्शन पूजन यात्रा करें। इनके दर्शन, पूजन करने वाले व्यक्ति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को तत्व ज्ञान ~~स्व~~तः हो जाता है।

भारद्वाजे श्वरायनमः [मन्दिर नम्बर डी॰ में है मुहल्ला खालिश पुरा।
यह मत्स्य पुराण के अनुमती ~~के~~नुसार]

पौष शुक्ल सप्तमी तिथि के दिन विघ्ने श्वर वार्षिक दर्शन पूजन यात्रा करें इन के दर्शन से विद्या की प्राप्ती होती है।
नन्दी उपपुराण केनुसार []
विघ्ने श्वरायनमः [मन्दिर नम्बर सी॰ के॰ २/४८ में है मुहल्ला ब्रह्म पुरी, सिद्धे श्वरी]

पौष शुक्ल अष्टमी तिथि के दिन ~~अष्ट~~ अष्ट भुजा देवी अम्बीका दर्शन पूजन वार्षिक यात्रा करें इन के दर्शन करने वाले नर, नारियों के शरीर में अष्ट धातु पुष्ट होते हैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और अनन्य भक्ति प्रदान करती है

अम्बिका देव्यैनमः [मन्दिर नम्बर

में है मुहल्ला -

पौष शुक्ल
एकादशी के दिन
विष्णु वार्षिक

दर्शन पूजन यात्रा करें।

विष्णवे नमः [मन्दिर नम्बर

मुहल्ला

पौष शुक्ल त्रियोदशी तिथि के दिन

जंगमेश्वर वार्षिक दर्शन पूजन

यात्रा करें यह चमत्कारी शिव लिङ्ग

है, इन के दर्शन करने के लिये जिस

कामनाओं से यात्री जाते है, उन

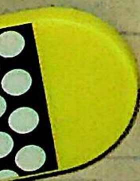
यात्रियों के कामना पूर्ण होते है।

जंगमेश्वराय नमः [मन्दिर नम्बर

में है मुहल्ला जंगमबाड़ी

मठ के अन्दर दिव्य मूर्ति है। (काशी खण्ड के अनुसार)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पौष शुक्ल त्रयोदशी तिथि के दिन तृतीया

सङ्ग वार्षिक यात्रा करें। पौष शुक्ल

चतुर्दशी तिथि के दिन प्रातः काशी में

दशाश्वमेध घाट में स्नान करनी चाहिये

पौष शुक्ल पूर्णिमा तिथि के दिन काशी

में उत्तर वाहानी गङ्ग जी में स्नान करने

वाले नर नारियों के दुख, दरीद्र नाश

होते है। अन्न गरम कपडा आदि

दान करें। पौष शुक्ल पूर्णिमा

तिथि के दिन नर नारायणेश्वर तथा

काशी के

वद्रीनारायण भगवान का वार्षिक

यात्रा प्रयत्न से करें।

नरनारायणेश्वरायनमः [मन्दिर नम्बर

में है मुहल्ला वद्रीनारायणघाट

त्रिलोचन घाट के दक्षिण बगल में है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नर नारायणे तीर्थे नरनारायणात्मकम्।
भक्ताः समर्च्य मां स्युर्वै नरनारायणात्मकाः ॥ (काशीख. अ. ६१)

~~माघ मास~~

अर्थ -

भक्त लोग नर नारायण नामक तीर्थ में नारायण रूप में मेरी पूजा करके नरनारायण रूप प्राप्त करते हैं।

"माघमास परारम्भ"

माघ कृष्ण प्रति पदा तिथि से माघ मास भर गङ्गा जी में स्नान करने से पापों का नाश होता है, पुण्य की वृद्धी होती है।

माघ (मकर शंक्रान्ती) अवकाश लेकर प्रयत्न पूर्वक (तीर्थ नदी गङ्गा जी में) काशी में उत्तरवाहिनी भागीरथी गङ्गा जी में स्नान करने वाले व्यक्ति को काशी से बाहर स्नान करने से जो फल मिलता ~~है~~...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ता है उस से
~~काशी चुम्मा~~ अधिक दश गुणा फल मिलता है।
माघ शंक्रान्ती के दिन काशी के गङ्गा
सागर में स्नान ~~कर~~ अस्सी घाट में
स्नान करके कपिलेश्वर दर्शन वार्षिक
यात्रा। अस्सी संगमेश्वर के घराने
मंदिर में दो शिव लिङ्ग है सटा हुआ
पश्चिम बगल का शिव लिङ्ग है।
कपिलेश्वराय नमः [मन्दिर नम्बर
बी॰ में है मुहल्ला अस्सी घाट]
माघ कृष्ण प्रतिपदा तिथि के
दिन से गुरु द्वारा प्राप्त किया हुआ
मन्त्र के द्वारा जप अनुष्ठान मन्त्र
के जितने अक्षर है उतने लाख जप
करने से एक पुरश्चरण होता है।
पुरश्चरण करने से मन्त्र की सिद्धि है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ता है। वेदव्यास जी स्कन्द पुराण में लिखते है कली युग में द्विगुणा जप करने से मन्त्र की सिद्धी औ वाणी की सिद्धी होती है अतः जप, अनुष्ठान आदि द्विगुणा करनी चाहिये।

माघ मास भर काशी के प्रयागराज घाट में स्नान करने का विधान है, अथवा काशी के किसी भी घाट में स्नान करें। क्यु कि दशा स्वमेघ घाट में स्नान करने वाले यात्रियों का बहुत भीड़ रहता है। माघ के महीने में अनेक पूजा-पाठ, यज्ञ, कथा संमेलन इत्यादि कराते करते है और यथाशक्ति दान करते है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

काशी के प्रयागराज घाट में ब्रह्मा जी के मानसिक संकल्प से ब्रह्मा जी को स्नान कराने के लिये यमुना और सरस्वती नदी स्वयं प्रगट हुई। प्रयागराज घाट शीतला जी के मन्दिर के नीचे यमुना नदी की स्रोत बहती है, ठण्डा मीठा जल है। गङ्गेश्वर के मन्दिर के सी॰ढ़ी के नीचे सरस्वती नदी की स्रोत बहती है, जेष्ठ महीने में स्नान करते समय में दर्शन होती है।

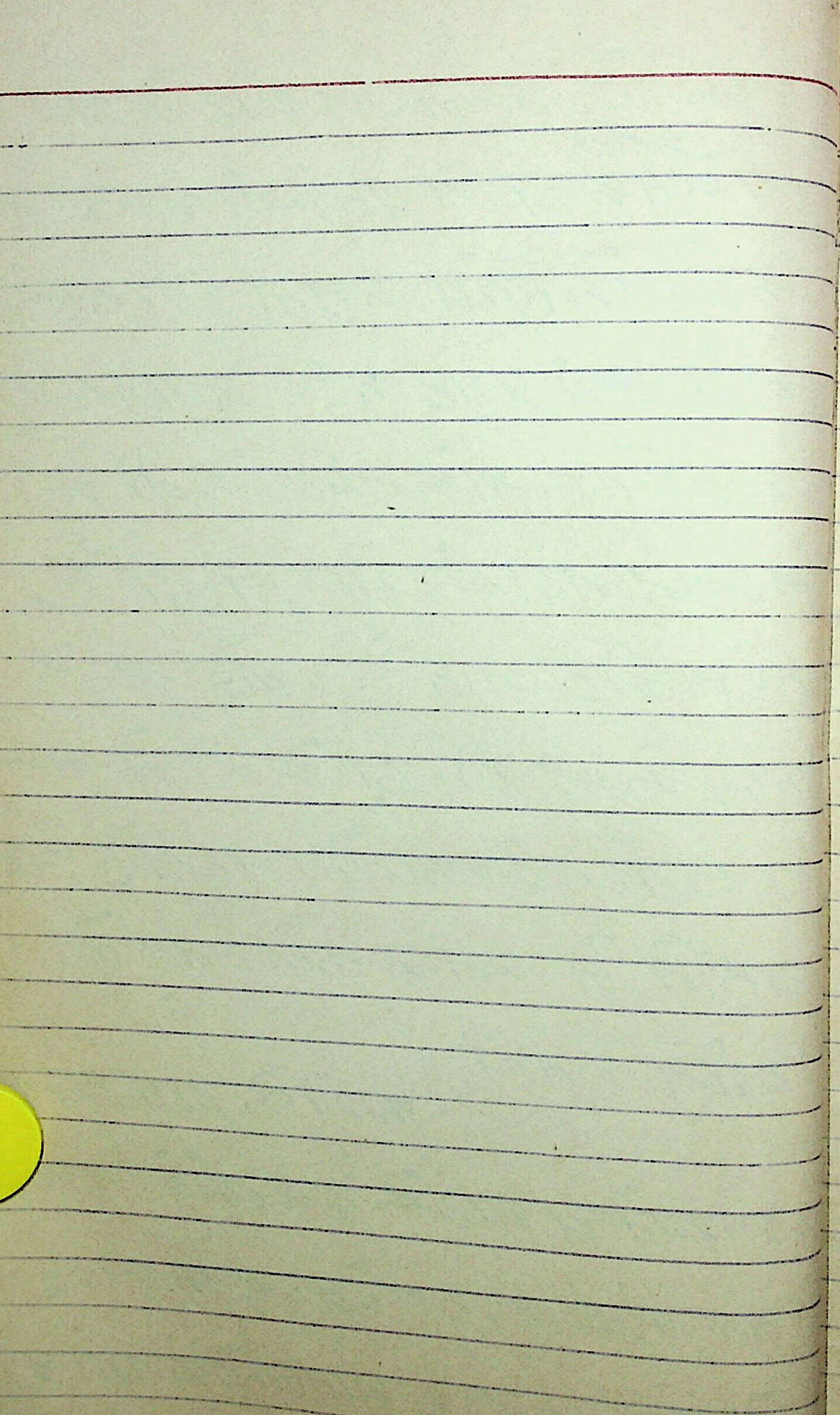
काशी के प्रयागराज

दशाश्वमेध घाट के देव मन्दिरों का वर्णन

ब्रह्मेश्वरायनमः, शूल टङ्केश्वरायनमः २

गङ्गेश्वरायनमः ३ शीतला देव्यैनमः ४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दशाश्वमेधेश्वरायनमः ५ श्वरायनमः ६

श्वरायनमः ७ श्वरायनमः ८

प्रयागेराजेश्वरायनमः ९ प्रयाग माधवायनमः १०

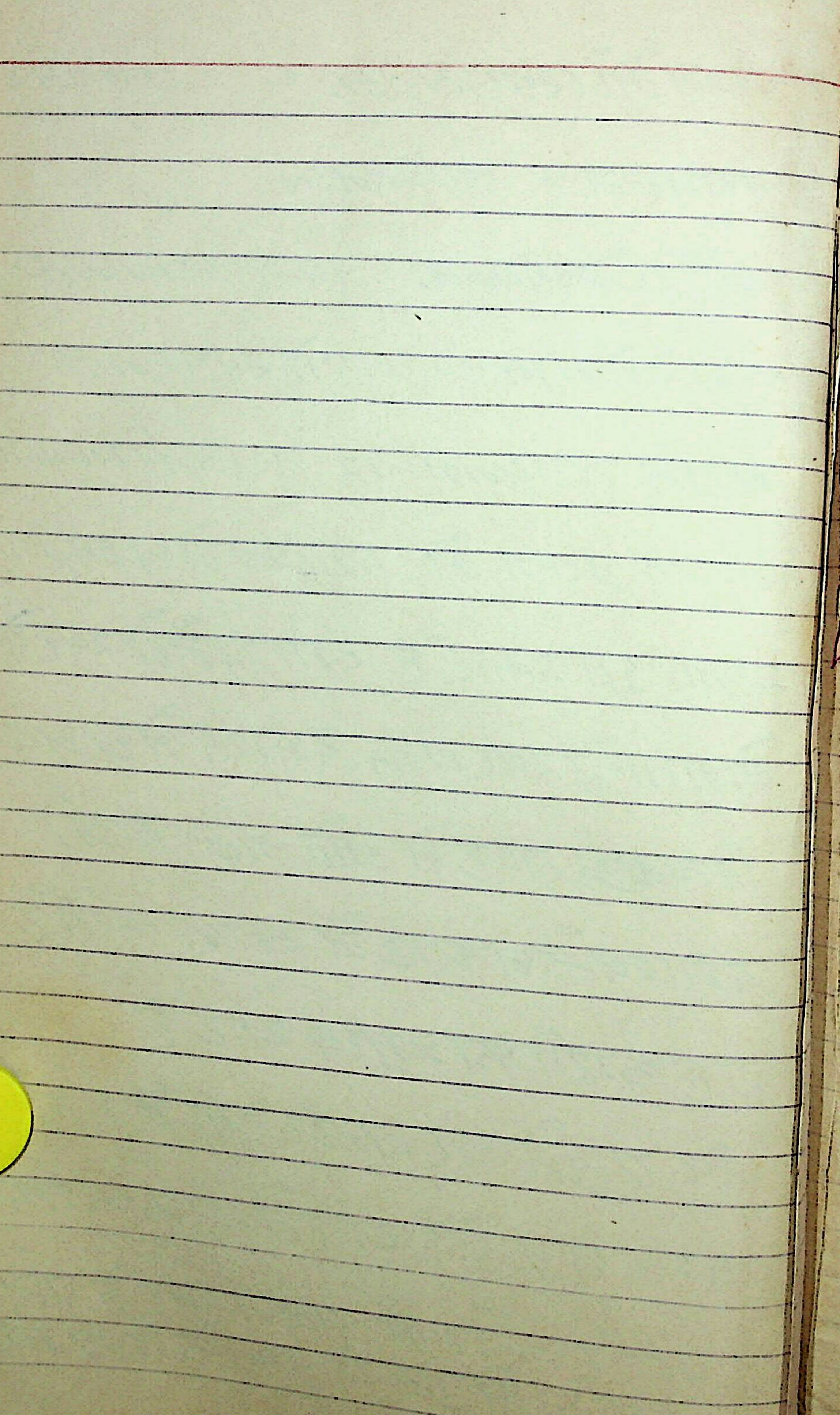
वन्दी देव्यैनमः ११ वाराहेश्वरायनमः

यमुनेश्वरायनमः १२ सरस्वतीश्वरायनमः

स्कन्द पुराण में दशाश्वमेध घाटकी सीमा इस प्रकार है दशाश्वमेधेश्वर से सोमनाथेश्वर तक दशाश्वमेध घाट है विश्व [illegible] राष्ट्र से आने वाले यात्री दशाश्वमेध घाट में स्नान करते है। यह काशी का प्रमुख घाट है।

नोट यमुनेश्वर वन्दी देवी से गली में सड़क से घुसते ही दाहिने तरफ के शंकर जी के मन्दिर में यमुनेश्वर है। यमुनेश्वर से सटे हुए एवं बगल के शिव मन्दिर में सरस्वतीश्वर है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रयागराजेश्वरायनमः [मन्दिर नम्बर डी॰ १६/१०० में है मुहल्ला प्रयागराजघाट]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(६) मकर संक्रान्ति ~~मेष~~ पर्व (८३)

निर्णय

१ मकर संक्रान्ति परतश्चत्वारिंशत् घटिका पुण्या:।
त्रिंशतकर्कटके नाड्यो मकरे तु दशाधिका: ॥
(हेमाद्रिमत)

अर्थ — मकर संक्रान्ति का पुण्यकाल अन्त में ४० घटिका में माना गया है। कर्क संक्रान्ति का पुण्यकाल उत्तर का ३० दण्ड उत्तम है। मकर का तो १० दण्ड अधिक में पुण्यकाल होता है- यह हेमाद्रि मत है।

यद्यस्तमयवेलायां मकरं याति भास्कर:।
प्रदोषे वाऽर्द्धरात्रे वा स्नानं दानं परेऽहनि ॥
— वृद्धगर्ग

अर्थ:→ वृद्ध गर्ग जी कहते हैं कि, यदि अस्त-काल में सूर्य मकर राशि में पदार्पण होता है तो स्नान-दान आदि सभी कार्य दूसरे दिन करना चाहिए।

"रात्रौ तु प्रदोषे निशीथे वा मकरसंक्रमे द्वितीयदिन एव पुण्यम्।" (माधव जी)

माधवाचार्य जी भी इसी मत की पुष्टि करते हैं:—

पुण्यातिशयार्थमिदम्- रात्रौ पूर्वभागे मकर-संक्रमे परेऽह्नि उदये पञ्चनाड्य: पुण्या:। मकरे सामान्येन परदिने पुण्यत्वेऽपि पुण्यातिशयार्थ-मिदम्। मतान्तरे पूर्वदिने, फलं समता- त्रिनाडीप्रमितार्क- बिम्बादर्धोदितास्तादध "सन्ध्या उर्द्धमत्र। पुण्यौ तदन्वी परपूर्वघस्रौ ॥"

चेद याम्यसौम्ये अयने क्रमात्स्त: पुण्यौ तदन्वी परपूर्वघस्रौ॥ इत्युक्ते अर्थैव मध्याह्नात् सूर्यास्ते तावत् पुण्यकाल:।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अर्थ – रात्रि के पूर्व भाग में मकर राशि में सूर्य का संक्रमण होने पर दूसरे दिन उदय काल के पाँच दण्ड सामान्य रूप से पुण्यकाल माना जाता है। दूसरे दिन पुण्यकाल मानना पूर्व संकेत करने पर भी पुनरावृत्ति आधिक पुण्य-सूचनार्थ है। किसी मत में रात्रि के पूर्वार्द्ध संक्रमण को पूर्व दिन में ही पुण्यकाल माना गया है। सायंकाल तीन दण्ड के अन्दर सूर्य का संक्रमण हो अर्थात् आधा दिखाई पड़ते ही राशी बदले या आधा उदय के समय संक्रमण हो तो अस्तकाल वाला पूर्व दिन और उदय वाला पर दिन लिया जायेगा, मध्याह्न से पूर्व-पर का विभाजन होगा। अर्थात् उसी दिन मध्याह्न से सूर्यास्त तक पुण्य-काल माना जायेगा।

प्रयाग का निर्णय —

प्रकर्षेण यागः प्रयागः।

अर्थात - जहाँ पर देवों सृष्टि के आदि में देवताओं ने एकत्रित होकर महायज्ञ अर्थात देव-पूजा, सत्संगति, दान किया था इसी स्थान का नाम प्रयाग पड़ा है।

गंङ्गा यमुनयोर्मध्ये तत्र गुप्ता सरस्वती।

अर्थ- माधव भगवान को इष्ट मानकर देवताओं ने महान यज्ञ का सम्पादन किया था। इसी यज्ञ में बाधा पहुँचाने वाले भीषण मधु नामक दैत्य को समाप्त किया था, इसी से इस स्थान का नाम 'माधवराज' पड़ा है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रयाग में कुम्भ योग -

मकरे च दिवानाथे वृषराशि स्थिते गुरौ।
प्रयागे कुम्भ योगो वै माघमासे विधुक्षये।
[स्कन्द पुराण]

अर्थ - जब सूर्य मकर राशि पर रहे और वृष राशि में बृहस्पति आवें तब माघ महीने में अमावस्या के दिन (महा कुम्भ) योग प्रयाग में पड़ता है। (दर्शन स्नान और दान)

माघे वृषगते जीवे मकरे चन्द्र भास्करौ।
अमावास्यां तदा योगः कुम्भश्च तीर्थनायके
अर्थ - जब सूर्य और चन्द्रमा मकर राशि में बृहस्पति आवे तब माघ महीने में अमावस्या के दिन कुम्भ योग प्रयाग में पड़ता है।

करें।

प्रयागतीर्थाय नमः [दशाश्वमेध घाट

प्रयागेश्वराय नमः [मकान नम्बर

सी॰ के॰ मुहल्ला प्रयाग राज घाट

जो प्रयाग इलाहाबाद में जाकर स्नान दान यज्ञ करने से जो फल मिलता है वही फल काशी में स्नान दान यज्ञ [साधु] ब्राह्मण को दान करने से प्राप्त होता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"काशी में प्रयाग महाकुम्भ निर्णय"

जब प्रयाग माघ मास के अमावस्या तिथि के दिन प्रातः काशी के प्रयाग घाट में स्नान करके प्रयागेश्वर प्रयाग माधव बन्दी देवी गङ्गेश्वर शूल टङ्केश्वर और शीतला आदि देव मन्दिर का दर्शन करें।

प्रयागतीर्थाय नमः [दशाश्वमेध घाट

प्रयागेश्वराय नमः [मकान नम्बर सी० के० मुहल्ला प्रयाग घाट

जो प्रयाग इलाहाबाद में जाकर स्नान दान यज्ञ करने से जो फल मिलता है वही फल काशी में स्नान दान यज्ञ श्राद्ध ब्राह्मण भोजन कराने से प्राप्त होता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

काशी के प्रयाग राज घाट में स्नान करने मात्र से प्रत्यक्ष फल मिलता है जैसा कि काशी खण्ड में कहा गया है कि —

उदग्दशाश्वमेधान्मात्प्रयागाख्यश्च माधव॥

प्रयागतीर्थे सुस्नातो कृष्णा पापैः प्रमुच्यते ॥२९॥

प्रयागगमने पुंसां यत्फलं तपसि स्मृतम्।

तत्फलं स्याद्दशगुणं मत्रस्नात्वा मभाऽऽगतः ॥३०॥

गङ्गायमुनयोः सङ्गे यत्पुण्यं स्नानकारिणाम्

काश्यामत सन्निधावत्र तत्पुण्यं स्याद्दशोत्तरम् ॥३१॥

दाना निराद्गुमस्ते ऽर्के ददतो यत्फलं भवेत्।

काशी खण्ड अ० ६१]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्योंकि
जो दशाश्वमेध घाट अन्तर्गत प्रयाग तीर्थ में स्नान करके
प्रयाग माधव नामक मुकुन्द विष्णु का दर्शन करता है
वह सभी पापों से मुक्त हो जाता है । २९ ।

पुष्करों को प्रयाग तीर्थ में जा जाकर और तप करके
जो फल मिलता है उससे दशगुना अधिक फल
प्रयागमाधव के समक्ष स्नान करने मात्र से
प्राप्त हो जाता है । ३० ।

गंगा यमुना के संगम में स्नान करने वालों को
जो फल मिलता है, ~~उससे~~ उससे दशगुना
अधिक फल काशी में प्रयाग माधव के
पास में स्नान करने से प्राप्त होता है । ३१

~~कुरुक्षेत्र में~~

कुरुक्षेत्रे हि तत्का श्याम गौवस्याद्द -
शाधिकम् ॥३२॥

गङ्गोत्तरवहा यत्र यमुना पूर्ववाहिनी

तत्सम्भेदं नरः प्राप्य मुच्यते -
ब्रह्महत्यया ॥३३॥

वपनं तत्र कर्तव्यं पिण्डदानं च भावतः।
देयानि तत्र दानानि महाफलम -
भीप्सुना ॥३४॥

गुणाः प्रजापति क्षेत्रे ये सर्वे समुदीरिताः।
अविमुक्ते महाक्षेत्रे ऽसङ्ख्याताश्च -
भवन्तीहि ॥३५॥

[काशीखण्ड अध्याय ६१ में है।

अर्थ -

कुरुक्षेत्र में सूर्यग्रहण के समय दान देने से जो फल मिलता है उससे दशगुना अधिक फल काशी में प्रयाग क्षेत्र में देने से मिलता है ३२

जहाँ गंगा उत्तरवाहिनी हो और यमुना पूर्ववाहिनी हो और दोनों का संगम गंगा यमुना का संगम है वहाँ पहुँच कर मनुष्य ब्रह्महत्या से मुक्त हो जाता है ३३

वहाँ बहुत बड़े फल की इच्छा वाले को मुण्डन तथा पिण्डदान करना तथा दान देना चाहिये ३४।

प्रजापति क्षेत्र के जो गुण कहे गये हैं वे सब अविमुक्त क्षेत्र में असंख्य हो जाते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रयागेशं महालिङ्गं तत्र तिष्ठति कामदम् ।
तत्सान्निध्याच्च तत्तीर्थं कामदम् परिकीर्तितम् ॥३६॥

काश्यां माघे प्रयागे यैर्न स्नातो मकरार्कगे ।
अरुणोदयमासाद्य तेषां निःश्रेयसं कुतः ॥३७

काश्यां वै प्रयागे ये तपसि स्नान्ति संयुताः ।
दशाश्वमेधजनितं फलं तेषां भवेद् ध्रुवम् ॥३८॥

[काशीखण्ड अध्याय ६१]

प्रयागेश महालिंग के पास कामदलिंग है। उस के पास में होने से वह क्षेत्र कामदतीर्थ कहा जाता है ३६

काशी में प्रयाग में माघमास में मकर के सूर्य होने पर अरुणोदय काल में जो स्नान नहीं करते हैं उनका कल्याण कहाँ से होगा ३७।

तपस्या में नियत हो तपस् में काशी के प्रयागतीर्थ में जो स्नान करते हैं उन्हें दश अश्वमेध यज्ञों का फल प्राप्त होता है ३८।

~~(काशीखण्ड अध्याय ६१)~~

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रयाग माधवम् भक्त्या प्रयागेशञ्च
कामदम् ।
प्रयागे तपसि स्नात्वा येऽर्चयन्त्यन्
वहं सदा ॥३९॥

धनधान्यसुतद्धीस्ते लब्ध्वा भोगान
मनोरमान् ।
भुक्त्वेह परमानन्दं परम् मोक्षम
वाप्नुयु ः ॥४०॥
माघे सर्वाणि तीर्थानि प्रयाग माधयान्ति
हि ।
प्राच्युदीची प्रतीचीतो दक्षिणाधस्त
थोर्ध्वतः ॥४१॥
~~[~~ [काशीखण्ड अध्याय ६१]

अर्थ - ~~तपस् में प्रयाग में नित्य होकर प्रयाग में स्नान करके~~
तपस् में प्रयाग में स्नान करके जो व्यक्ति
प्रयाग माधव, ~~और~~ प्रयागेश तथा कामद -
की पूजा प्रति दिन करते हैं वे इस लोक में
धन, धान्य, पुत्र तथा समृद्धि आदि को प्राप्त करके
तथा अपने सभी मनोरथों और भोगों को प्राप्त करके
अन्त में परमानन्द मोक्ष को प्राप्त करते हैं ४०

माघ महीने में सभी तीर्थ पूर्व पश्चिम दक्षिण
और उत्तर ऊपर तथा नीचे सभी जगहों से
प्रयाग तीर्थ में आ जाते हैं ४१

सिद्
सं

केवल श्लोक ८

२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

काशी स्थितानितीर्थानि मुने !
यान्ति न कुत्रचीत ।

यदि यान्ति तदा यान्ति तीर्थत्रयमनु-
त्तमम् ॥४२॥

आयान्त्यूर्जे पञ्चनद प्रातः प्रातर्ममा-
न्तिकम् ।
महाघौघ प्रशमने महाश्रेयो विधायिनि ।
॥४३॥
प्राप्य माघधारिञ्च प्रयागेशसमी-
पतः ।
प्रातः प्रयागे संस्नान्ति सर्वतीर्थानि
मामनु ।४४॥
[काशीखण्ड अध्याय ६१]

अर्थ — हे मुनि ✓ — काशी स्थित तीर्थ कहीं बाहर (नहीं जाते) यदि जाते हैं तो केवल तीनों उत्तम तीर्थ काशी में ही आ जाते हैं ४२ (~~अर्थ कुछ गड़बड़ है~~)

~~अर्थ के श्लोक गड़बड़ हैं।~~

(४३ श्लोक में कुछ अशुद्धि है)

~~महा कल्याण करने वाले पाँचों नद~~

४३-४४ श्लोकों का अर्थ ठीक नहीं हो रहा है)

श्लोक में कुछ त्रुटि प्रतीत हो रही है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माघ कृष्ण प्रति तृतिया द्वितीया तिथि के दिन प्रयाग राज में घाट में स्नान करके गङ्गेश्वर दर्शन करें।

माघ कृष्ण चतुर्थी तिथि के दिन २६ छब्बिस गणेशदर्शन पूजन यात्रा करें। इन के दर्शन यात्रा करने से विघ्न, शंकट नहीं आता। माघकृष्ण चतुर्थी तिथि के दिन एक वर्ष तक के आने वाले विघ्न कष्ट को दूर करने के हेतु से बड़े गणेश दर्शन पूजन यात्रा वार्षिक यात्रा करें। यह बड़े गणेश जी का सिद्धपीठ है यहाँ पूजा, पाठ, हवन, यज्ञ, मन्त्र जप - अनुष्ठान, उपनिषद, पुराण आदि का पाठ जो कुछ भी शुभ कार्य होते है वह सब एक वर्ष में सिद्ध होते है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माघ कृष्ण तृतिया तिथि के दिन

चतुर्थ सङ्ग वार्षिक यात्रा

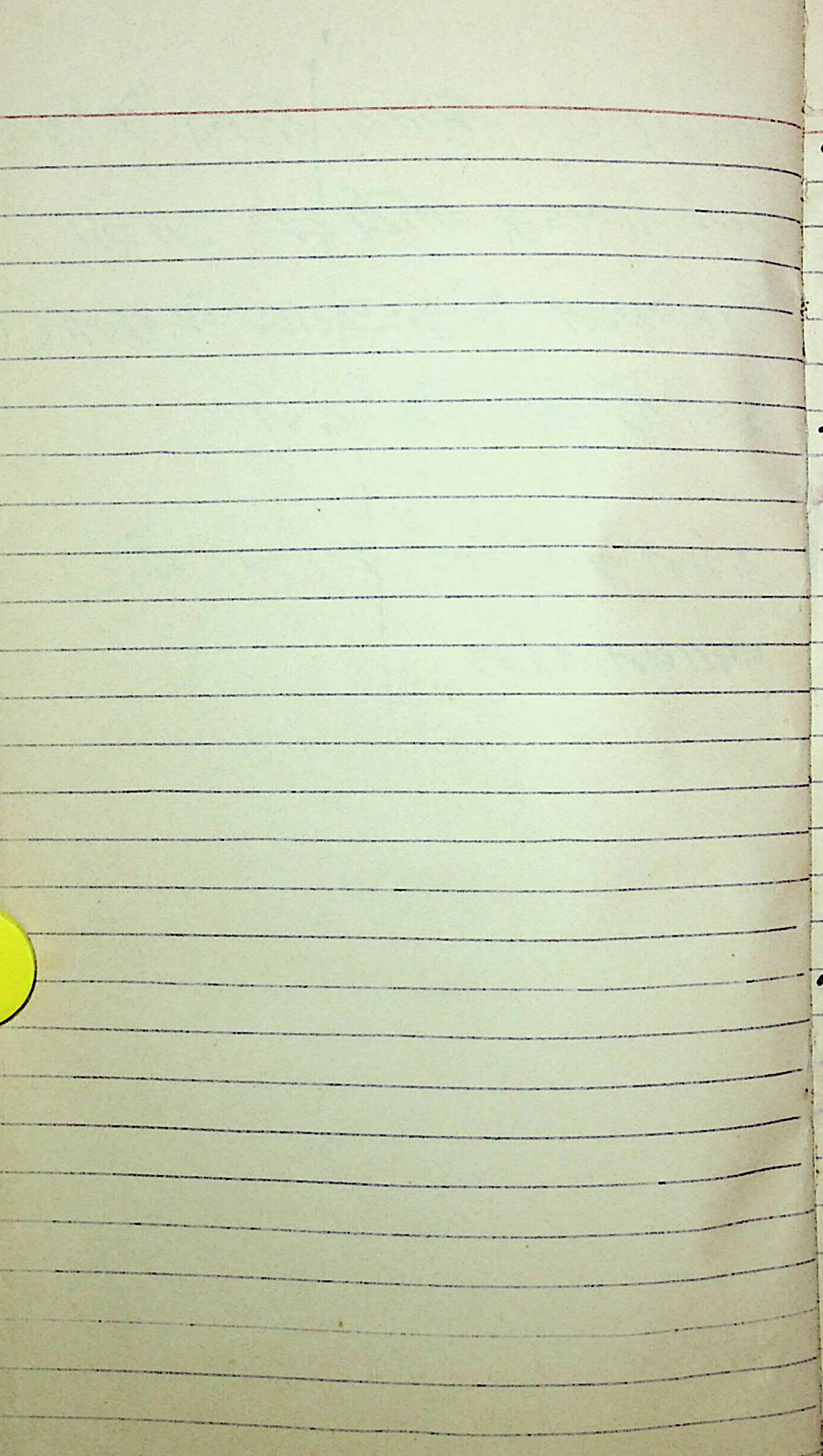
यह यात्रा लिङ्ग पुराण के अनुसार है

इसी तृतिया के दिन

दर्शन वार्षिक यात्रा करें।

स्थापन दर्शन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बडे गणेश जी को लड्डू, हलुवा, मीठा दूध, (दूब) ऋतु फल आदि प्रशाद चढता है, प्रशाद साधु, संन्यासी और ब्राह्मणों को जल पान करा कर वस्त्र, दक्षिणा देकर किसी भी सुभ कार्य में जाने से सबकाम सफल होते है।

बडे महाराज गणेशायनमः [मन्दिर नम्बर
मुहल्ला लोहटिया बडे गणेश]

नद्भुःस्त्रैरभिभूयेत इहामुत्रापिकुत्र चित्।
कुर्यात्प्रति चतुर्थीह यात्रां विघ्नेशितुः सदा॥ ६३॥
ब्राह्मणेभ्यस्त दुद्देशाद्देयावै मोदका मुदे॥ ६४/१
[काशी खण्ड अ. १००]

अर्थ -

—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माघकृष्ण पञ्चमी तिथि के दिन स्क-

न्द माङ्गदेश्वर दर्शन, पूजन वार्षिक

यात्रा। इस तिथी के दिन इन के दर्शन

करने वाले व्यक्ति के कष्ट दूर करते है।

स्कन्द माङ्गदेश्वराय नमः। [मन्दिर नम्बर

बी० चौकी घाट केदारघाट के बगल

में है।

माघ कृष्ण सप्तमी तिथि से युक्त रवि-

वार के दिन सत्ययुग में विष्णु भगवान

गङ्गा वरणा संगम में पयर धोकर काशी में

आये काशी की यात्रा करने के पश्चात।

विष्णु भगवान ने अपने करकमलों से

आदि केशव विष्णु की स्थापित किये।

विष्णु भगवान ने पाउ धोने के कारण पादोदक तीर्थ हुआ

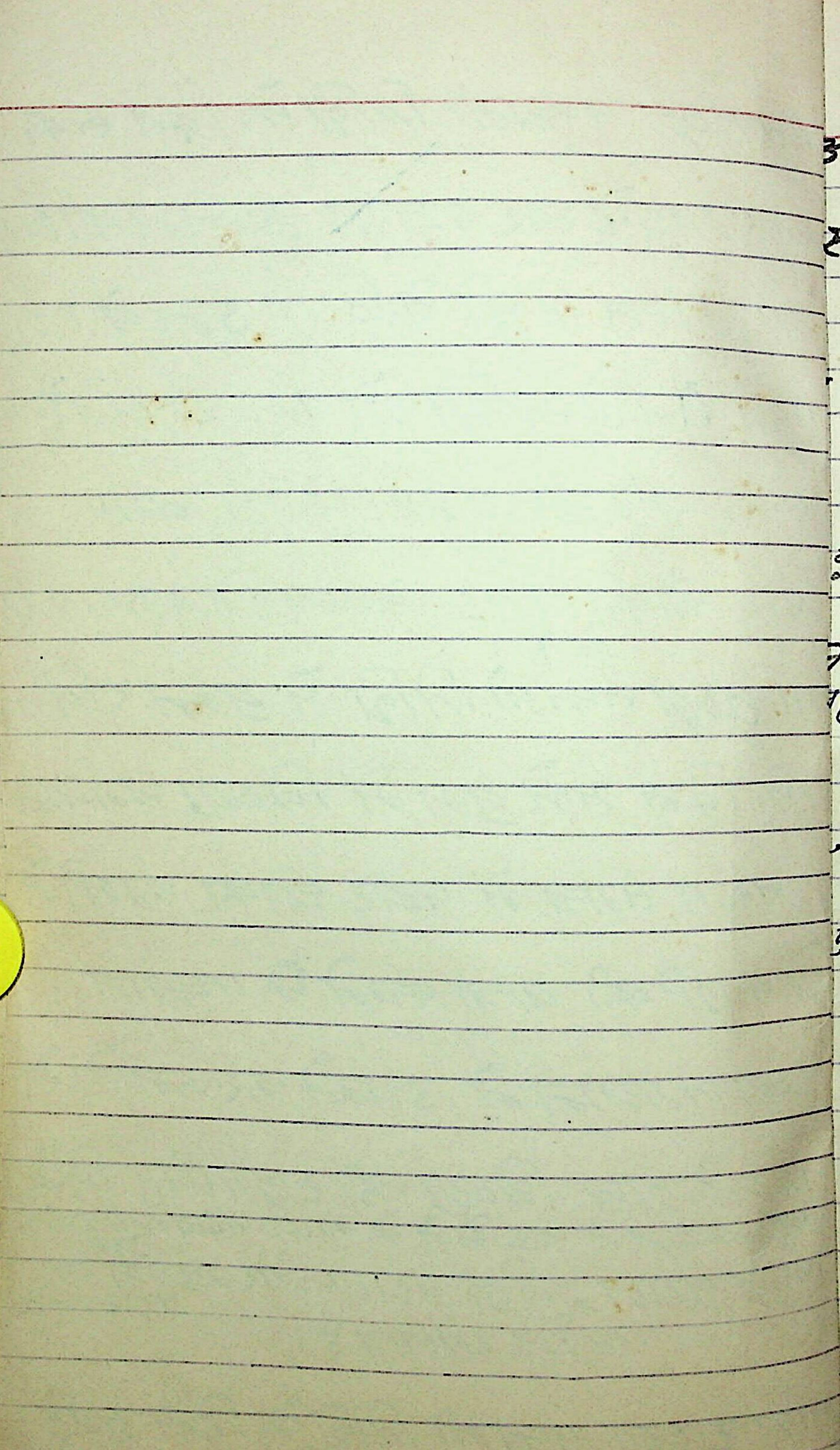
स्कन्द पुराण, लिङ्ग पुराण और गणेश उप पुराण में

वर्णन मिलता है।

माघकृष्ण सप्तमी तिथि के दिन आदि

केशव वार्षिक दर्शन यात्रा करें।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आदिकेशव विष्णवे नमः [मन्दिर नम्बर

ए० ३७/५१ में है मुहल्ला आदिकेशव बसन्त कालेज] आदिकेशव में ज्ञान केशव

केशवादित्य. केशव चरणा संगमेश्वर

स्व नक्षेत्रेश्वर, स्वर्ण विनायक आदि

इत्यादि देव मन्दिर है।

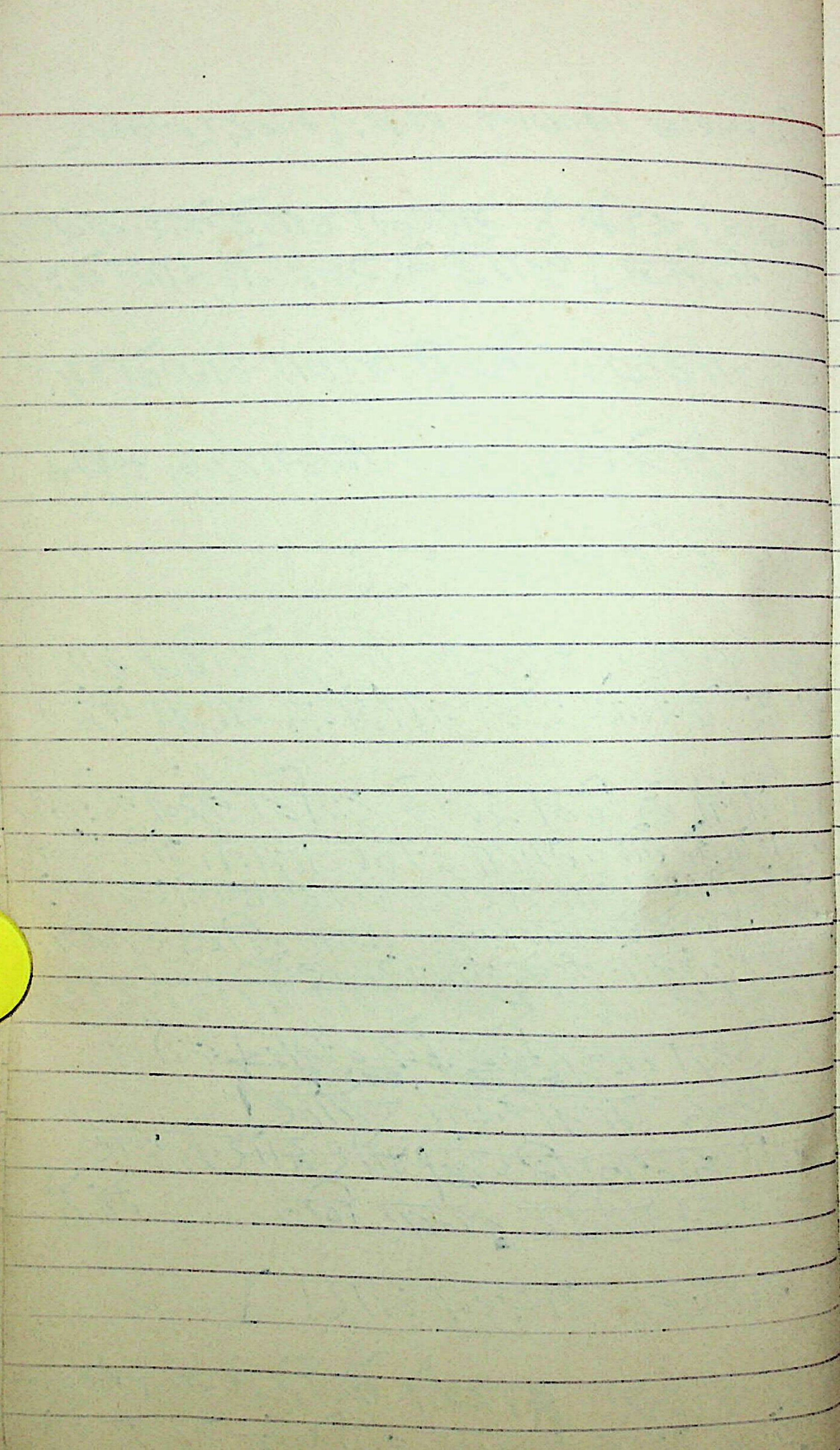
माघ कृष्ण अष्टमी तिथि के दिन महामाया देवी के दर्शन वार्षिक यात्रा करें।

इस तिथि के दिन इनके दर्शन करने वाले नर, नारियों को मोह माया नहीं सताती और परिवार में रहते हुए मोह से रहित होते हैं। (काशी खण्ड से)
महामाया देव्यै नमः [मन्दिर नम्बर बी० २७/२ में है दुर्गा कुण्ड दुर्गा जी के दक्षिण कोण में
माघ कृष्ण एकादशी तिथि के दिन
द्वारिका नाथ ~~विष्णवे नमः~~ दर्शन
और द्वारिकेश्वर
वार्षिक यात्रा करना चाहिए।
द्वारिकानाथ विष्णवे और द्वारिकेश्वर
नमः [मन्दिर नम्बर बि० में है

मुहल्ला सङ्कुधारा]

माघ कृष्ण द्वादशी के दिन मधुरेश्वर
- बाणेश्वर दर्शन, पूजन वार्षिक यात्रा करें
बाणेश्वराय नमः [मन्दिर नम्बर बी २७/२ में है
मुहल्ला दुर्गाकुण्ड के कटरा के मन्दिर में है।]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माघकृष्ण त्रयोदशी तिथि के दिन ४२ बयालिश शिवमहा लिङ्ग में प्रथम १४ चौदह सिद्ध महा लिङ्ग यात्रि क दर्शन, पूजन यात्रा व अँवकाश लेकर पुरुषार्थ करके यात्रा करें।

माघ कृष्ण पक्ष त्रयोदशी तिथि के दिन प्रदोश व्रत परारम्भ करते है शंकर जी के अनन्य भक्ति प्राप्त करने के लिये (पुत्र, पौत्र और) अन्यक ~~[illegible]~~ कार्य सिद्ध करने के लिये पुत्र पौत्र प्राप्त करने के लिये, रोग, शंकट को दूर करने के लिये त-त कार्य में संकल्प पूर्वक नर-नारि प्रदोष ~~पूर्वक~~ व्रत करते है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रदोष (८०)

पृथिव्यां यानि तीर्थानि सागरान्तानि यानि च ।
अण्डमाश्रित्य तिष्ठन्ति प्रदोषे गोवृषस्य तु ॥
स्पृष्ट्वा तु वृषणौ तस्य शृंगमध्ये विलोक्य च ।
पुच्छं च ककुदं चैव सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥
निवेद्यं कर्मजातं च दद्याद्वित्तानुसारतः ।
दक्षिणां ब्राह्मणेभ्यश्च ततो मौनं विसर्जयेत् ॥
एवं संवत्सरं कुर्यात्त्रयोदश्यामिदं व्रतम् ।
अथवा मन्दवारेण युक्ता एवं त्रयोदशी ॥
यश्चतुर्विंशतिं कुर्यात्स यथोक्तफलमाप्नुयात् ।
(इति मदनरत्नोक्तं प्रकारान्तरम्) ॥

अर्थ-

पृथ्वी पर सागर पर्यन्त जितने तीर्थ हैं वे सब प्रदोष काल में गोवृष के पास, उसके अण्ड का आश्रय लेकर रहते हैं।

गोवृष के वृषण (अण्ड) का स्पर्श करके उसके दोनों शृंगों के बीच से गोवृष के पुच्छ और ककुद (पीठ पर का ऊँचा भाग) का दर्शन जो व्यक्ति करता है उसके सब पाप नष्ट हो जाते हैं।

अपने सम्पूर्ण कर्मों को उनके सामने निवेदन करें अपने सामर्थ्य के अनुसार दान दें और ब्राह्मणों को दक्षिणा दें और बाद में मौन भंग करें।

इस प्रकार एक वर्ष तक प्रति त्रयोदशी को यह व्रत करें अथवा केवल शनि की त्रयोदशी को व्रत करें। इस प्रकार जो 24 (चौबीस) त्रयोदशी व्रत करता है उसको शास्त्रोक्त फल प्राप्त होता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

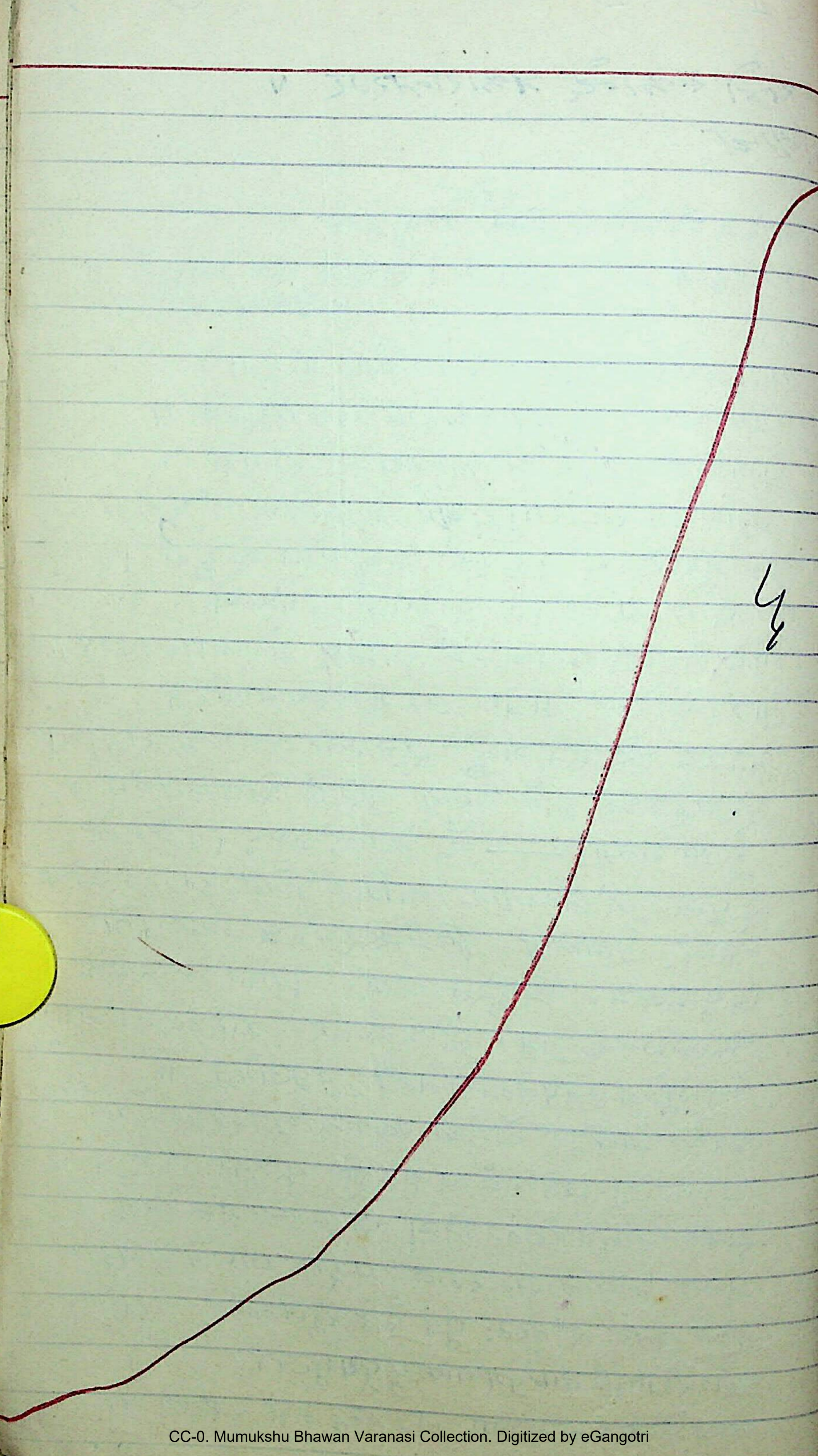
दन रत्ने स्कान्दे प्रकारान्तरम् ॥

देव्युवाच -

देव केन विधानेन प्रदोष व्रतमुत्तमम् ।
विधातव्यं नरैः स्त्रीभिः सन्तान फल सिद्धये ॥
॥ ईश्वर उवाच ॥

यदा त्रयोदशी शुक्ला मन्दवारेण संयुता ।
आरब्धव्यं व्रतं तत्र सन्तान फल सिद्धये ॥
ऋणविमोचनार्थाय भौमवारेण संयुता ।
सौभाग्य स्त्रीसमृद्ध्यर्थं शुक्रवारेण संयुता ॥
आयुरारोग्य सिद्ध्यर्थं भानुवारेण संयुता ।
एकवत्सर पर्यन्तं प्रतिपक्षं त्रयोदशी ॥
प्रदोषे शिवमभ्यर्च्य नक्तं भोक्ष्यामि शंकर ॥
प्रातश्चानेन मंत्रेण व्रत संकल्पमाचरेत् ।
ततस्तु लोहिते भानौ स्नात्वा सनियमो व्रती ॥
पूजास्थानं ततो गत्वा प्रदोषे शिवमर्चयेत् ।
पूजा मन्त्राः —— ॐ भवाय नमः । महादेवाय० रुद्राय०, नीलकण्ठाय०, श्रीशिवाय० शिवाय०, उग्राय० उमाकान्ताय० ईशानाय० विश्वेश्वराय० त्र्यम्बकाय० त्रिपुरुषाय० त्रिपुरान्तकाय० त्रिकाग्निकालाय० कालाग्निरुद्राय० नीलकण्ठाय० सर्वेश्वराय नमः ॥ ॥१६॥
पंचामृतेन स्नपनमाभिर्मन्त्रैः प्रपूजयेत् ॥
दधि भक्तेन नैवेद्यं पक्वान्नैर्घृतसंयुतम् ॥
दत्वा समुखवासं च ताम्बूलं क्रमुकादिकम् ।
सर्वं समर्प्य देवद दिक्षु दीपानाज्य समन्वितान् ॥
यथा भवान् समस्तानां पशूनां पापमोचकः ।
तथा व्रतेन संतुष्टः पुत्रं देहि सुलक्षणम् ॥
ऋण रोगादि दारिद्र्य पापक्षुदपमृत्यवः ।
भयशोकमनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अर्थ –

~~देवी ने कहा – हे देव किस विधान से उत्तम प्रदोष व्रत करना चाहिये~~

देवी ने कहा – हे देव – नरनारी को संतान पाने के लिए ~~कामना~~ उत्तम प्रदोष व्रत को किस विधान से करना चाहिये। जब शनिवार को त्रयोदशी तिथि पड़े तब संतान की कामना से उस दिन प्रदोष व्रत आरंभ करें।

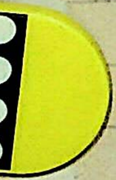
ऋण से ~~छूट~~ छूट जाने की कामना हो तो भौमवार के शुक्ल त्रयोदशी से प्रदोष व्रत आरंभ करें। यदि सौभाग्य लक्ष्मी तथा समृद्धि की कामना हो तो शुक्र वार त्रयोदशी से प्रदोष व्रत आरंभ करें। आयु एवं आरोग्य की कामना हो तो रविवार की त्रयोदशी से प्रदोष व्रत ~~श~~ शुरू करें। एक वर्ष पर्यन्त ~~दो~~ दोनों पक्षों की त्रयोदशी में प्रदोष – में भगवान शिव की पूजा करें ~~और~~ और रात्रि में भोजन करें। प्रातः काल इस मन्त्र से व्रत की सफलता करें।

इसके बाद प्रातः काल जब सूर्य भगवान लालवर्ण के – हो तब स्नान करके व्रती नियम पूर्वक प्रदोष काल में पूजा स्थान पर जाकर श्री शिव का पूजन करें।

मन्त्र –

पंचामृत से स्नान कराके मन्त्रों से पूजन करें। दधि और भात का नैवेद्य दें अच्छे पकवान का ~~नैवेद्य~~ नैवेद्य देकर सुन्दर ~~सुगन्धित~~ सुगन्धित – सुपारी से युक्त पान दें। आठो दिशाओं में घृत – का दीपक ~~जलावें~~। जलाकर समर्पित करें प्रार्थना करें – हे प्रभो – जैसे आप सभी पशुओं के पापों का मोचन करते हैं उसी प्रकार इस व्रत से संतुष्ट होकर सुलक्षण पुत्र मुझे दीजिए। ~~आप~~ आप मेरे ऋण रोग दारिद्र्य पाप भूख अपमृत्यु भय शोक ~~मन~~ और मन के संताप इन सबको सदा के लिए दूर करें।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माघकृष्ण चतुर्दशी तिथि के दिन प्रातः अविमुक्तेश्वर तीर्थ मणी कर्णीका घाट में स्नान करके अविमुक्तेश्वर दर्शन-पूजन वार्षिक यात्रा करें। अविमुक्तेश्वर का प्रत्यक्ष फल काशी खण्ड में निम्न लिखा है

अविमुक्तेश्वरायनमः [मन्दिर नम्बर

सी० के० ३५/३१ में है मुहल्ला ढुण्ढिराज. गली दूसरे विश्वनाथ जी में है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माघकृष्णा चतुर्दश्याम विश्वेशमुपासते ।
॥ ८० ॥
किं बिभेति नरो घोरः कृतादघाराशेर्ध्रुवात् ॥
[का॰ ख॰ अ॰ ३८]

अर्थ –

~~को~~ माघ कृष्ण चतुर्दशी को अविमुक्तेश्वर का दर्शन करें। ~~पाप~~ के पहाड़ के समान पाप करके भी उस मनुष्य को नहीं डरना चाहिये। —— (आगामी अर्थ है)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अर्चयित्वालिङ्ग·मविमुक्तेश्वरं नरः।
कृत कृत्यो भवेदत्र न च स्याज्जन्म-
भाक्कुतः॥ ८५॥
[का·ख·अ·३९ *]

अर्थ —
जो व्यक्ति अविमुक्तेश लिङ्ग की पूजा करता है, वह कृतकृत्य हो जाता है, उसे पुनः दूसरा जन्म नहीं लेने पड़ते/ ८५/
(का·खं·अ· ३९)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



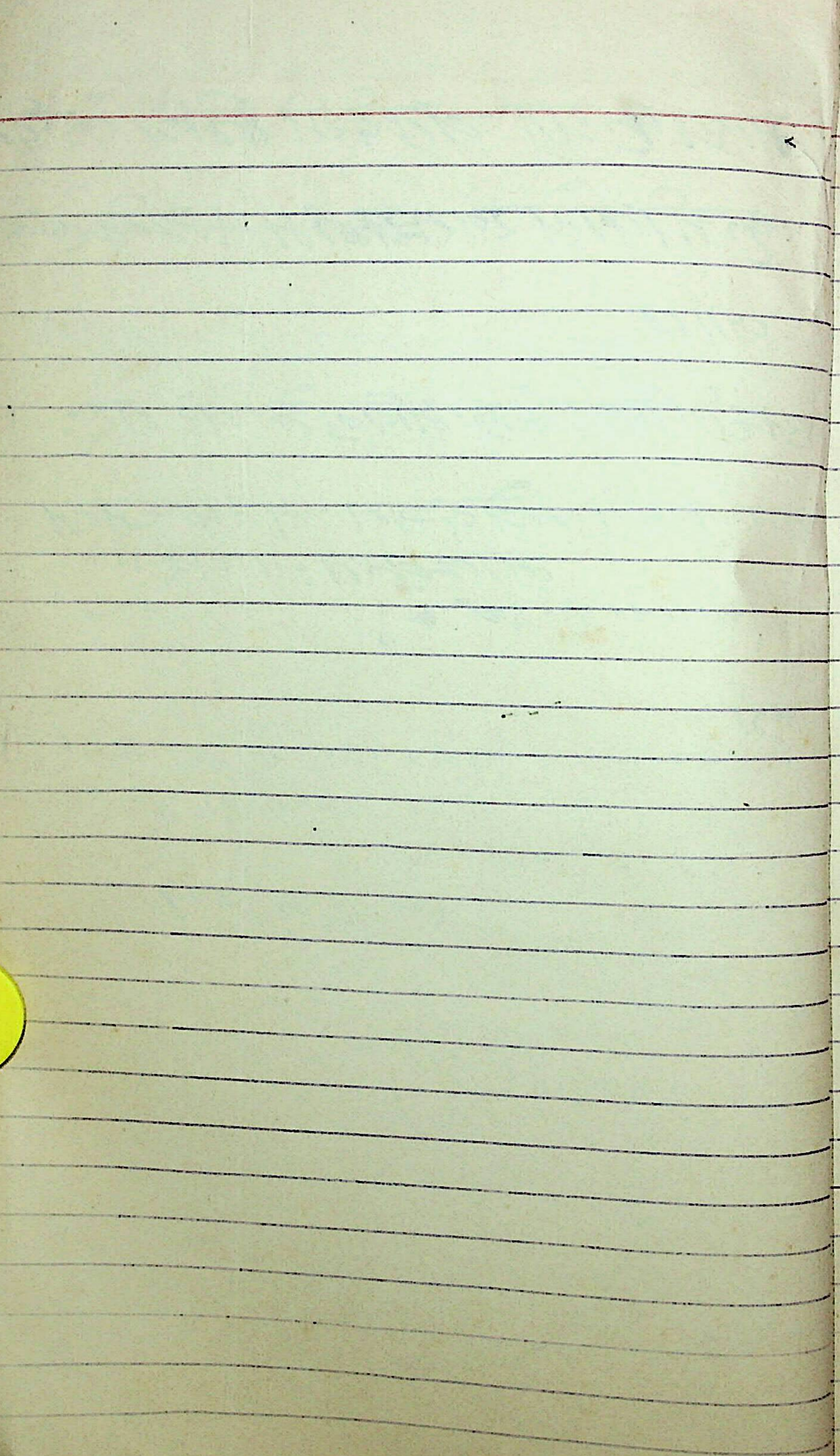
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माघ कृष्ण चतुर्दशी तिथि के दिन कृत्तीवासेश्वर वार्षिक दर्शन पूजन यात्रा करें। गङ्गा स्नान करके पूजा की सामग्री लेकर दर्शन करने जाईये।

कृत्तीवासेश्वराय नमः [मन्दिर नम्बर में है मुहल्ला हरतीर्थ मृत्युञ्जय के पूर्व सड़क में स्थूण हरेश्वर के उत्तर पूर्व बगल में है सड़क से दर्शन होते है। माघ कृष्ण चतुर्दशी के दिन षड्ङ्गायतन दर्शन वार्षिक यात्रा।

चण्डेश्वर मु कालीका गली। अविमुक्तेश्वर, ख्वलीनेश्वर, ओंकारेश्वर, कीर्तिवासेश्वर मध्यमेश्वर का दर्शन, पूजन करना चाहिये। लिङ्ग पुराण में वर्णित है। पुस्तक मोटी होने के कारण श्लोक नहीं लिखा है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



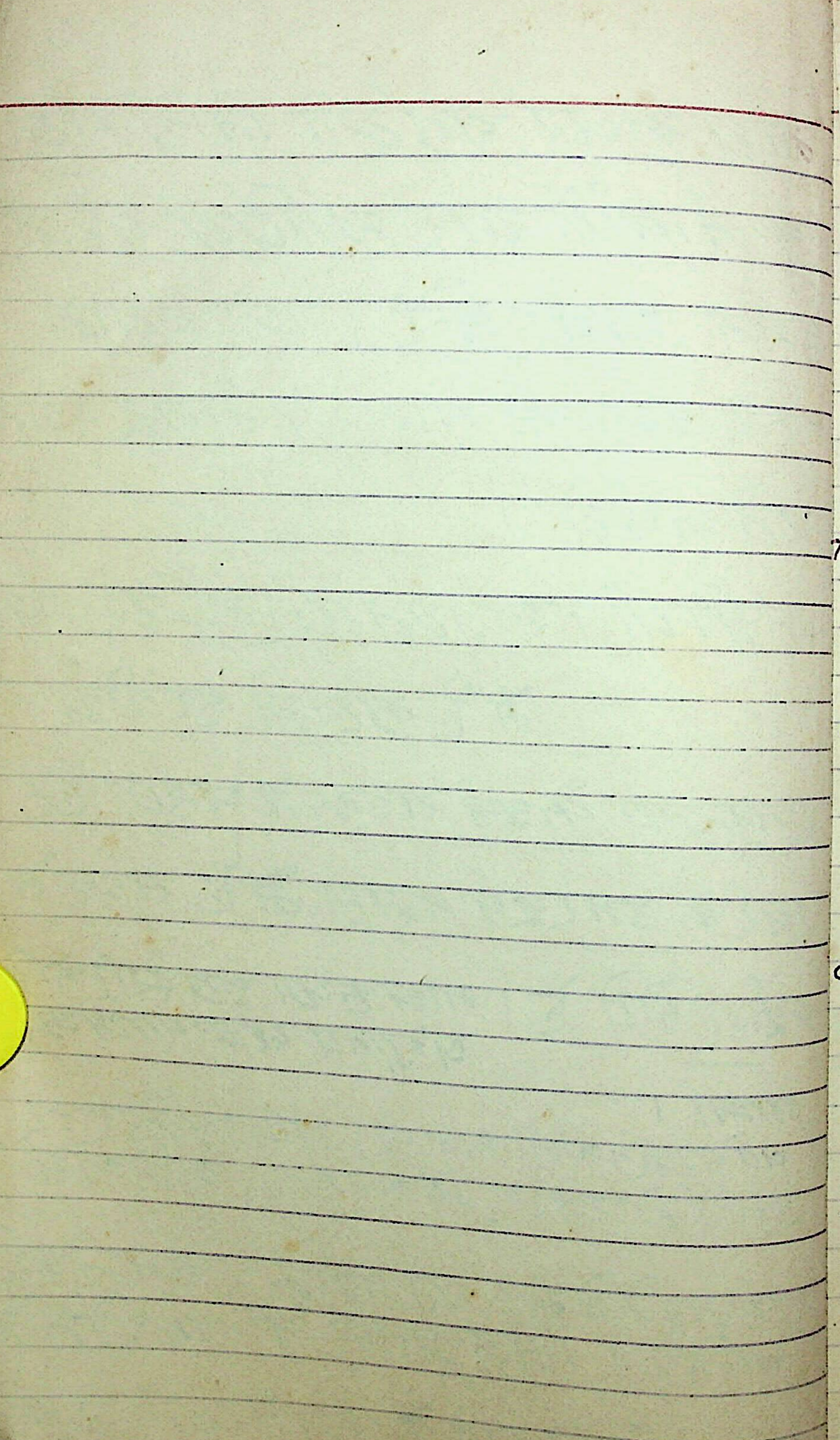
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माघ कृष्ण चतुर्दशी तिथि के दिन कृत्तीवासेश्वर वार्षिक दर्शन पूजन यात्रा करें। गङ्गा स्नान करके पूजा की सामग्री लेकर दर्शन करने जाईये।

कृत्तीवासेश्वराय नमः [मन्दिर नम्बर में है मुहल्ला हरतीर्थ मृत्युन्जय के ~~पूर्व~~ सड़क में त्रयुण हरेश्वर के उत्तर पूर्व बगल में है सड़क से दर्शन होते है। माघ कृष्ण चतुर्दशी के दिन षड्गानय दर्शन वार्षिक यात्रा।

चण्डेश्वर मुकालीका गली। अविमुक्तेश्वर खर्लीनेश्वर, ओंकारेश्वर, कोतिवासेश्वर मध्यमेश्वर का दर्शन, पूजन करनी चाहिये। लिङ्ग पुराण में वर्णित है। पुस्तक मोटी होने के कारण श्लोक नहीं लिखा है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माघकृष्ण चतुर्दश्या मुपोष्य निशि ~~जा~~ -
जागृयात ।
कृत्तिवासे शम भ्यर्च्य यः स॰ या -
यात परां गतिम् ॥४४॥

कृत्तिवासेश्वरे लिङ्गे न स गर्भे प्रवेक्ष्यते

कृत्तिवासे श्वरं नाम महापातक नाशनम् ।
॥

कृतकृत्यो भवेन्मर्त्यः संसारं न विशेत् पुनः ॥

माघ कृष्ण चतुर्दशी को उपवास करें रात्रि में जागरण करें और कृत्तिवास की पूजा करें तो उसकी उत्तम गति होती है ४४।

कृत्तिवासेश्वर लिङ्ग के दर्शन पूजन से पुनः गर्भ में आना पड़ता। कृत्तिवासेश्वर का नाम महापातकों का नाश करता है। जो इनको नाम ... में नहीं आता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कृत्तिवासेश्वरं प्राप्य सर्व पाप विव
र्जिताः ।
सुखेन मोक्षमेष्यन्ति यथा सुकृ-
तिनस्तथा ॥३८॥

कृत्तिवासेश्वरं लिङ्गं सेव्यं काश्यां ततो नरैः ।
जन्मान्तर सहस्रेषु मोक्षोऽन्यत्र
सुदुर्लभः ॥३९॥

कृत्तिवासेश्वरे लिङ्गे ऽभ्यस्ते एकेन
जन्मना ।
पूर्वजन्मकृतं पापं तपोदानादिभिः
शनैः ॥

नश्येत्सद्यो विनश्येत कृत्तिवासे
श्वरे क्षणात ॥४०॥
[काशी खण्ड अध्याय ६८ ।]

अर्थ — कृत्तिवासेश्वर के पास जो पहुंच जाता है, उसके सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। वह सुखपूर्वक मोक्ष को पाता है जैसे सुकर्म वाले पाते हैं। ३८।

इसलिए मनुष्यों को चाहिये कि काशी में कृत्तिवासेश्वर लिंग का सेवन करें। यहाँ यहाँ वह मोक्ष प्राप्त होता है जो हजारों जन्मों में अन्यत्र दुर्लभ है। ३९।

कृत्तिवासेश्वर लिंग के पूजन से एक ही जन्म में मोक्ष मिल जाता है। पूर्व जन्म के जो पाप तप और दान आदि से धीरे धीरे नष्ट होते हैं, वे सब कृत्तिवासेश्वर के दर्शन से तत्काल नष्ट हो जाते हैं। ४०

~~(काशीखण्ड अध्याय ६८)~~

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

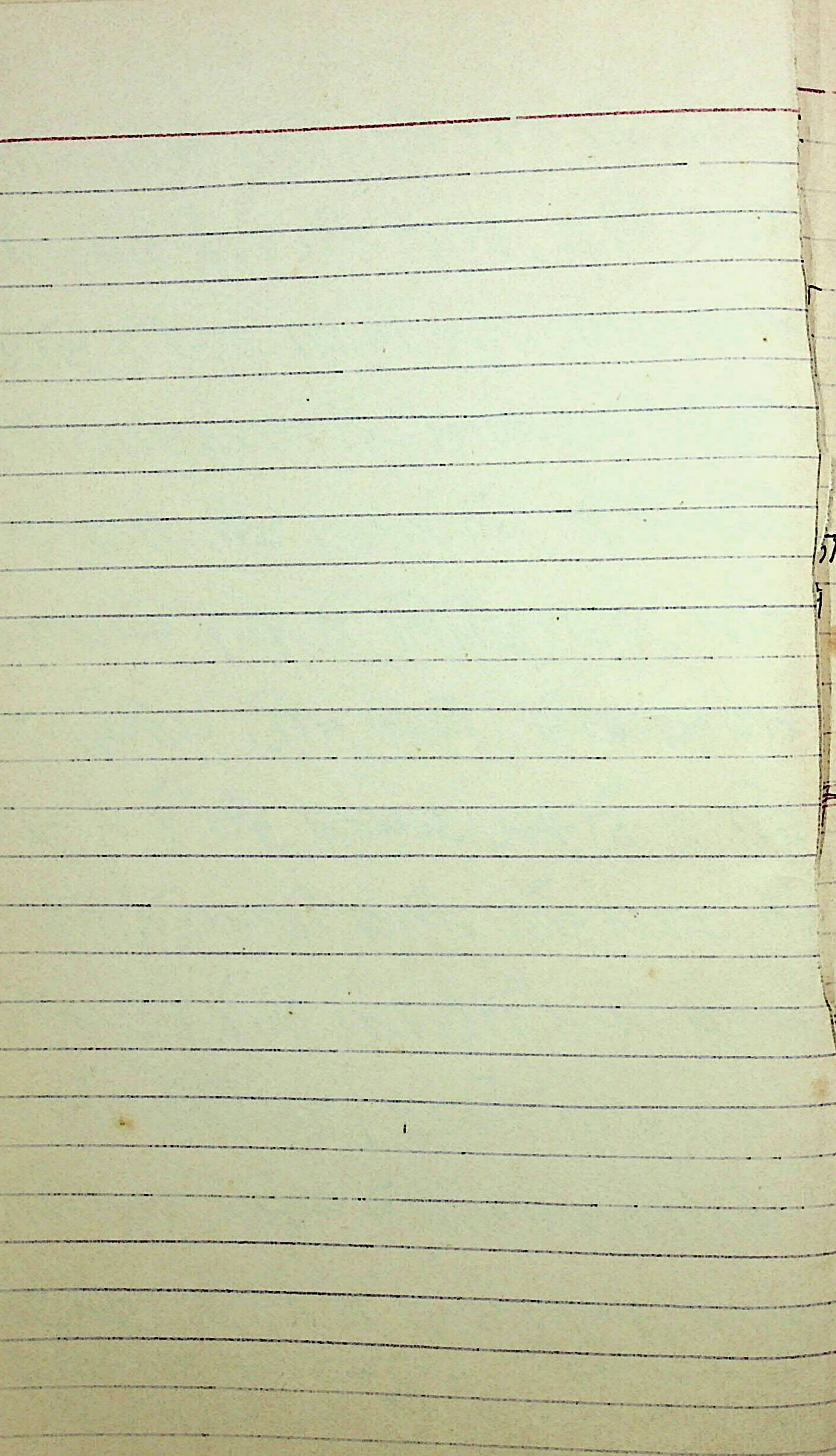
माघकृष्ण मौनी अमावस्या तिथि के
दिन काशी में उत्तर वाहिनी गङ्गा जी में
होसके तो मौन होकर) स्नान करके दर्शन
धार्मिक यात्रा करनी चाहिये। स्नान करने
के पश्चात। लोटा, घड़ा आदि में गङ्गा
जल भर कर कपडा से बान
कर चन्दन पुष्प आदि से पूजा करके
शँकल्प करके कुम्भ को दान करें।
उस दिन गौ, अन्न, बस्त्र, औषदी
मकान, जामिन
गरम्कपडा रजाई, कम्बल ऊन के सुइटर
चादर, मिष्ठान्न, ऋतु फल
इत्यादि यथा शक्ति दान करते है।
सबसे ज्यादा दशाश्वमेध घाट भीड़ होती

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

[गुरुजी दान किसलिये किया जाता है
उत्तर वेद, पुराण और धर्म शास्त्र के
आज्ञानुसार दान किया जाता है, ~~और~~
(तथा) वेद व्यास जी स्कन्द पुराण में
लिखते है जो मनुष्य पूर्व जन्म में
दान, यज्ञ (अतिथि सेवा) परोपकार
तपस्या नहीं किया वाही व्यक्ति गरीब
दरिद्र होकर उत्पन्न हुये है। आज
जो आप को गरीब दिखाई देते है उनैं।
ने पूर्व जन्म में धनी होते हुये भी
दान नहीं किया। इस लिये प्यारे आत्मा
प्रति दिन पूजा करने के पश्चात दान करो।
भगवान चार हाथ से देते है तुम मुट्ठी बान्ध
कर जन्म लिये थे हाथ फैला कर मर जावोगे।
तुम को जो कुछ मिला है यहीं मिला है और
यहीं छोड़कर जाओगे ।]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

काशी मे गंगा, भग दशाश्वमेध यात्री स्नान करते है। प्रकाशक

यात्रियो को सुरक्षा और व्यवस्था करें यात्री लोग नौका से स्नान करने वालौं का दर्शन करते है। अमावस्या के दिन साधु, संन्यासी, ब्राह्मणौं को भोजन कराते है।

माघ कृष्ण अमावस्या तिथि के दिन विश्वराष्ट्र में रहने वाले भक्तगन गङ्गा, नदी, आदि तीर्थों में या घाट में स्नान ~~में स्नान~~ करके यथा शक्ति दान करते है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अविमुक्तेश लिङ्गस्य भक्तिवन्त्र
धरो यदि ॥ ६१ ॥
काविमुक्तं महालिङ्गं चतुर्वर्ग
फलोदयम् ।

कपापि पापशैलोऽल्पो यः क्षयेन्न
स्मि संस्मृते ॥ ६२ ॥

अविमुक्ते महाक्षेत्र विश्वेशसम-
धिष्ठिते ॥ ६३ ॥

येनं दृष्टं

अविमुक्तेश्वरं येन पाभ्यामै क्षिष्टयः
स्पृशेत् ॥ ६५ ॥
त्रिसन्ध्यमविमुक्तेशं योजपेन्नियतः
शुचिः ।
दूरदेश विपन्नोऽपि काशीमृत फलं
लभेत् ॥ ६६ ॥
[का॰ खं॰ अ॰ ३६]

अर्थ— यदि अविमुक्तेश्वर लिंग में भक्ति है तो (७१)
चारों वर्ग के फल को देने वाला अविमुक्तेश
महालिंग से बढ़कर दूसरा लिङ्ग कहाँ है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पापियों का पाप पहाड़ बहुत छोटा है जो अवि-
(मुक्तेश लिङ्ग रूपी अग्नि के स्पर्श से नाश हो जाता है)
वह अविमुक्तेश श्री विश्वनाथ जी के पास है (श्लो२)
॥ श्लो३½ ॥

अविमुक्तेश्वर लिंग [illegible] जिसने देवों का
स्पर्श किया। श्लो४।
जो व्यक्ति पवित्र होकर तीनों संध्याकालों में
अविमुक्तेश का जप करता है, वह दूर कहीं भी मरे
उसे काशीमरण का फल प्राप्त होता है। श्लो६।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अविमुक्तं महालिङ्गं दृष्ट्वा ग्रामान्तरं -
व्रजेत् ।

लब्ध्वाऽऽशु कार्यसंसिद्धिं क्षेमेण
प्रविशेद् गृहम् ॥८७॥
काश्यामप्रयत्नतः सेव्यमविमुक्तं विमुक्तये । ८८/२ ।

आयान्ति तानि लिङ्गानि माघीं प्राप्य
चतुर्दशीम् । ८८/२ ।
कृष्णायां माघभूतायामविमुक्तेश जागरात् ।
सदाविगतनिद्रस्य योगिनो गतिभाग्भवेत्
॥ ८९ ॥ का. खं. अ३९

अर्थ -

अविमुक्तेश महालिंग का दर्शन करके जो व्यक्ति बाहर किसी ग्राम को जाते हैं तो शीघ्र ही कार्य सिद्ध होते हैं और कल्याण के साथ घर में प्रवेश करते हैं /८७
विमुक्ति के लिए काशी में अविमुक्तेश्वर की सेवा यत्न पूर्वक करनी चाहिये ८८ ।

माघ कृष्ण चतुर्दशी को जो अविमुक्तेश्वर के पास में जागरण करते हैं, निद्रा रहित उस व्यक्ति की गति योगी की गति होती है / का. खं. ३९ ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नानायतन लिङ्गानि चतुर्वर्ग प्रदान्यपि ।
अविमुक्तेशनामाऽपि श्रुत्वा जन्मार्जिताद्घात् ॥
क्षणान्मुक्तो भवेन्मर्त्यो नात्र कार्या विचारणा ।८१॥
अविमुक्तेश्वरं लिङ्गं स्मृत्वा दूरगतोऽपि च ।
जन्मद्वय कृतात् पापात् क्षणादेव विमुच्यते ॥८२॥
अविमुक्ते महाक्षेत्रेऽविमुक्त भवको क्य च ।
त्रिजन्म जनितं पापं हित्वा पुण्य-मयो भवेत् ॥८३॥

यत्कृतं ज्ञान विभ्रंशादेनः पञ्चसु जन्मसु ।
अविमुक्तेश संस्पर्शात् क्षयेदेव नाऽन्यथा ॥ ८४ ॥(का० खं० अ० ३६)

अर्थ— अनेक मन्दिरों में लिङ्ग चतुर्वर्ग फल देने वाले हैं ।
किन्तु अविमुक्तेश्वर के नाम स्मरण करने से अनेक-पूर्व जन्मों के पाप क्षण भर में नष्ट हो जाते हैं, इसमें थोड़ा भी विचार नहीं करना चाहिये। ८१।
अविमुक्तेश्वर लिङ्ग का स्मरण दूर से किया जाय तो भी दो जन्मों के पाप क्षण भर में नष्ट हो जाते हैं। ८२
अविमुक्तेश्वर महाक्षेत्र में जो अविमुक्तेश का दर्शन करते हैं, उसके तीन जन्मों के पाप नष्ट हो जाते हैं और वह पुण्यमय हो जाते हैं। ८३।
अज्ञानवश जो पांच जन्मों में पाप किया है वे सब पाप अविमुक्तेश के स्पर्श करने मात्र से नष्ट हो जाते हैं। इसमें शंका नहीं करनी चाहिये। (८४ का० खं० ३६)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माघ शुक्ल प्रतिपदा तिथि के दिन

भैरवेश्वर दर्शन, पूजन, वार्षिक यात्रा करने वाले नर, नारियों को स्कन्द पुराण, पद्म पुराण, ब्रह्म वैवर्त पुराण में इस दिन इन के दर्शन करने वाले व्यक्ति को भैरवी यात्रा नहीं होती है। भैरवेश्वराय नमः [मन्दिर नम्बर K. 63/23 पश्चिम बंगाल कैफे के पीछे मुहल्ला काल भैरव। मन्दिर से ... मन्दिर में है।

माघ शुक्ल द्वितीया तिथि के दिन

षडङ्ग दर्शन यात्रा करें। इस दिन यह यात्रा करने वाले व्यक्ति के मनोरथ सिद्ध होते हैं।

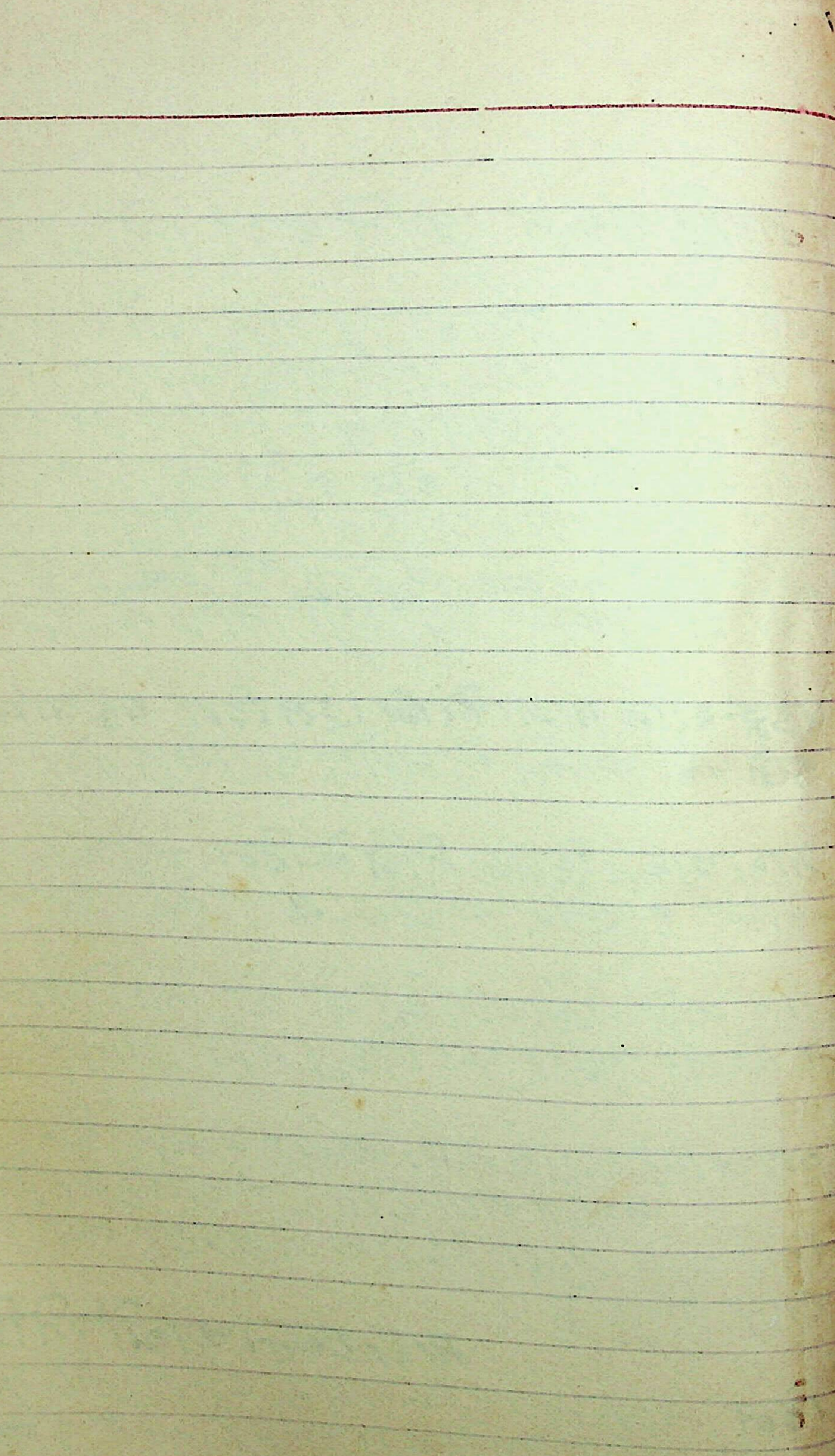
माघ शुक्ल द्वितीया तिथि के दिन चतुष्षष्टिश्वर दर्शन, पूजन वार्षिक यात्रा करें। इनके

दर्शन करने वाले व्यक्तियों को काशीवास में किसी प्रकार का विघ्न नहीं आता। [3

चतुष्षष्टिश्वराय नमः [मन्दिर नम्बर डी. मुहल्ला चौषष्टि घाट, चौषष्टि मठ में फाटक के अन्दर शंकर जी के मन्दिर सबसे बड़े शिव लिङ्ग है।

माघ शुक्ल चतुर्थी तिथि के दिन वक्रतुण्ड विनायक दर्शन वार्षिक यात्रा इन के दर्शन से विद्या प्राप्त होता है और विघ्न दूर होते हैं। वक्रतुण्ड विनायकाय नमः

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुहल्ला नौबष्टि घाट सरस्वती गणेश जी के
नाम से प्रसिद्ध है।

माघ मास शुक्ल पञ्चमी तिथि के दिन
एकावन दर्शन वार्षिक यात्रा करें।

सनत्कुमार संहिता के आज्ञानुसार मणिकर्णि
का घाट में स्नान करके अविमुक्तेश्वर
दर्शन पूजन करनी चाहिए।

माघ शुक्ल षष्ठि तिथि के दिन द्वितीन
दर्शन, पूजन वार्षिक यात्रा करें। मणिकर्णि

का घाट पर स्नान करके मणिकर्णिकेश्वर
का दर्शन, पूजन वार्षिक यात्रा -

मणि कर्णिकेश्वर सी० के० ८/१२ में है
मुहल्ला गढ़वासी टोला में दर्शन कर ज्ञानवापी

में जाकर मार्जन करके विश्वनाथ दर्शन
करनी चाहिये। उपनन्दिपुराण में कहा गया
है।

माघ शुक्ल सप्तमी तिथि के दिन त्रिम
तृतियातन मन्त्र दर्शन वार्षिक यात्रा।

लिंङ्गपुराण के नुसार अभिमुक्तेश्वर
सी० के० ढुंढिराजगली। स्वलीनेश्वर
ए० ११/२८ में है मुहल्ला नयामाहादेव प्रहलाद
घाट। मध्यमेश्वर के० ५३/६३ में है मुहल्ले

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माघ शुक्ल अष्टमी तिथि के दिन
चतुर्वक्त्र दर्शन वार्षिक यात्रा।

लिङ्ग पुराण में बतलाई गई है शैले
श्वर ए. मुहल्ला शैलपुत्री]

वरणा गङ्गा सङ्गम मे श्वर ए. मुहल्ला आदि
केशव । खर्वीनिश्वर ए. ११) २८ में

मध्यमेश्वर के. ५३/६३ में है मुचकुन्देश्वर
दर्शन पूजन करने से शुभ कार्य

के सब संकल्प पूर्ण होते है।

माघ शुक्ल अष्टमी के दिन सोलह
भुजा देवी दर्शन वार्षिक यात्रा

कालिका गली से में
(देवी भागवत से)।

माघ शुक्ल नवमी तिथि के दिन
अष्टायतन यात्रा यह लिङ्ग पुराण

के अनुसार है ईश्वर गङ्गी तीर्थ
कुण्ड मे स्नान या मार्जन करके

यात्रा प्रारम्भ होती है। अग्नीश्वर
नागेश्वर के नाम से प्रसिद्ध है।
के. ६५/४ मैं है नरहरी पुरा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

~~मुहल्ला औसानगंज सरस्वती विनायक के~~
~~प्रसाद~~ नाम से प्रसिद्ध

~~माघ शुक्ल प्रति पक्ष~~ तृतीया तिथि

~~के दिन~~ माघ शुक्ल पञ्चमी

के दिन उर्वशीश्वर जे० ५६/१०८ में है
औसानगंज। आषाढेश्वर सी०के० २४
/२४ में है महल्ला रांजादरवाजा।

भारभूतेश्वर सी०के० ५४/४४ में है
मु ~~सत्ता~~

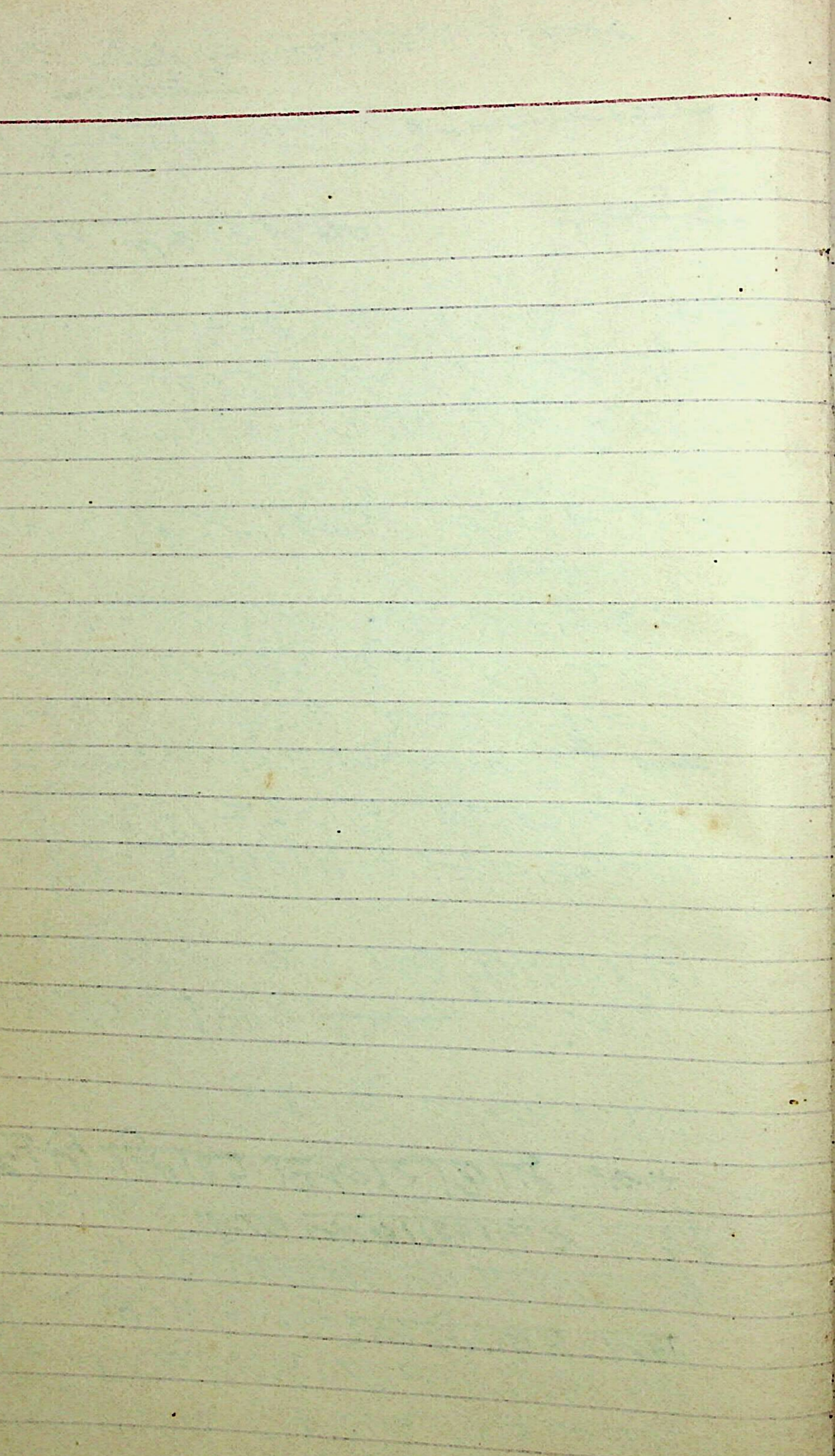
~~नकुलेश्वर सी०~~ लाङ्गलीश्वर सी०के०
२८/४ में है खोवा बाजार।
नकुलेश्वर सी०के० मु अन्नपूर्णा
~~माघ~~ (विश्वनाथ अन्नपूर्णा जी के दर्शन करें गली।

त्र्यंबकेश्वर डी०३८/२१ में है त्रिलोकी
नाथ के नाम से प्रसिद्ध है मु० हौजकटो
रा।

त्रिपुरांतकेश्वर ५८/६५ में है मुहल्ला
शिवपुरा ~~ठिला~~ लाल टीला सिगरा।

दर्शन प्रयत्न से करें।
~~एक~~ माघ शुक्ल दशमी तिथि के
दिन "एकादशायतन यात्रा" प्राचीन
लिङ्गपुराण के अनुमती से लिखे है।
मत: प्रकामेश्वर डी० १०/५० में है मु
मु० साक्षी विनायक। प्रीतिकेश्वर डी० १०/८
में है मु० साक्षी विनायक] मदालसेश्वर डी०
डी० मे है मु०
तिलपर्णेश्वर बी २७/२ में है मु० दुर्गा कुण्ड।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माघ शुक्ल चतुर्दशी तिथि के दिन ढुण्ढिराज गणेश जी दर्शन, पूजन वार्षिक यात्रा प्रयत्न पूर्वक विघ्न शंकट को दूर करने के लिये दर्शन यात्रा करें। ढुण्ढिराज गणपती भ्योनमः [मन्दिर नम्बर सी॰के॰ मुहल्ला अन्नपूर्णा गली]

माघ शुक्ल चतुर्थ्यां तनक्त व्रत परायणाः।

ये त्वां ढुण्ढेऽर्च यिष्यन्ति तेऽर्च्याः स्युरसुर द्रुहाम् ॥४६॥

विधाय वार्षिकीं यात्रां चतुर्थीं प्राप्य तापसीम्।

शुक्लां शुक्लु तिलैर्बद्ध्वा प्राश्नी यात्र ड्डुकान्व्रती॥४७॥ (का॰ख॰ अ॰ ५७)

अर्थ- माघ शुक्ल चतुर्थी को रात्रि व्रत परायण (रात्रि में एकवार फलाहार भोजन) होकर जो ढुंढि विनायक की पूजा करते हैं वे सभी देवताओं की पूजा कर लेते हैं ॥४६॥ व्रती इस प्रकार इस तापसी शुक्ल चतुर्थी को प्रतिवर्ष वार्षिक नियमों को और सफेद तिल का लड्डू बनाकर भोग लगावे और भोजन करे॥४७॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कार्या यात्रा प्रयत्नेन क्षेम सिद्धिमभी
मभीप्सुभिः।
तस्यां चतुर्थ्यां त्वत्प्रीत्यै ढुण्ढे! सर्वो
पसर्गहृत् ॥४८॥

तां यात्रां नात्र यः कुर्यान्नैवेद्यं तिलखण्ड
कैः।
उपसर्ग सहस्रैस्तु स हन्तव्यो ममा-
ज्ञया ॥४९॥
जप त्वत् सन्निधौ ढुण्ढे। सिद्धिं दास्यति
वाञ्छिताम् ॥५०/२
प्रथमं ढुण्ढिराजोऽसि मम दक्षिणतो मनाक्
आढुण्ढ्य सर्व भक्तेभ्यः सर्वार्थान्सम्
पयच्छसि ॥४३
ये त्वामिह प्रति चतुर्थि समर्चयन्ति ढुण्ढे!

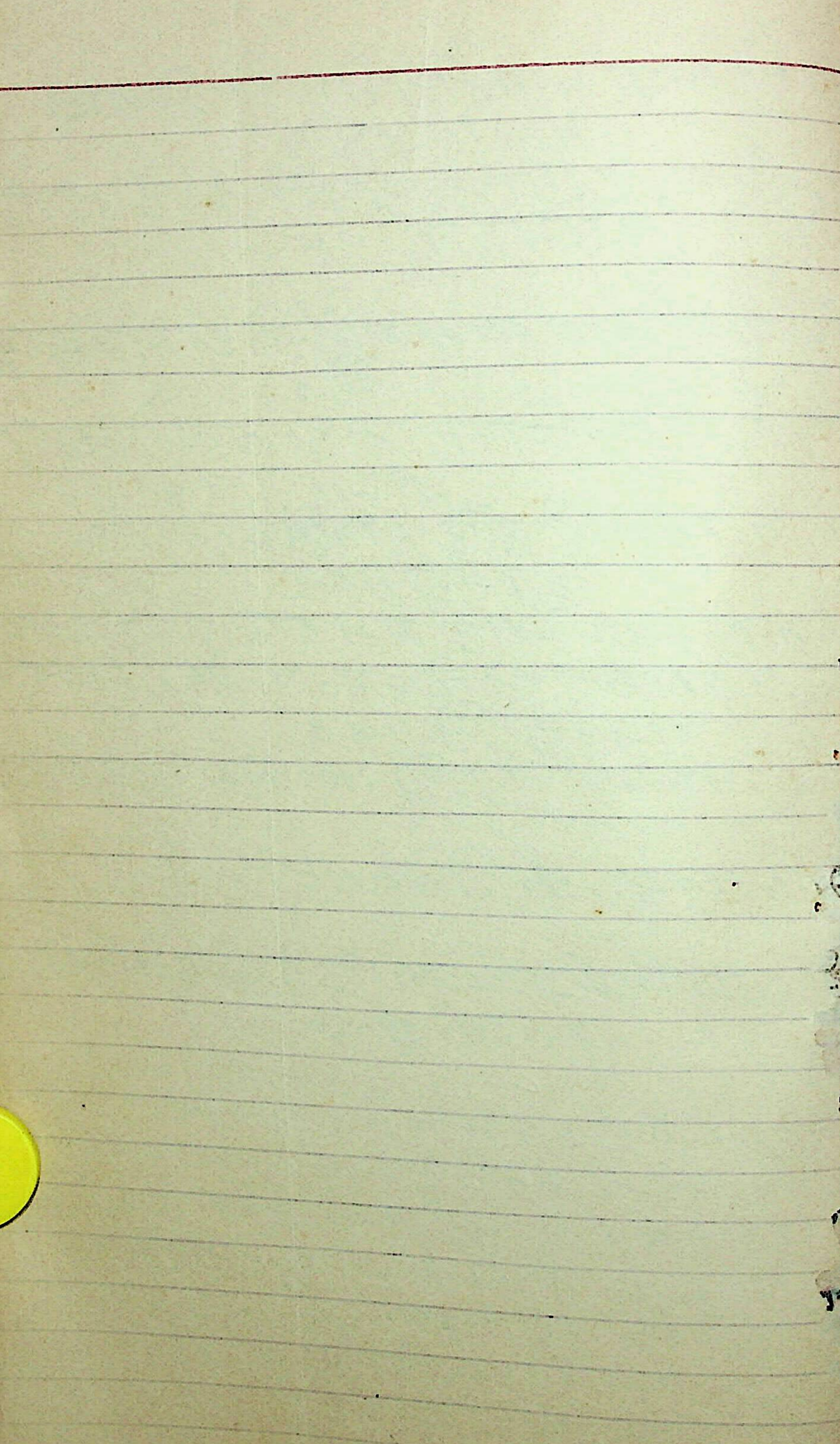
विघ्नात मतयः कृतिनस्त एव।

ढौण्ढी स्तुति मिमां पुण्यां यः पठेत् ढुण्ढि सन्निधौ।
[का॰ख॰ अ॰ ५७]

अर्थ-

इस चतुर्थी को ढुण्ढि ~~विनायक~~ को प्रसन्न करने के लिए सभी
बुराइयों को छोड़कर क्षेम सिद्धि की इच्छा से यात्रा करनी चाहिये
।४८।
ढुण्ढि ~~विनायक~~ कहते हैं कि जो इस यात्रा को नहीं करते
और तिल का लड्डू नहीं चढ़ाता और हजारों उपद्रवों मारा
पड़ता है, ऐसी मेरी आज्ञा है। ४९। ढुण्ढि के पास में
जो जप करते हैं उनकी अभीष्ट को ढुण्ढि सिद्ध कर देते हैं। ५०/२
मेरी दक्षिण दिशा में प्रथम ढुण्ढिराज हैं जो ढूढ कर भक्तों की
सभी कामना पूर्ण करते हैं।४३। जो व्यक्ति प्रति चतुर्थी को है तुम्हारा
पूजन करते हैं, [illegible] और निर्मल मन है जो इस ढुण्ढि स्तुति को
[illegible] के पास पाठ करते हैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(क) २ जिल्द २८)

माघ शुक्ल बसन्त पञ्चमी तिथि के दिन तक्षकेश्वर दर्शन पूजन उत्सव वार्षिक यात्रा करें।
तक्षकेश्वराय नमः [मन्दिर नम्बर · · मुहल्ला · · · अघोरनाथ की तकिया।

माघ शुक्ल पञ्चमी तिथि के दिन बागेश्वरी दर्शन पूजन वार्षिक यात्रा करें।

बागेश्वरी दुर्गा देव्यै नमः [मन्दिर नम्बर जे० ६८/३३ में है मुहल्ला जैतपुरा]
माघ शुक्ल श्रीपञ्चमी तिथि के दिन वार्षिक सरस्वती पूजा, दर्शन उत्सव विश्वराष्ट्र में मनाते है। हमारी काशी में प्रत्येक विद्यालय में सरस्वती पूजा उत्सव मनाया जाता है। दूसरे दिन विशर्जन बहुत उत्सव के साथ बाजा बजाते हुए जलूश के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शाख अपने२ घाट में लेजाते है।
दूर से आने वाले दशाश्वमेध घाट
में विसर्जन करते है।

माघ शुक्ल पञ्चमी के दिन रुद्राक्ष धारण
करना चाहिये।

रुद्राक्षधारण माहात्म्य।

अरुद्राक्षौ जपः पुंसां तावन्मात्रफलप्रदः।
यस्याङ्गे नास्ति रुद्राक्ष एकोपि बहुपुण्यदः॥
विभूतिर्यस्य नो भाले नांगे रुद्राक्षधारणम्।
तं चांचलसमं ज्ञात्वा दूरादेवा परित्यजेत्॥

अर्थ-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माघ शुक्ल षष्ठी तिथि के दिन

मुख प्रेक्षणिका देवी की वार्षिक

दर्शन, पूजन यात्रा करें। [लिङ्गपुराण के अनुसार]

मुख प्रेक्षणिका देव्यै नमः [मन्दिर नम्बर ... में है मुहल्ला मंगला गौरी]

वंदन प्रेक्षणा देवी मुख प्रेक्षेश्वरोत्तरे।

मङ्गलायाः समीपे तु सर्व सिद्धिकरी शिवा ॥१८८॥

लिङ्ग. त्वष्ट्रीशवृत्रेशौ मुख प्रेक्षोत्तरे शुभे।

सहेम भूमिदानस्य फलं दर्शनतस्तयोः।

अर्थ- मंगला देवी के पास में मुख प्रेक्षणेश्वर से उत्तर में सर्व सिद्धि देने वाली मुख प्रेक्षणिका देवी है। १८८।

१ मुख प्रेक्ष से उत्तर में त्वष्ट्रीश तथा वृत्रेश दो लिङ्ग है। जिनके दर्शन से स्वर्ण भूमि के दान का फल प्राप्त होता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अचला
माघ शुक्ल सूर्य रथ सप्तमी अचला
सप्तमी तिथी के दिन लोलार्क कुण्ड
में स्नान लोलार्क सूर्य एवं लोलार्केश्वर
दर्शन यात्रा करनी चाहिये। (और
प्रत्यक रविवार के दिन स्नान करने से
मनोरथ पूर्ण होते है चर्म आदि रोग
कष्ट नष्ट होते है। अचला सप्तमी
के दिन ~~अन्न~~ साधु ब्राह्मणों को जल
पान या भोजन कराकर अचला बस्त्र
देना चाहिए।

लोलार्के रथसप्तम्यां स्नात्वा गङ्गासिसङ्गमे।
सप्तजन्म कृतै: पापैर्मुक्तो भवति तत्क्षणात्।

प्रत्यर्कवारं लोलार्कं य: पश्यति शुचिव्रत:।
न तस्य दु:खं लोकेऽस्मिन्कदाचित् सम्भविष्यति
॥४६॥
न तस्य दु:खं नोपामा न दद्रुर्न विचर्चिका।
अर्थ –

सत संग की बहि गंगा।
बहती है गुरु देव।
तुम्हारे चरणों में।
मिलता है सब फल
तीर्थों का गुरु देव
तुम्हारे चरणों में
सत संग - - - - - - - - -

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गंगा-अस्सी संगम के पास

अर्थ – माघमें रथसप्तमी को, लोलार्क कुण्डमें स्नान करने से सात जन्मों के उपार्जित पाप क्षण भर में नष्ट हो जाते हैं।

जो व्यक्ति पवित्रता का व्रत लेकर प्रति रविवार को लोलार्क का दर्शन करता है, उसको दुनिया में कभी कष्ट नहीं होता। ॥५६॥ उसको दुःख नहीं होता और खुजली दाद तथा शीतला भी नहीं होती।

माघ शुक्ल सप्तमी तिथि को दिन केशवादित्य दर्शन पूजन वार्षिक यात्रा वरुणा संगमेश्वर के मन्दिर के बगल में केशवादित्य सूर्य है।

केशवादित्याय नमः [मन्दिर नम्बर– ए० ३७/५१० मुहल्ला आदिकेशव बसन्त कालेज

अगस्ते ! रथसप्तम्यां रविवारो यदा भवेत। तदा पादोदके तीर्थे आदि केशव सन्निधौ। ॥७६॥

स्नात्वोपवासिनरो मौनी केशवादित्य पूजनात् सप्तजन्मार्जितात् पापान्मुक्तो भवति ॥७७॥ तत् क्षणात्

यद्यज्जन्म कृतम्पापं मया सप्त सुजन्म सु। तन्मे रोगं च शोकं च माकरी हन्तु सप्तमी ॥७८॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यतज्जन्मकृतं पापं यच्च जन्मान्त
राजितम् ।
मनोवाक्कायजं यच्च ज्ञाताज्ञाते चये
पुनः ॥७९॥ (पुनः)
इति सप्त विधं पापं स्नानान्मे सप्त
सप्तिके ।
सप्तव्याधि समायुक्तं हर माकरि सप्तमि
सप्तमि ! ॥८०॥
एतन्मन्त्रत्रयं जप्त्वा स्नात्वा पादोदकेनरः ।
केशवादित्य मालोक्य क्षणान्निष्कलुषो
भवेत् ॥८१॥
८

केशवादित्य माराध्य वाराणस्यां नरोत्तमः ।
[काशी खण्ड अ॰]

अर्थ -

हे अगस्त्य - रथसप्तमी यदि रविवार को पड़ जाय तो आदि केशव के पास में पादोदक तीर्थ में स्नान कर के उपवास कर के और मौन होकर जो केशवादित्य का दर्शन करता है वह सप्त जन्मों में अर्जित पाप से मुक्त हो जाता है। ७६-७७।

मैंने सात जन्मों में जो जो जन्मकृत पाप किये हैं, हे माकरी सप्तमी तुम मेरे उन रोगों और पापों को नाश करो। ७-८। हे सप्तसप्ति के जो जन्मकृत पाप हैं जो जन्मान्तरार्जित पाप हैं जो मन वाणी और काय से कृत पाप हैं और जो पुनः ज्ञात एवं अज्ञात पाप सात प्रकार के हैं वे मेरे सब पाप स्नान से नष्ट हो जाय हे माकरि सप्तमी मेरे सातों व्याधि युक्त पाप दूर करो। ७९-८०।
जो नर [illegible] को पादोदक तीर्थ में स्नान करके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चतुर्मासा महिमा काशीखण्ड मे उद्धृत

प्रीतिकेश्वर का० ख० अ० ८७ श्लोक २१८ में
माघ शुक्ला ।

केसे

केशवादित्य के दर्शन करता है। क्षण भर में वह निष्पाप होजाता है। २९।

माघ शुक्ल सप्तमी तिथि के दिन १२ दित्य बार सूर्य प्रदक्षीणा दर्शन वार्षिक यात्रा अँवकाशलेकर पुरुषार्थ करके सूर्य यात्रा करनी चाहिये। सूर्य यात्रा करने वाले नर, नारियों के नेत्र सन्बन्ध रोग अच्छे होते है। आंख की रोषनी बढ़ती है, और स्कन्द पुराण में कहा गया है की सूर्य यात्रा करने वाला व्यक्ति कभी भी दरिद्र नहीं होता यदि गरीब हो तो धनी होजाता है। १२ दित्य यात्रा ३ से १२ तक प्रदक्षीणा यात्रा करनी चाहिए।

माघ शुक्ल अष्टमी तिथि के दिन चामुण्डा - चर्ममुण्डा देवी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

व दर्शन वार्षिक यात्रा करें।
इनके दर्शन से रोग, कष्ट दूर होते हैं।
चामुण्डा देव्यैनमः [मन्दिर नम्बर
बी०   में है मुहल्ला लोलार्क]
माघ शुक्ल एकादशी तिथि के दिन प्रातः
निर्वाण केशव वार्षिक दर्शन, पूजन
यात्रा यह सिद्ध मूर्ति है इन को वर्दान
है इन के दर्शन, पूजन करने वाले
व्यक्ति को शिव, विष्णु की भक्ति
प्राप्त होती है। माघ शुक्ल
एका दशी तिथि के दिन पिता महेश्वर
दर्शन पूजन वार्षिक यात्रा
पितामहेश्वरायनमः [मन्दिर नम्बर सी
सी०के० ७/९१ में है मुहल्ला सिद्धेश्वरी]
इस एकादशी तिथि के दिन तील का लड्डू
और फल दान करनी चाहिए।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माघ शुक्ल एकादशी तिथि

तिथि के दिन अस्सी माधव और एवं

त्रिविक्रमेश्वर दर्शन, पूजन वार्षिक

यात्रा करें।

अस्सी माधवायनमः [मन्दिर नम्बर
बी० में है मुहल्ला तुलसीघाट]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

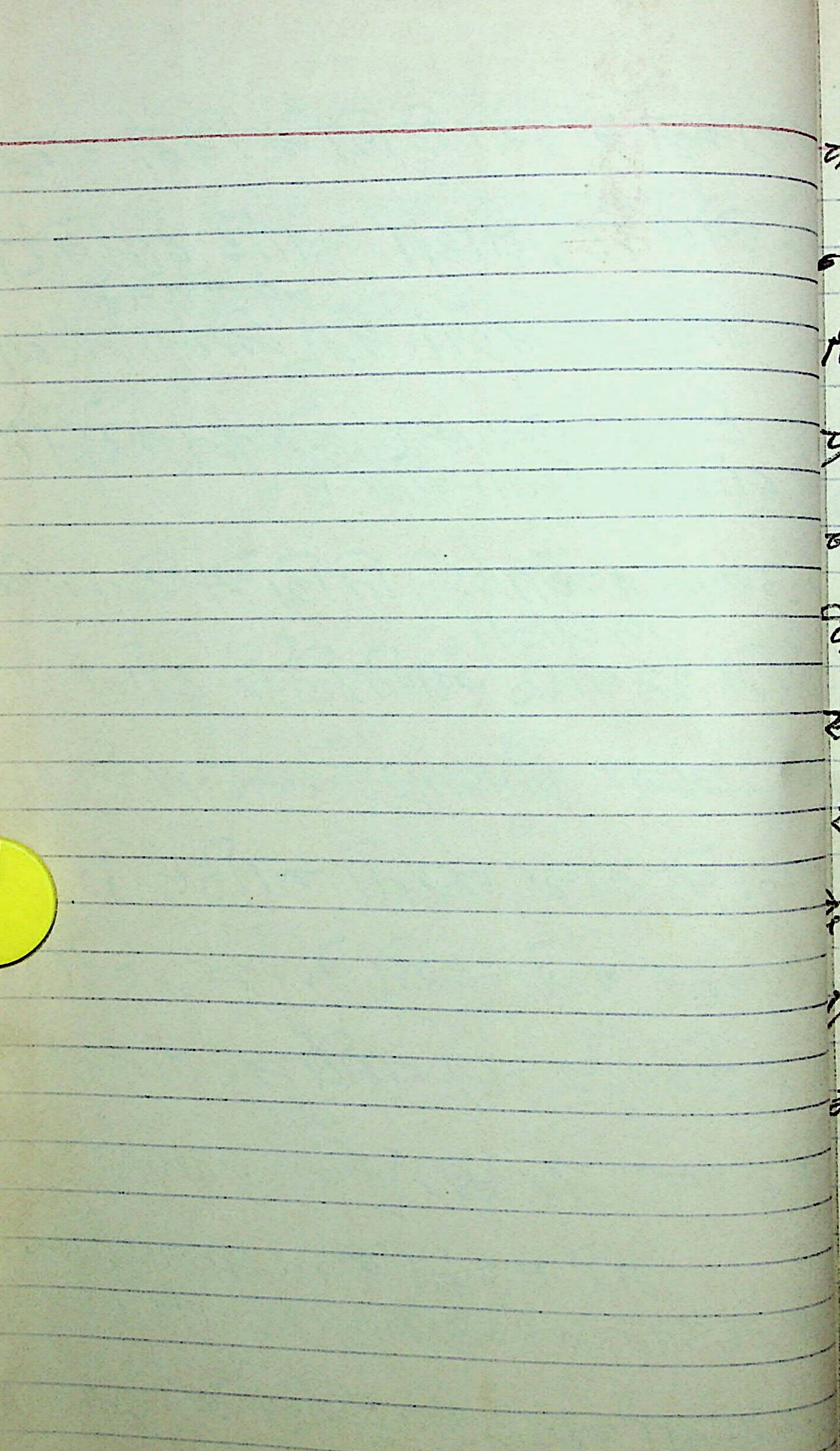
माघ शुक्ल द्वादशी तिथि के दिन अन्न, वस्त्र, औषदी, सीधा आदि दान करें। और साधु, ब्राह्मणों को पैर धोते है माला पहिनाते है, टीका लगाकर भोजन कराते है। वस्त्र दक्षिणा दिया जाता है।

माघ शुक्ल त्र्योदशी तिथि के दिन वार्षिक यात्रा –
काशी में १२ बारह ज्योतिर्लिङ्ग दर्शन पूजन यात्रा अवकाश लेकर बड़ी उत्साह के साथ करनी चाहिए।

माघ शुक्ल त्र्योदशी के दिन हरीहरेश्वर दर्शन, पूजन वार्षिक यात्रा करें।
श्री हरे श्वराय नमः [मन्दिर नम्बर
नं० में है मुहल्ला केदारघाट करपात्री धाम पर काशी रहस्य के आश्रम धाम । से।

माघ शुक्ल चतुर्दशी तिथि के दिन परसरेश्वर दर्शन, पूजन वार्षिक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पूजा करें। इनके दर्शन करनेवाले

नरनारी यो को धन मान, बुद्धिमान

विद्वान पुत्र, पौत्र, परपौत्र की

प्राप्ती होती है। (यह स्कन्द पुराण से)

काशी माघ शुक्ल पूर्णिमा तिथि के

दिन प्रात: नित्य कर्म से निवृत होकर

एक थालि में तील का लड्डू वस्त्र

रूपया रखकर ब्राह्मणों को दान

देना चाहिये। उस दीन साधु ब्राह्म

णों को भोजन करना चाहिये।

माघ पूर्णिमा के दिन यज्ञ, कीर्तन,

अखण्ड कीर्तन -

और २ अखण्ड रामायण करते

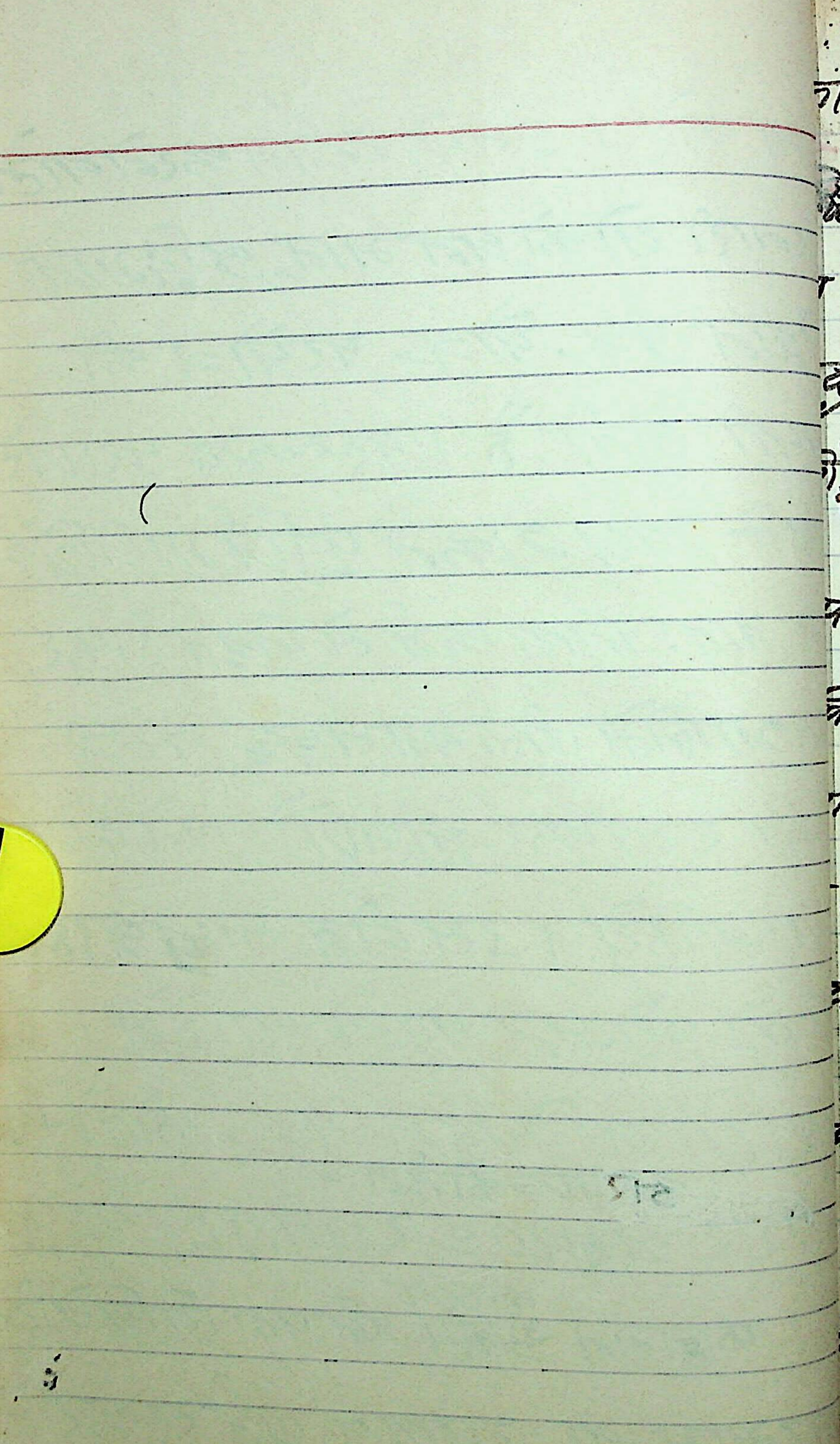
है। फाल्गुन ~~शुक्ल~~ कृष्ण प्रती पदा तिथि के दिन

माघ मास भर उपवास, व्रत रहकर

कल्पवास करते है उन के ~~माघ~~ व्रत समा

प्त होता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कृष्ण
फालगुन ~~शुक्ल~~ तृतिय तिथि के दिन
...श्वर दर्शन पूजन वार्षिक यात्रा
... दिन इन के दर्शन करने से सबकोई
...द होते है। [शिवपुराण से]
...केश्वरायनमः [मन्दिर नम्बर बी० में है
मुहल्ला अस्सी गोयनका महाविद्यालय
कृष्ण
फाल्गुन ~~शुक्ल~~ चतुर्थी तिथि के दिन
...श्वनाथ गणेश दर्शन, पूजन वार्षिक
यात्रा करें। फालगुन कृष्ण पन्चमी तिथि
...दिन जनकेश्वर दर्शन, पूजन वार्षिक
यात्रा। जनकेश्वरायनमः [मन्दिर ~~तुलसीघाट~~
नम्बर बी० में है मुहल्ला तुलसीघाट]
फालगुन कृष्ण सप्तमी तिथि के दिन
काशी के सप्त ऋषि दर्शन, पूजनयात्रा
श्रद्धा भक्ति से युक्त होकर यात्रा करें।
में
फालगुन कृष्ण सप्तमी ~~मी~~ के दिन शुपर्केश्व
...श्वर दर्शन पूजन ~~...~~ वार्षिक यात्रा दुर्गाकुण्ड

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पर कुक्कुटेश्वर के मन्दिर में है
इनके दर्शन से शुभकार्यों की सिद्धि
होती है। [वह गणेश उपउराण से]
फाल्गुन कृष्ण अष्टमी तिथि के
दिन मोक्षलक्ष्मी दर्शन, पूजन वार्षिक
यात्रा इनकी दर्शन करने से ऐश्वर्य
की प्राप्ति होती है। मोक्षलक्ष्मी देव्यै नमः
[मन्दिर नम्बर बी० में है मुहल्ला केदारघाट]
इसी अष्टमी के दिन भैरवी भैरव
काल भैरव दर्शन वार्षिक यात्रा
अष्टमी तिथि के दिन मंगलवार पड़े
~~तो होती~~ उस दिन महायोग है, उस दिन
दर्शन करने से सर्वार्थ सिद्धी होती है।
फाल्गुन कृष्ण नवमी तिथि के दिन
कृत्तिवासेश्वर, त्रिपुरहरेश्वर, रत्नेश्वर
दर्शन पूजन यात्रा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फालगुन कृष्ण नवमी तिथि के
दिन ४२ सिद्ध लिङ्ग मध्ये तृतीय
१४ महालिङ्ग दर्शन यात्रा करनी
चाहिए। यह यात्रा करने वाले व्यक्ति
के सब कार्य सिद्ध होते है।
फालगुन कृष्ण दशमी तिथि के दिन
भूतनाथेश्वर दर्शन, पूजन वार्षिक
यात्रा। भूतनाथेश्वराय नमः [मन्दिर
नम्बर डी॰ में है मुहल्ला भूतनाथ
दशाश्वमेध] फालगुन कृष्ण
एकादशी तिथि के दिन केदार विष्णु दर्शन
पूजन वार्षिक यात्रा करें। केदारेश्वर के
मन्दिर में पश्चिम, दक्षिण के कोने में है। केदार
ईश्वर विष्णु के दर्शन करने वाले नर, नारियों
को शिव, विष्णु की भक्ति प्राप्त
होती है। इन विष्णु को शंकर भगवान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बरदान दिया है]

फाल्गुन कृष्ण द्वादसी तीति के दिन काशी के अविमुक्त प्रदक्षिण दर्शन यात्रा। इस यात्रा को करने से काशी ~~में~~ ~~मन~~ वाणी से स्थूल पा होते हैं उन का और काशी में मल, मूत्र त्याग करने से जो पा होता है उनके पापों का प्रायश्चि त्त होजाता है। अतः ॐ लेकर प्रयत्न पूर्वक यात्रा के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

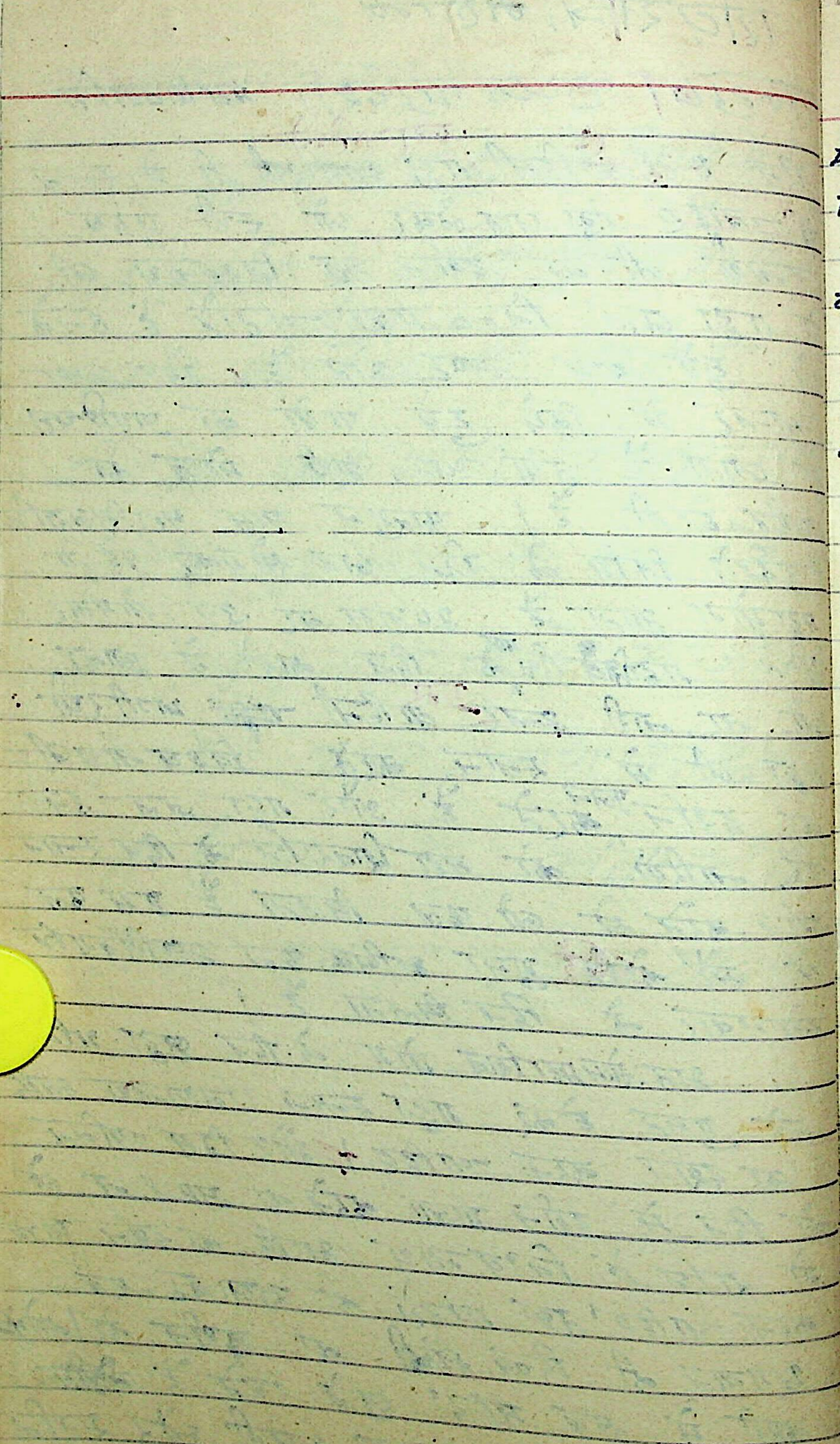
" महाशिव रात्रि महिमा "

फाल्गुण कृष्ण चतुर्दशी महाशिवरात्रि के दिन उत्तरवाहिनी गङ्गा जी में स्नान करके गङ्गा जल लेकर जो स्त्री पुरुष विश्वनाथ जी का दर्शन कर विश्वनाथ जी को गङ्गा जल विल्व पत्र चढ़ाते हैं उनके किये हुये पाप नष्ट होते हैं और जन्म जन्मान्तर में किये हुये पापों का प्रायश्चित्त हो जाता है तथा धर्म, अर्थ, मोक्ष की प्राप्ति होती है। फाल्गुन मास महाशिवरात्रि चतुर्दशी तिथि के दिन जब सोमवार पड़े तो महायोग आता है, उपवास कर उस सोमवार युक्त महाशिवरात्रि योग के दिन काशी में आकर जो नर, नारी उत्तर वाहिनी भागीरथी गङ्गा जी में स्नान करके विश्वनाथ जी का दर्शन पूजन करते हैं और गङ्गा जल उन नर, नारियों को महाशिवरात्रि के दिन स्नान दर्शन करने से जो फल मिलता है उस फल से सौ गुना अधिक फल महाशिवरात्रि सोमवार के दिन मिलता है।

अतः सोम महाशिव योग के दिन श्रद्धा, भक्ति से युक्त होकर गङ्गा स्नान विश्वनाथ आदि का दर्शन करना चाहिए और जिस व्यक्ति को दिन में दर्शन यात्रा करने का समय न हो तो रात्रि में विश्वनाथ आदि का दर्शन यात्रा करना चाहिए तथा मन्दिरों की सजावट, एवं भगवान की दिव्य झाँकी का दर्शन करें। क्योंकि काशी में सब मन्दिर खुले रहते हैं और स्तुति कीर्ति पाठ चार पहर पूजा आरती

P.T.O

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

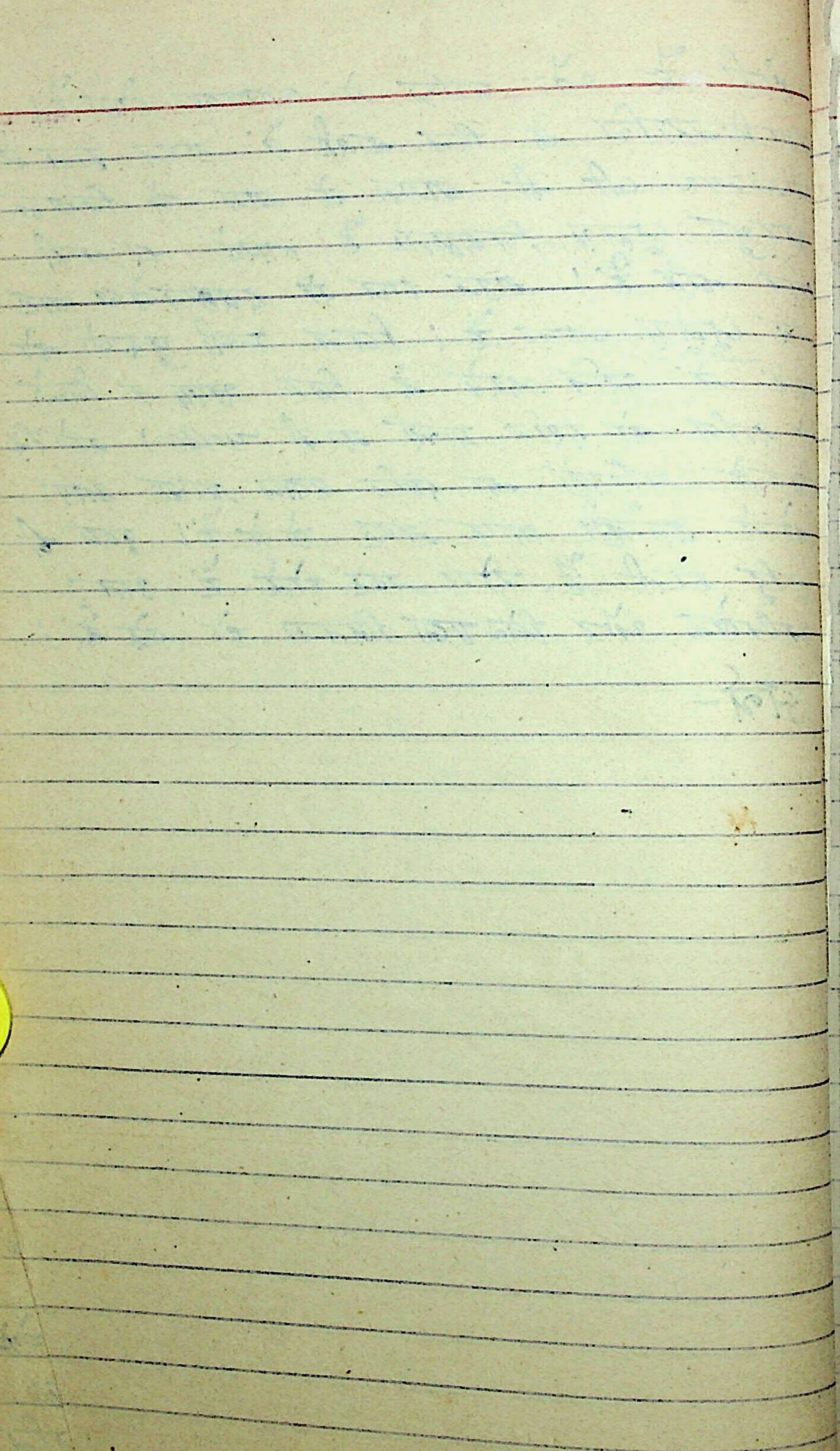


CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होती है और रात्रि में जागरण होता है।
महा शिवरात्रि के दिन काशी में टाउन हाल से
विश्वनाथ जी की बारात के नाम से विशाल
अद्भुत जुलूस निकलता है। लाखों नर-नारी
दर्शन करते हैं। टाउन हाल से दशाश्वमेध घाट
तक जुलूस जाता है। जिन स्त्री पुरुषों को
दिन में दर्शन करने के लिए समय न मिले
तो रात्रि को दर्शन यात्रा करनी चाहिए। क्योंकि
जितने मन्दिरों का दर्शन पूजन, यात्रा आप
करेंगे उतनेही पाप नष्ट होते हैं। पुण्य की
वृद्धि होती है रोग नष्ट होते हैं अतः
अभिषेक और शिव पूजा जितना हो सके करें।

अर्घ-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"काशीमें महा शिव रात्री प्रव"
फालगुन कृष्ण चतुर्दशी तिथि
के दिन प्रातः गङ्गा (आदि तीर्थों)
में स्नान करके प्रातः ४ चार
बजे से नर, नारि काशी विश्व
नाथ जी के दर्शन करने के
लिये पङ्ती में लगे रहते है
हाथ में पूजा की सामग्री
गङ्गा जल लिये हुए है। विश्व
नाथजी की जये हो। हर हर
महा देव आ बाबा विश्वनाथ
घोष करते हुए दर्शनार्थी
लाइन में खडे रहते है, हर हर
महादेव सम्भो काशी विश्वनाथ
गङ्गे। कीर्तन करते हुये धीरे धीरे
काशी विश्वनाथ जी का रात्री
११ बजे तक दर्शन करते है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

महाशिवरात्रि के दिन प्रातः विश्वनाथ जी के दर्शन करके काशी के स्वच्छ शरीर वाले नया युवक एक दिन की पञ्च क्रोशी यात्रा करने ~~है~~, जाते है सायं ६ बजे तक यात्रा पूर्ण करके विश्वनाथ जी का दर्शन करते है यह हमारी काशी की परम्परा है। [redacted] शिव रात्री के दिन सभी शिव मन्दिरों में सजावट करते और प्रकाश करते है। दर्शनार्थीयो की भीड़ रहती है, काशी के प्रमुख शिव शंकर जी के मन्दिर यह है केदारेश्वर, तीलभाण्डेश्वर, धर्मेश्वर, भवानीशंकरेश्वर, मृत्युन्जय, नागेश्वर, इन मन्दिरों में दर्शन करने वालों के पङ्ती लगे रहते है।

काशी में लगभग पाँच लाख यात्री दर्शन करते है प्रत्येक घाट में वहुत में स्नान करने वालों का भीड़ रहे होता है। विदेश से आये हुए यात्री नौका से स्नान करने वालों का दर्शन करते है उस दिन स्टेशन से दशाश्वमेध घाट तक पैदल यात्री जुलूस के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तरह आते है। महा शिव रात्रि के दिन विश्व नाथ घाट में स्थित स्वामी हरिहरानन्द सरस्वती (करपात्री) जी महाराज के कर कमलों से स्थापित

विश्वनाथ जी के मन्दिर में प्रात: छ बजे से दूसरे दिन छ बजे तक एक सौ आठ ब्राह्मण द्वारा अखण्ड अभिषेक जलधारा होता है। दर्शन करने वालों का तांता लगा रहता है, रात्री में विधिवत

शास्त्र विधि से चार पूजा होते है और रात्री में जागरण कीर्तन करते है। टाउन हाल से विश्वनाथ जी के बरात के नाम से विशाल जुलुस निकल कर गोदौलिया जाती है।

काशी के श्रद्धालु भक्त केदार घाट में स्नान करके घडा में गङ्गाजल भरकर केदार जी को चडाते है, पुन: केदार घाट में जाकर अपने अपने घड़ा भरकर कन्धे में रख कर के काशी के प्रमुख मन्दिरों के दर्शन करके जल चडाते है। प्रमुख मन्दिर निम्नां कित है केदारेश्वराय नम:, रघुनाथेश्वराय नम:, तीन भाण्डेश्वराय नम:, गौतमेश्वराय नम:, गम्बकेश्वर, भवानी शंकरेश्वर, विश्वनाथ जी धर्मेश्वर, उपशान्तेश्वर,
गभस्तीश्वर, त्रिलोचनेश्वर, ओंकारेश्वर, कृत्तिवासेश्वर, महाकालेश्वर, मृत्युन्जयेश्वर, मध्येश्वर, जागेश्वर, ~~[illegible]~~ ज्येष्टेश्वर,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फाल्गुन ~~कृ~~ कृष्ण अमावस्य तिथि

~~के~~ दिन महाशिव रात्री व्रत समापन

गङ्गा (आदि) में स्नान कर संध्या

~~आदि~~ इत्यादि से निवृत होकर शिव

पूजा करने के पश्चात् यथा शक्ती दान

करते है। फाल्गुन, शुक्ल प्राति पदा तिथि के

~~करें। इस~~ दिन बाहर से आय हुए यात्री

काशी के मन्दिर तथा दर्शन स्थल में जाकर

दर्शन करते है। दुर्गा जी, गौरीशंकर, मोचन, मानस मन्दिर

काशी हिन्दु विश्व विद्यालय कला भवन

रामनगर का किला, भारत माता मन्दिर,

धूप चण्डी,

सारनाथ आदि दर्शन स्थल का दर्शन

करते है।

फाल्गुन शुक्ल प्राति पदा तिथि के दिन

~~पञ्च~~ विश्वनाथ नित्य दर्शन यात्रा

करते है। स्वर्ग द्वारेश्वर दर्शन पूजन

वार्षिक यात्रा करें।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

३४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वर्गद्वारेश्वरायनमः [मन्दिर नम्बर सी० के० .. मुहल्ला ब्रह्मनाल]

फाल्गुन शुक्ल द्वितिया तिथि के दिन

दिन प्रातः काशी की पञ्चक्रोशी यात्रा। पहले

२५ पचीस हजार यात्री यात्रा करने जाते थे।

पञ्चक्रोशी मार्ग में प्रत्येक पडाव में धर्मशाला रहने के लिये बना है। भोजन की

सब सामग्री प्रत्येक पड़ाव में दूकान

में सामान मिलता है।

फाल्गुण शुक्ल तृतिया तिथि के

दिन मोक्षद्वारेश्वर दर्शन, पूजन वार्षिक

यात्रा इस दिन इनके दर्शन करने वाले नर-नारियों को मुक्ति का साधन प्राप्त होता है

मोक्षद्वारेश्वरायनमः [मन्दिर सी० के० ३२/१० में हैं मुहल्ला ललीता घाट कारूणेश्वर के मिन्दिर में है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फाल्गुन शुक्ल चतुर्थी तिथि के
दिन वरद विनायकेश्वर दर्शन वार्षिक
यात्रा। गणेश उपपुराण में इन को वर
दान है कि इन के दर्शन, पूजन उपास
ना करने वाले स्त्रि, पुरुषों के कष्ट
विघ्न नष्ट हो जाते है।

वरदविनायकाय नमः [मन्दिर नम्बर
ए०१३/३० में है मुहल्ला नया महादेव राजघाट

फाल्गुन शुक्ल पञ्चमी तिथि के दिन
पञ्च पाण्डवेश्वर दर्शन, पूजन वार्षिक

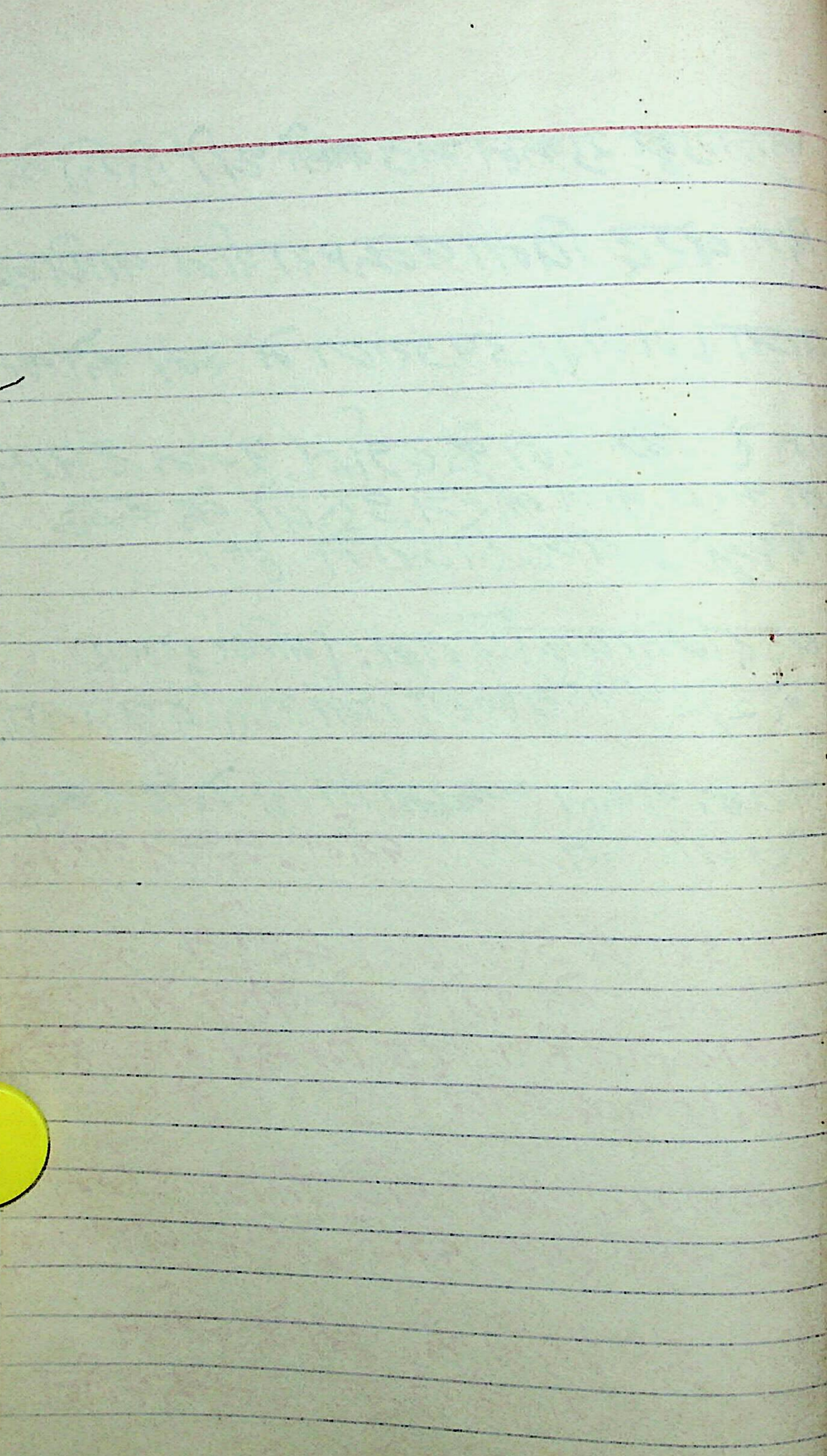
यात्रा। इन के इस दिन दर्शन करने
से मनुष्यों के शरीर मे पाँच प्रकार के
विकार होते है। वह विकार नष्ट होते
है। [स्कन्दपुराण से] है।

फाल्गुन शुक्ल षष्टि तिथि के दिन
ईश्वर गङ्गेश्वर दर्शन, पूजन वार्षिक

यात्रा। इस तिथि को इनके दर्शन
स्कन्दपुराण के अनुसार इन के दर्शन

करने वाले मनुष्यों को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

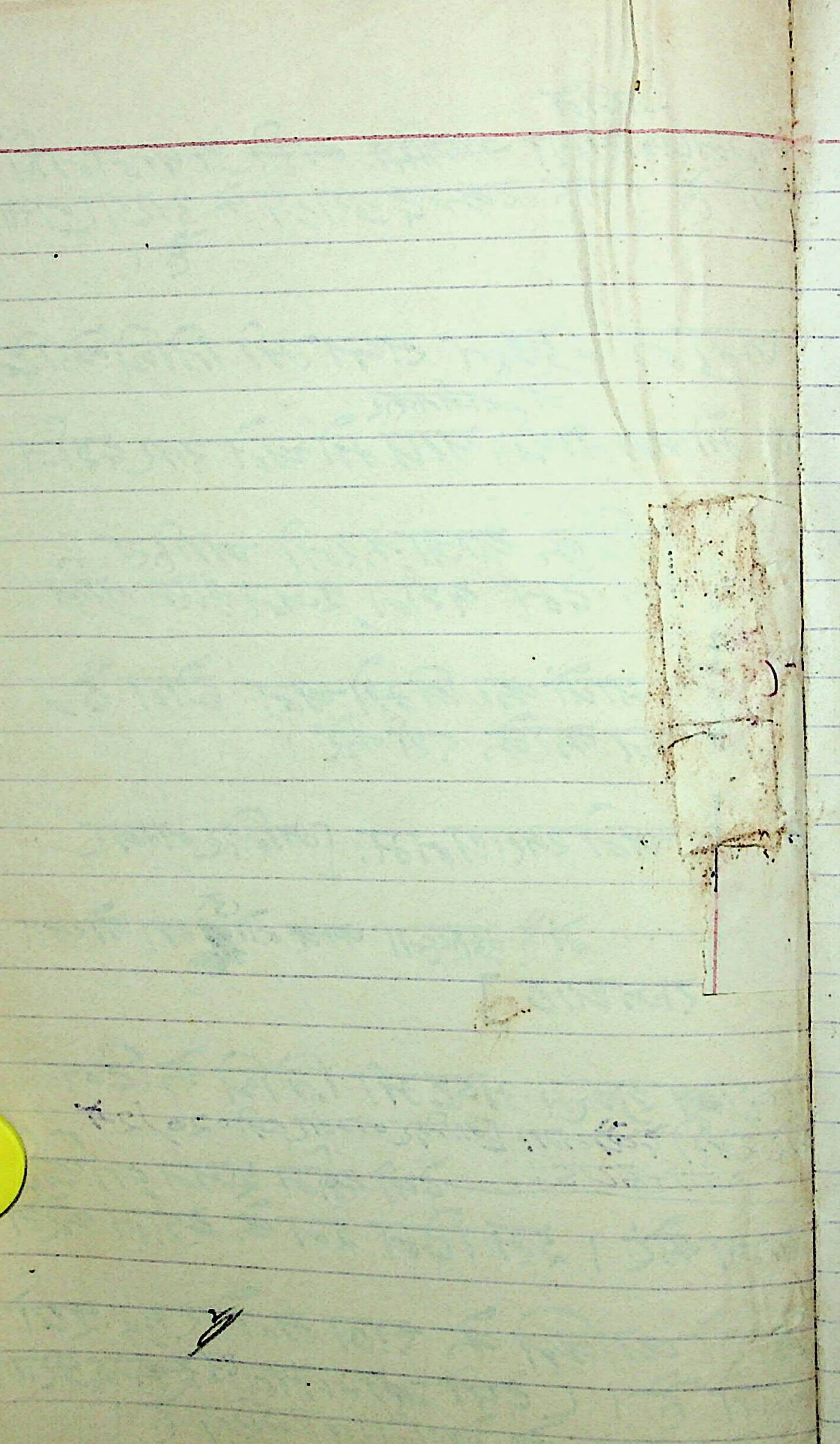
जनित
से कामवासना [redacted] उत्पन्न नहीं होती है। यह स्कन्दपुराण के आज्ञानुसार है।

फाल्गुन शुक्ल सप्तमी तिथि के दिन पाप मोचन तीर्थ में मार्जन कर पाप मोचने श्वर दर्शन, पूजन, वार्षिक यात्रा करनी चाहिए। इन पर इस दिन दर्शन, पूजन करने वाले यात्रियों के पापों का विमोचन होता है, अतः प्रयत्न करके दर्शन करें।

पापमोचनेश्वराय नमः [मन्दिर नम्बर में है मुहल्ला नौउवा पोखरा राजघाट]

फाल्गुन शुक्ल अष्टमी तिथि के दिन उद्धारेश्वरी देव्यै नमः [मन्दिर नम्बर बी० २८/२ में दुर्गा कुण्ड। देवी दर्शन पूजन वार्षिक यात्रा करें। इस दिन इन के दर्शन करने वाले व्यक्ति के सब मनोरथ पूर्ण होते है। [देवी भागवत एवं स्कन्दपुराण में] के आज्ञा से लिखा गया है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फाल्गुन शुक्ल अष्टमी तिथि के दिन

गुरुवार पुष्य नक्षेत्र और स्वाती घात योग जब पड़ता हो उस दिन ज्ञानवापी

तीर्थ में स्नान करके यथा शक्ति फल, दूध, मिष्ठान्न वस्त्र सिधा इत्यादि

दान करने के पश्चात । अन्नपूर्णा जी विश्वनाथ जीका दर्शन, पूजन करने

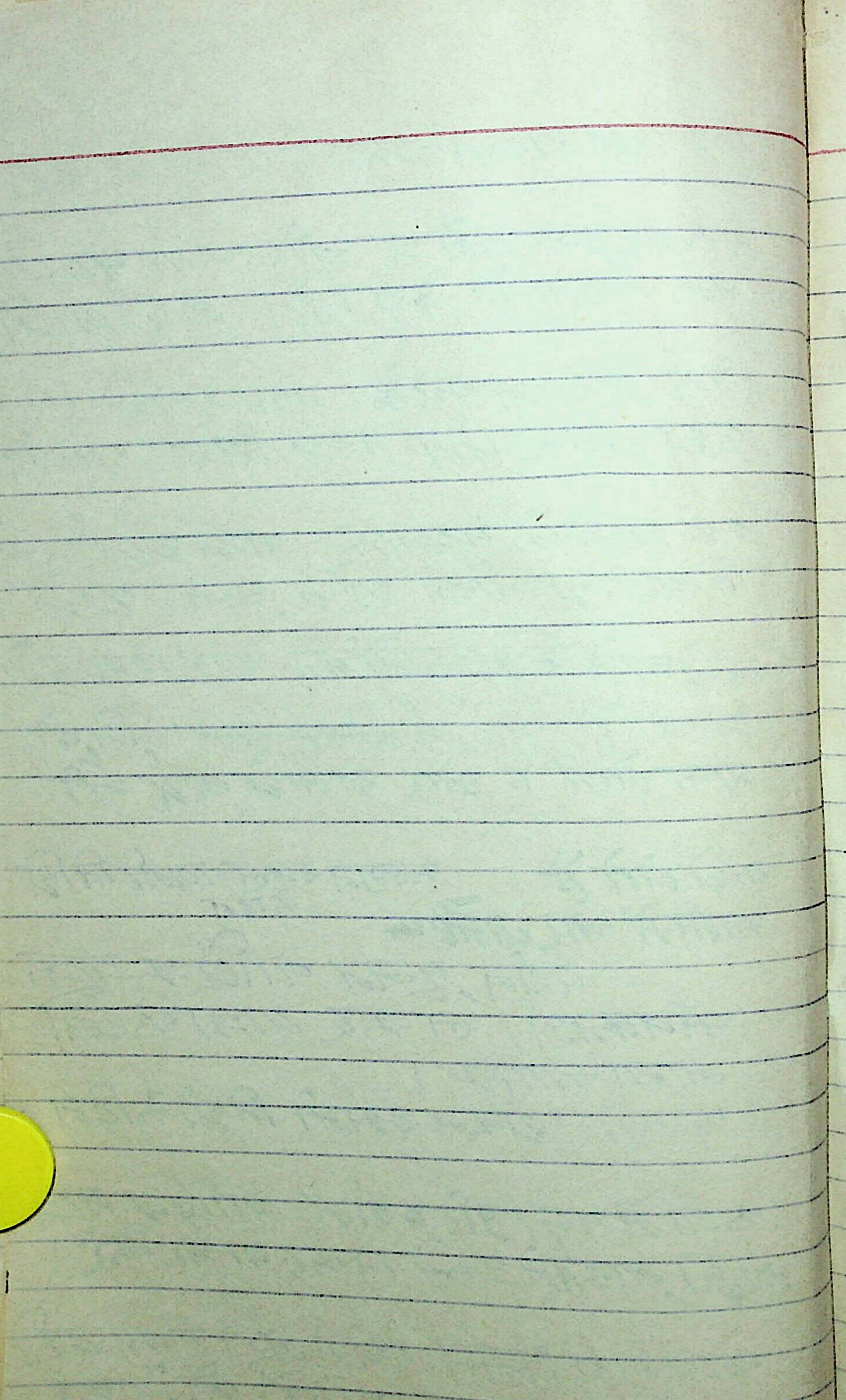
करनेवाले स्त्रिपुरुषों को काशीखण्ड में लिखा है सर्वार्थ ~~सिद्ध होते~~ सिद्दी प्राप्त होती है और असाध्य कार्य भी

साधे होते है । फाल्गुन शुक्ल नवमी तिथि के दिन –
काशी में चार धाम
दर्शन, पूजन वार्षिक यात्रा
अँवकाशी लेकर यात्रा करनी
जाना चाहिए ।
फाल्गुन शुक्ल दशमी तिथी के दिन

काशी में सप्तपुरि, दर्शन वार्षिक यात्रा। श्रद्धा, भक्ति युक्त होकर यात्रा करें।

फाल्गुन शुक्ल रंगभरी एका दशी है
तिथि के दिन प्रत्यक मन्दिरों को जाकर
। अबिर गुलाल, पुस्प, चड़ाकर दर्शन करते है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दर्शन करते है। काशी मैं विश्वनाथ जी के मन्दिर में लगभग एक लाख यात्री दर्शन करते है।

फाल्गुन शुक्ल द्वादशी के दिन स्वर्लिनेश्वर दर्शन, पूजन यात्रा करें।

स्वर्लिनेश्वराय नमः [मन्दिर नम्बर . . . . . . में है मुहल्ला नया माहादेव राजघाट

फालगुन शुक्ल त्रयोदशी तिथि के दिन अमृतेश्वर दर्शन, पूजन यात्रा करें। पद्म पुराण में इस दिन दर्शन करने वाले स्त्रि पुरुषों को ब्रह्मात्मा साक्षात्-कार का साधन स्वतः प्राप्त होता है।

अमृतेश्वराय नमः [मन्दिर नम्बर मुहल्ला नीलकण्ठ]

फालगुन शुक्ल त्रयोदशी के दिन अनुक्रमणी यात्रा करनी चाहिये। [काशी खण्ड अध्याय 14 के अनुसार]

फालगुन शुक्ल चतुर्दशी तिथि के दिन त्रिकंटक यात्रा करनी चाहिए। [लिंग पुराण के अनुसार है]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा तिथि के दिन

प्रातः दारुभेश्वर दर्शन, पूजन बार्षिक यात्रा करें। इस तिथि के दिन दारु

भेश्वर के दर्शन करने वाले नर नारियों को सनत्कुमार संहिता, काशी खण्ड

एवं काशी रहस्य में लिखा है, वह लोक में सुख, शान्ती एवं संपत्ति प्राप्त करता है।

फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा के दिन गङ्गा जी नदी कुण्ड, तीर्थ आदि में स्नान

संध्या, देव, ऋषि, पितर तर्पण

करके शिव पूजा करने के पश्चात।

~~यथा~~ अपने शक्ति के अनुसार अन्न, वस्त्र द्रव्य, औषधी ~~आदि~~ इत्यादि दान करें।

नोट
गुरु जी आप बार बार दान करना चाहिये कहते है उत्तर प्यारे शिष्य मैं नही कहता हूँ। हमारे वेद ~~शास्त्र~~, पुराण

उपनिषद एवं धर्म शास्त्र कहते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दान करने से जन्म जन्मान्तर के पाप नष्ट होजाते है. और दान देनेवाला व्यक्ति जन्म जन्मान्तर तक करोड़पति के घरमें उत्पन्न होता है, उनके पुत्र, पौत्र को ऐश्वर्य की प्राप्ती होती है। प्यारे शिष्य भगवान के चार हाथ है, भगवान चार हाँथ से देते है। तुम दो हाँथ से दान करो, तुमारे घरमें कभी भी कमी नहीं होगी।

तुम परोपकार, निस्काम सेवा ~~और~~ तथा दिन दुःखीयो पर दया करो।

प्यारे शिष्य तुम मुठी बान्द कर आये हो हाथ पेला कर जावगें, तुम को यहाँ सब कुछ ~~मीले~~ मिले है, यहीं छोड़कर जाओगें। प्यारे शिष्य तुमको जो गरिब मिल रहे है देख रहे हो उनोंने ~~दान~~ पूर्व जन्म में दान नहीं किया इस जन्म में भी दान नहीं कर रहे है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हरिश्चन्द्रेश्वर कामकोटी मन्दिर मे

तक्षकेश्वराय नमः

कर्ती वासेश्वराय नमः

अविमुक्ते श्वराय नमः —

बड़े गणेश लोहटिया

—

गंगा सागरेश्वर

ज्ञानवापी वदिनाथ

कालमाधव विष्णु जी

गोपाल मन्दिर में

यमेश्वर संकठा घाट

मयमादित्य [illegible] घाट पर

५

पञ्चगङ्गेश्वर पञ्चगङ्गा। तैलङ्ग स्वामीजी का आ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(मकान नम्बर लिखना
गंगाजी के शेष यह है
~~चामुण्डा देवी~~ - ~~चामुण्डा देवी~~
~~ओंकारेश्वर~~, ~~कर्म~~ कर्दमेश्वर
मार्कण्डेश्वर, हरेश्वर, गङ्गेश्वर,
~~कपिलेश्वर~~, भैरवेश्वर,
~~पराशरेश्वर~~, उद्दालेश्वर.
तुलसी घाट
~~अस्सी माधव विष्णवे नमः~~.
त्रिविक्रमेश्वर, जनकेश्वर

गङ्गा संगमेश्वर, बाल हनुमतेश्वर,
अस्सी घाट -
माया देवी -, ~~पञ्च देव मन्दिर~~
- कुरुक्षेत्र — ~~सिद्धेश्वर~~
कुरुक्षेत्र ~~तीर्थ कुण्ड~~ - सूर्य
कुण्ड, स्थाणु लिङ्गेश्वर,
कुरुक्षेत्रे स्वरायनमः भास्करेश्वर
दुर्गा कुण्ड
~~दुर्गा विनायकायनमः~~, ~~अर्क~~ सूर्य
सूर्यकर्णेश्वर, मयूरेश्वर, बाणेश्वर
दुर्गा विष्णु, रुद्र भैरव द्वारेश्वरी।

~~सुरकेश्वरी~~, द्वारेश्वर, कुक्कुटेश्वर
~~महामाया~~ देवी, ~~व~~ नाराहा का
कोड़ी देवी, खड्ग धारा
~~द्वारि का तीर्थ~~ संकुलेश्वर
~~सकमाइ देवेश्वर~~, सुधामेश्वर,
—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आत्माविरेश्वर
अमृतेश्वर
ज्ञानेश्वर
ओंड्कारेश्वर
गूरवेश्वर
महेश्वर
नन्दिकेश्वर
महेश्वर
स्पालिनेश्वर
हिरण्यगर्भेश्वर
ईशानेश्वर
मध्यान्धेश्वर
जंबुकेश्वर
वक्रतुंड विनायक
विघ्नराज विनायक
~~वरद विनायक~~
मोदक विनायक
अभय विनायक
सिंहतुण्ड विनायक
क्षिप्रप्रसादन विनायक
उद्दण्ड स्थूलदंत विना॰
गजविनायक
काल विना॰
ज्ञान विनायक
हरिकेश्वेश्वर
किकरेश्वर
द्रुपदादित्य
ब्राह्मीश्वर
नकुलेश्वर
प्रतिग्रहेश्वर
सतीश्वर

नकुलेश्वर
त्रिपुरान्तकेश्वर
~~[illegible]केश्वर~~
मदालसेश्वर
द्रौपदादित्य
खखोल्कादित्य
अरुणादित्य
केशवादित्य
शोधनमेश्वर
जंबुकेश्वर
म
मित्रविनायक
पराशरेश्वर
परद्रव्येश्वर
प्रतिग्रहेश्वर
सर्वेश्वर घाट

[illegible] घाट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा तिथि
के दिन प्रातः काशी के नैमिषारण्य
वार्षिक यात्रा (पुराण) में विश्वनाथ
जी के पश्चिम और सन्निधौ लिखा है

कुबेरनाथ शुक्ल जी के काशी यात्रा
नाम की पुस्तक में लिखा है।

ब्रह्मावर्त कूप+कुण्डायनम्:
अपारनाथ मठ में
कुओं के रूप में है। मकान नम्बर
मौहल्ला ढुंढिराज गली

स्नान करके, ~~अपारनाथ में स्वर के~~ ब्रह्मावर्तेश्वर के
दर्शन पूजन कर मिष्ठान्न, फल
आदि अर्पण करें। और प्रत्येक

अमावस्या तिथि के दिन ब्रह्मावर्त
तीर्थ में स्नान कर ब्रह्मावर्तेश्वर का
दर्शन करना चाहिए।

रमाकान्त जी शुभाशीर्वाद
यहाँ सब आनन्द है आप परिवार
सहित कुशल मंगल होंगे।
~~पत्रिका~~ रमाकान्त जी
काशी वार्षिक यात्रा प्रथम कापी
भेज देना। और द्वितीय कापी
में भी इसी प्रकार अर्थ करना
शेष है। आपको समय हो तो भेज
देंगे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

काशीवार्षिक द्वितीया कापी में मकान नम्बर लिखना शेष निम्नांकित है →

पिलपिलातीर्थ	त्रिलोचन
लक्ष्मीश्वर	लक्ष्मीकुण्ड
असुनीकुमार	शंकटा गङ्गामहल
ललिता राजराजेश्वरी	राजराजेश्वरीमठ
त्रिपुराभैरव	त्रिपुरभैरवी
चौसट्टी देवी	चौसट्टी घाट
~~चौसट्टी~~ नीलकण्ठेश्वर	नीलकण्ठ
तिलभाण्डेश्वर	तिलभाण्डेश्वर
वाल्मीकीश्वर	वाल्मीकी कटरा
वैष्णवी देवी	शंकटा घाट
काल कूप	दण्डपाणी के मन्दिर में

काशीवार्षिक यात्रा तृतीया 3 कापी से

गोपाल मन्दिर - चौखम्बा

लोलार्केश्वर दर्शन

दुर्वासेश्वर सङ्कु ~~श्वर~~ धारा

मालतीश्वर मृत्युञ्जय

तारादेवी नेपाली खपडा -

उत्तरार्क सूर्य ककरीयाकुण्ड

वितुण्ड विनायक सूर्यकुण्ड

भारद्वाजेश्वर भारफलिपुरा

कृत्तीवासेश्वर हरतीर्थ पर

तक्षकेश्वर अमरनाथ कोतकोपा

चामुण्डा देवी लोलार्क

असीमाधव तुलसीघाट

हरीहरेश्वर केदारघाट

देश्वर असी गोयनका वि.

केश्वर तुलसीघाट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भूतनाथेश्वर दे॰
पापमोचनेश्वर नडुवापो॰
श्वालीनीश्वर नव्यामाता देव
अमृतेश्वर
भद्रकाली देवी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२/

(का)शीखण्ड के ५१ अध्याय में ११८

श्लोक आदि जीर्णोद्धारण

माघ शुक्ल सप्तमी के दिन साम्बा

दित्य दर्शन वार्षिक यात्रा

साम्बादित्याय नमः [मकान नम्बर

मोहल्ला (सूर्यकुण्ड के पूर्व भाग

सूर्य मन्दिर) सूर्य कुण्ड].

2

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



MADHU PAPER TRADERS,
NICHI BAGH, NAGAR MAHAPALIKA KATRA,
Page 220 VARANASI. (U.P.) Rs. 15 00

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri